

due place is given to several Governmental representatives of Ministries and only a casual mention is made of Gorkhers' representatives.

MR. DEPUTY SPEAKER: You may continue your speech tomorrow.

16 hrs.

MOTION FOR ADJOURNMENT

FAILURE OF GOVERNMENT TO SOLVE THE MYSTERY OF SAMASTIPUR BOMB CASE

MR. DEPUTY-SPEAKER: We now take up the Motion 'That the House do now adjourn' Shri Madhu Limaye.

श्री मधु लिमये : (बाका) : मझे कितना समय मिलेगा ? 40 मिनट में, मैं खत्म करूंगा, ज्यादा नहीं वगा ।

16 1 hrs

(SHRI VASANT SATHI in the Chair)

मैं प्रस्ताव करना हूँ कि इस मदन की कार्यवाही को और इस मदन को अब स्थगित किया जाय ।

आज जिस विषय पर हम लोग चर्चा कर रहे हैं वह अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है । क्योंकि एक अरबों में हमारे देश में रहस्यपूर्ण माने होती हैं और इस रहस्य को हल करने का सरकार के द्वारा कोई समचित उत्तरात्म नहीं किया जाता है । जब से पत्रों में आपकी खिदमत में आज के हिन्दुस्तान टारम्भ में कांग्रेस पार्टी के एक सदस्य ने ही जा बात कही है उसी में अपने भाषण को शुरू करने चाहता हूँ । यह हिन्दुस्तान टाइम्स में कांग्रेस पालियामेन्ट्री पार्टी को जो बँटक हुआ उस की रिपोर्ट है । उस में से एक हिस्सा मैं पढ़ कर सुनाना चाहता हूँ :

"Mr. P. R. Das Munsai said: There was a general feeling in the country that the Government had indulged in misconduct from the death under mysterious circumstances of Nagarwala to L. N. Mishra. The Government has not done anything to remove the doubts of the people, he added."

अब हो सकता है कि इसके बाद मैं ये इसका प्रतिवाद करेगा । लेकिन उन्होंने जो बात कही है वह हिन्दुस्तान के कई लोगों के मन में बात है कि हमारे देश में विगत कुछ वर्षों से बहुत ही रहस्यपूर्ण तरीके से लोगों को खत्म किया जा रहा है । इसी दिल्ली शहर में नवम्बर महीने की घटना है, अनिल चोपरा नाम का जो दमन का कस्टम कलेक्टर था उस की मौत भी रहस्यपूर्ण वातावरण में हुई । सी.वी.आई.के जो दो अफसर पाडेय और रामनाथन - उनके बारे में भी कहा गया है कि सड़क दुर्घटना में उनकी मौत हुई है । नागरवाला कांड के बारे में सभी लोग जानते हैं कि नागरवाला की जो मृत्यु हुई वह भी रहस्यपूर्ण वातावरण में हुई । उनके मामले की जांच करने वाले जो पुलिस अफसर कश्यप साहब - उनकी मौत भी रहस्यपूर्ण वातावरण में हुई है । जनमध के जनरल सैक्रेटरी (इन्वेषक) । हले जनरल सैक्रेटरी थ, फिर अध्यक्ष ग, श्री दीन दयाल उपाध्याय जी, उनकी भी मान का रहस्य भी दो दो कमीशनो को बैंगलोर के बाद भी नहीं खल पाया है और ममन्तीपुर बम विस्फोट के बारे में भी आम लोगों को यह राय है कि सरकार ने इस रहस्य को खोलने के लिए समचित प्रयास नहीं किया ।

जैसे ही 3 तारीख को श्री ललित नारायण मिश्र की मृत्यु की खबर आई, एक स्वर से एक आवाज से विरोध पक्ष ने अपना दुख प्रकट किया । इतना ही नहीं, हिंसा के इस्तेमाल के बारे में भी बहुत स्पष्ट शब्दों में उन्होंने कहा कि हिंसा का रास्ता हमारा नहीं है । विरोध पक्ष ने निष्पक्ष और खुली जांच की माग की ।

[श्री मधु लिम्बये]

लेकिन अफसोस की बात है कि सरकार ने यह जो सार्वजनिक माग जाच की उस समय की गई थी उस को न मानते हुए उच्च स्तर पर विरोध पक्ष के ऊपर दोषारोपण करने का काम तत्काल कुछ ही घंटों के अन्दर शुरू किया और अफसोस की बात है कि इसमें प्रधान मंत्री ने और आल इंडिया रेडियो ने सबसे अधिक पहल की। प्रधान मंत्री जी का पहले दिन का वक्तव्य ही देखिए। प्रधान मंत्री जी न कहा

"The forces of disruption which have come to the fore lately have spread hatred and indirectly encouraged violence. It is this atmosphere which is responsible for this dastardly crime."

इसके बाद उसी दिन रेडियो पर जो स्पष्ट-लाइट का कार्यक्रम होता है उस पर सी० एस० पंडित जो फ्री प्रेस के एडिटर हैं, हमारे मित्र भी हैं, मैं मानता हूँ कि उनको अपनी राय रखने का पूर्ण अधिकार है, लेकिन यह रेडियो पर से कार्यक्रम हुआ है और रेडियो के बारे में प्रधान मंत्री ने यही कहा है कि रेडियो का कार्य क्या है—निष्पक्ष ढंग से समाचारों को प्रसारित करना या सभी दृष्टिकोणों को रेडियो के द्वारा जनता के सामने रखना, यह रेडियो का रोल प्रधान मंत्री ने नहीं माना है। प्रधान मंत्री कहती हैं कि रेडियो का काम है कि टु प्रोजेक्ट गवर्नमेंट पालिसी। इसी सदन में उन्होंने एक वक्तव्य दिया है। तो मैं मानता हूँ कि वहा सी० एस० पंडित का जो टाक हुआ उसमें सरकारी अनुमति से, सरकारी सम्मति से यह कहा गया है। ऐसा मैं मानता हूँ। मैं केवल दो वाक्य आपके सामने उद्धृत करना चाहता हूँ।

"The total responsibility for this act is on those who on the one side swear by democratic norms and want to save it and on the other actively support a movement which is not only destroying peoples' faith in their leaders but in the system itself."

और आगे यह कहते हैं

"Whatever may have been the Opposition's complaint against Mr. Mishra and the ruling party itself by this act and the general atmosphere of violence in the wake of Bihar Agitation it has opened itself to the charge that behind their allegation to corruption and misuse of power was political vendetta and not a desire to reform."

यानी स्पष्ट लाइट में स्पष्ट शब्दों में रेडियो कहता है कि समस्तीपुर बम विस्फोट और ललित नारायण मिश्र की मौत इस कृति के लिए, इस ऐक्ट के जरिये अपोजीशन ने माँबित किया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ उनका जो अभियान है उसके पीछे राजनैतिक विद्देश है। तो 3 तारीख को ही प्रधान मंत्री और आल इंडिया रेडियो निर्णय दे देता है कि समस्तीपुर में जो घटना हुई उसके लिए विराध पक्ष जिम्मेदार है।

एक माननीय सदस्य बिलकुल सही।

श्री मधु लिम्बये : अब सही है या नहीं इसकी तो चर्चा कर ही नहीं रहे हैं। लेकिन मेरा मुद्दा यह है कि जो विरोध पक्ष ने एक स्वर से हिमा के रास्ते क त्याज्य ठहराया, उसकी निन्दा की और निष्पक्ष और खुली जाच की माग की तो प्रधान मंत्री ने और आल इंडिया रेडियो ने और दूसरे प्रवक्ताओं ने विरोध पक्ष को दोषी ठहराने का काम उसी दिन कुछ ही घंटों के अन्दर शुरू किया। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि शुरू से ही प्रधान मंत्री चाहती थी कि समस्तीपुर की जो ट्रेंजेडी है उसका इस्तेमाल राजनैतिक उद्देश्यों के लिए किया जाय। उन्होंने जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन को और विरोध पक्ष को बदनाम करने का प्रयास किया है। इसलिए इसकी जड़ में जाने का हम लोगों का प्रयास करना चाहिए। अखबारों में बहुत मारी गलत ख़बरे शुरू में पुलिस के द्वारा दिलाई गईं। पहले यह कहा गया कि यह रेल कर्म-

चारियों का काम है। एक कर्मचारी का भी नाम जोड़ा गया, जो स्वयं इसमें मर गया था। पहले तो रेल मजदूरों को बदनाम करने का प्रयास किया गया, साथ-साथ विरोध-पक्ष को बदनाम करने का प्रयास हुआ, फिर आर० एस० एम० के साथ, आनन्दमार्गियों के साथ इसका सम्बन्ध जोड़ा गया। आनन्दमार्गियों के साथ कितना सम्बन्ध है, मैं नहीं जानता—जहाँ तक मुझे मालूम है जय प्रकाश जी के आन्दोलन के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। आर० एस० एम० के साथ भी उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, हा, उनके साथ जुड़े हुए जो लोग हैं वे इस आन्दोलन में सम्बन्धित हैं—यह कोई छुपाने की बात नहीं है
(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (वालियर)
हा, हम उसमें हैं।

श्री मधु लिमये : मैं कह रहा था कि पहले रेल मजदूरों के साथ, फिर विपक्षी दलों के साथ, जय प्रकाश जी के आन्दोलन के साथ, आर० एस० एम० के साथ इस घटना का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयास किया गया। उसके बाद इन्टेलिजेन्स ब्यूरो और सी० बी० आइ० के लोग इसमें आये, उनके द्वारा जाच का काम शुरू हुआ।

अब हममें मन्देह उत्पन्न होता है—आज सी० बी० आइ० की जो स्थिति है, वह स्पष्ट है। यह विभाग प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व है। पहले यह गृह मंत्रालय के साथ था, लेकिन अब श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी के मातहत नहीं है। 1970 . जब प्रधान मंत्री जी ने मंत्रिमंडल की पुनर्रचना की, उस समय सभी जामुमी विभाग प्रधान मंत्री जी के कार्यक्षेत्र में लाए गये। जब प्रधान मंत्री जी स्वयं निर्देश दे रही हैं कि सी० बी० आइ० जाच करे और उन्होंने पहले ही यह निर्णय दे दिया कि ये सब लोग हममें सम्बन्धित हैं तो सी० बी० आइ० वाले बाध्य होकर इसी दिशा में जाच करने लगे कि किसी तरह से यह जो काण्ड हुआ है, इसकी

जिम्मेदारी विरोध-पक्ष पर लादी जाय और आज डेढ़ महीने में सी० बी० आइ० को सफलता नहीं मिली है। तो इसका मुख्य कारण है कि प्रधान मंत्री जी ने अपने वक्तव्यों में सी० बी० आइ० की जाच का एक विशिष्ट दिशा में प्रभावित करने का प्रयास किया है

श्री कृष्ण चन्द्र पांडेय : (खलीलाबाद) :
बिलकुल गलत।

श्री मधु लिमये : इस तरह से नहीं, आप तक के आधार पर बोलिये। गलत कहने से गलत नहीं होगा। जब प्रधान मंत्री जी, जिनके मातहत सी० बी० आइ० है स्वयं पहचान ही फँसला दे देती है कि इसकी जिम्मेदारी किस पर है, तो फिर आप सी० बी० आइ० में उम्मीद नहीं कर सकते कि वह निष्पक्ष ढंग में जाच करेगी . (व्यवधान)

अब, मैं लिक साप्ताहिक को प्रधान मंत्री जी ने जो मुलाकात दी है, उसके एक अंश को उद्धृत करना चाहता हूँ . . (व्यवधान) . .

आप उसको देखिए—प्रधान मंत्री जी स पूछा गया—

"Shri Mishra's death will cause a lot of concern among the people about such violence spreading elsewhere"

यह मवाल उनसे पूछा गया, अब प्रधान मंत्री जी जवाब देती हैं—

"As I have said, it is not important which person did the killing. But when an atmosphere of hatred, calumny and violence is fostered, then, anybody can do it"

सभापति महोदय, प्रधान मंत्री जी कहती हैं कि किस ने मारा, इसका कोई महत्व नहीं है। अगर यह सचि त हो जाता

[श्री मधु लिमये]

हे कि किसी कांग्रेसी ने मारा है, तो भी प्रबल मंत्री जी कहती है कि इसका कोई महल नहीं है, इसका दोष तो विरोधी पक्ष के लोगों के ऊपर है. . . (व्यवधान) . . . आप क्यों घबरा रहे हैं— . . .

महापति महोदय, प्रधान मंत्री जी की राय में किमने मारा, इसका कोई महत्व नहीं है। ऐसा वाक्य वे हम लिये कहती हैं—क्योंकि मन में उन्होंने पहले से ही फैसला कर लिया था कि दोष इन्हीं लोगों पर लगाना है—इस लिये इस तरह का वाक्य उनके मुह से निकला।

समस्तीपुर बम विस्फोट और श्री ललित नारायण मिश्र जी की मृत्यु के तत्काल बाद मैंने 3 जनवरी को दिल्ली से मेरे कुछ विरोधी पक्ष के मंत्रियों के साथ एक वक्तव्य दिया था कि ललित नारायण मिश्र जी के शव पर अग्नि-संस्कार करने में जल्दबाजी न की जाय, पहले उनका पोस्ट-मार्टम कराया जाय, पूरे फॉरेन्सिक एक्जामिनेशन के बाद, तथा उसकी रिपोर्ट आने के बाद उनके शव का अग्नि संस्कार कराया जाय। ग्राम तौर पर, महापति महोदय, आप जानते हैं—आप स्वयं वकील हैं मैं वकील नहीं हूँ, तबिन उनना अन्तर्ज्ञ जानता हूँ कि पुलिस केम होने के बाद पुलिस वाले शव का अग्नि संस्कार कराने की इजाजत नहीं देना जब पोस्टमार्टम हो जाता है। यह पुलिस केम था, तत्काल पुलिस ने रजिस्टर किया था तो फिर पोस्ट मार्टम करने की छट छिनो कहने में दी गई? मैंने यह सुना है कि विचार के बीच सैक्रेरी में स्वयं कहा कि पोस्ट मार्टम की कोई जरूरत नहीं है और आप; अग्नि संस्कार करने की इजाजत दे सकते हैं। मैं पोस्ट-मार्टम का मामला हम लिये उठा रहा हूँ, क्योंकि नाथ-इन्स्टीट्यूट के चीफ र्मा कल आफिसर—महाना माहय ने कहा था—जो हम लोगों ने रेडियो से सुना था—ललित नारायण मिश्र जी को मामली चोट आई है, स्किन-डीप-इन्जरी है, उनकी जान खतरे में नहीं है, लेकिन उमी

दिन हम ने बाद में सुना कि वह गम्भीर चोट थी, लम्बे आपरेशन के बाद उनकी मृत्यु हुई। इसने हम लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ, ऐसा कैसे हुआ, इसी लिये हमको और ज्यादा शक था और हम ने कहा था कि पूरे पोस्ट मार्टम के बाद जांच की जाती। क्योंकि अब सबाल आयेगा—मान लीजिये, कोई आदमी पकड़ा जाता है, जिसने यह काम किया है और उस पर केस चलेगा तो वह कह सकता है कि बम विस्फोट के चलते वे नहीं मरे, 12 घंटे जो बिलम्ब हुआ, उनकी जो ठीक से चिकित्सा नहीं की गई, उनका इलाज नहीं किया गया, उसके कारण ललित बाब की मृत्यु हुई है, इस लिये मेरे ऊपर उनके खून का, कल्ल का, होमीसाइड का इल्जाम नहीं लग सकता है. . .

श्री नरेन्द्र कुमार साल्बे (वंजुन) .
क्या पोस्टमार्टम में यह प्रब हो जाता ?

श्री मधु लिमये : मान्बे साहब, आप जैसे टिव्यूनन के सामने एग्जिप्र होने वाल व्यक्ति जब ऐसी बात कहते हैं तो हमारे जैसे आदमी, जिनको कानून का कम ज्ञान है, वे क्या करेंगे। क्योंकि मवाय यह उठना है—मान का कारण क्या था? मान लीजिये, वे इलाज में ठीक हो जाते, जैसे जगन्नाथ मिश्र ठीक हो गये, तो फिर उस व्यक्ति के ऊपर कोई दूराग चार्ज लगना। होमीसाइड का चार्ज नहीं लगता, एटैम्प्ट ट कमित होमीसाइड का चार्ज लगता। हम लिये आप ने हम मामल की जांच करने की दृष्टि में भी जो रुदन उठाना चाहिए था, वह नहीं उठाया और हम लोगों के द्वारा वक्ताव; देने के बाद भी जब नहीं उठारा गया तो मैं आरोप; लगाऊंगा कि यह जानबझ कर किया गया है।

दूसरी बात—श्री मिश्र जी का ममारोह का जो कार्यक्रम था उन्ने सिक्कीरिटी अरेन्जमेंट ठीक था या नहीं था—यह मामला मैथ्यू कमीशन के सामने है, इसकी जांच करना उनके अधिकार क्षेत्र में आता है। इसका निणय वे देगे। लेकिन कुछ बातें

बिल्कुल स्पष्ट है जो अखबारों में आ चुकी है कि सिक्कोरिटी अरेन्जमेंट में इतनी खासिया थी कि ममस्तीपुर में बम विस्फोट होने के बाद सिक्कोरिटी के सारे लोग भाग गये। और उस समय पर कोई नहीं था। य तो बिहार सरकार और केन्द्रीय सरकार का मनोबल कितना टूट गया है उस का यह परिचायक है कि एक विस्फोट की घटना होती है और सब लोग भाग जाते हैं। देर तक कमिश्नर बहा पर थे उन का पता नहीं, जिलाधीश का पता नहीं, एस० पी० का पता नहीं और रेलवे का जो प्रमुख अधिकारी होता है डिबीजनल सुपरिन्टेण्डेंट वह भी गायब। और ऐसी रिश्तियों में कौन चार्ज लेता है? श्री राम बिलास झा नाम का एक व्यक्ति चार्ज लेता है। मैं उन को नहीं जानता हूँ उन की क्या आफिशियल पोजीशन थी या नहीं थी मुझे कोई जानकारी नहीं है। सिक्कोरिटी वाले भाग गये, बड़े बड़े अधिकारी भाग गये और गम बिलास ने चार्ज ले लिया। और पहला काम वह क्या करता है कि सैलून व किन्नी को भी आने नहीं देगे। यानी राग लोग जिन्होंने, सिक्कोरिटी वाले सब भाग गए ता उन चार लोगो ने ललित बाबू को उठा कर रेलवे सेलन पर चढ़ाया वह व एन जमुना मिह, दूसर व उमश प्रसाद मिह शिखर सिंह और चौध रन्डेया इस में उमश प्रसाद मिह घायल थे लेकिन राम बिनाग उन में रहता है कि यह कोई अस्पताल है? भागो यहा। तो मास्पीर की नोटिस आ गई। तो यह बेचारे स्वयं घायल और फिर भी मिश्र जी को मैनुअल पर पहचाने का काम दिया। किन्तु उन का भी सैलून के अन्दर नहीं आने दिया। यह गम बिलास की क्या अफिशियल थी इस की खाज होनी चाहिये।

दूसरी बात यह कि राम बिलास ने गाडी दानापुर जायगी यह आदेश उसने दिया। और उन्होंने कहा कि

कहा है वह चीफ ओपरेशन सुपरिन्टेण्डेंट जो गाडियो के बारे में निर्णय करता है। बुलाओ उसको। और उन के आदेश में यह तय हुआ कि ललित बाबू का इलाज न ममस्तीपुर, न दरभंगा, न पटना में होगा और न उन को दिल्ली भेजा जायगा। क्योंकि जितना समय लगा उन। समय में अगर सरकार चाहती तो उन को हवाई जहाज से दिल्ली लाया जा सकता था। लेकिन नहीं लाया गया, और राम बिलास, जिम की कोई आफिशियल पोजीशन नहीं है वह यह सब निर्णय करता है।

तीसरी बात यह है कि बिल्कुल जानकर सूजो ने मुझे पता चला है कि पटना में जो विलम्ब हुआ वह इसलिये कि राम बिलास झा ने एक बार नहीं दो बार चैन पुलिंग कर के डम गाडी को रोकने का काम किया है। स्वयं उन्होंने चैन पुलिंग की है। तो इसलिये यह आदमी इतना शक्तिशाली कैसे बना और सारी जो बहा पर गतिविधिया ऐक्टिविटी हुई उस का उस ने चार्ज कैसे लिया इस के बारे में सफाई हानी चाहिये।

उसी तरह उस सैलून में जिम की चर्चा मेर ख्याल में फल 'मदरलैंड' न की है और वह सही है कि मस्ताना बाबा हाजीपुर के, जो नाविर है और ललित बाबू के साथ लगे गए थे व मन्त में थे। लेकिन ये घायल गो जिन्होंने आनी जान जोखिम में जाकर ललित बाबू को पहचाने का काम किया उन को सैलून में नहीं आने दिया गया। लेकिन मस्ताना बाबा हाजीपुर का सैलून में आ गया। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। तो खबरों में बताने मारी बताने आ रही है।

हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड ने समन्तीपुर से जो समाचार भेजे हैं और जो प्रकाशित हो गये उस में दो एन० एन० सी० पर अभियोग लगाया है कि इन का इस में हाथ था। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा

[श्री मन्नु लिमये]

है कि एक गैर बिहारी एम० पी० उसी समय पटना गया था और उस के साथ एक स्वामी भी था। पटना में जो मैंने चर्चा सुनी, बिहार में सुनी, तब मैं केवल बता रहा हूँ, मैं कोई अपना अभियोग नहीं लगा रहा हूँ, गौर वह है यशपाल कपूर का नाम। "हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड" में जिस की चर्चा की गई है वह यशपाल कपूर हैं।

उस समय जहाँ तक सेनयोरिटी की बात है उस के बारे में जांच होगी, इस में कोई संदेह नहीं। लेकिन मैं आप की जानकारी के लिये कहना चाहता हूँ कि इस घटना की जानकारी पटना के अफसरों को तकरीबन कुछ ही मिनटों के अन्दर दी गई। उस समय आई० जी० पुलिस एक नृत्य कला के कार्यक्रम में गये हुए थे और यह खबर आने के बाद भी वह वहाँ से हिले नहीं, बल्कि घंटा, डेढ़ घंटा वहीं बैठे रहे। वहाँ गवर्नर महोदय भी थे, शायद उन को भी जानकारी नहीं दी गई।

श्री राम सहाय पांडे (राजनदगाव) :
कितने बजे की बात है ?

श्री मन्नु लिमये : यह शाम की बात है। मैं यह कह रहा हूँ कि इस घटना के बाद इस की जानकारी आई० जी० पुलिस बिहार को दी गई। उस समय वह एक सांस्कृतिक कला के कार्यक्रम में थे और उस के बाद वहीं बैठे रहे, देर तक बैठे रहे, और उन्होंने इस बात का जरा भी प्रयास नहीं किया कि कौन अन्य लोग घायल हुए हैं, ललित बाबू की क्या स्थिति है, उन का इलाज हो रहा है कि नहीं? जो कि करना चाहिये वह भी नहीं किया गया। तो मैंने यह सुना कि चीफ सेक्रेटरी ने पोस्टमार्टम की शर्त को वेच किया और आई० जी० पुलिस इस घटना की जानकारी मिलने के बाद भी वहीं बैठे रहे और स्थिति पर काबू पाने का जरा भी प्रयास नहीं किया।

एक और मजेदार बात है कि ललित बाबू जब बिहार जाते थे तो उन के पीछे सारे मंत्री लोग, कम से कम आधे दर्जन से अधिक उन के आगे पीछे लगा करते थे। बहुत सारे दूसरे लोग भी होते थे। लेकिन उस दिन मंच पर और समारोह स्थल पर उन के भाई के अलावा एक भी मंत्री मौजूद नहीं था। तो प्रश्न उठता है कि क्या इन लोगों को इस बात का पता था कि ऐसा कुछ होने वाला है? और क्या इसलिये उस जगह से वह इतनी दूर रहे, गये नहीं? और अगर उन को पता था तो ललित बाबू को उन्होंने क्यों नहीं बताया? इस के बारे में लोग अपना तर्क कर रहे हैं। कुछ उस में कुतर्क भी हो सकता है। लेकिन यह सब चल रहा है। साधारण जन भी इस को मानते हैं कि विरोध पक्ष का इस से कोई सम्बन्ध नहीं था और न है। क्योंकि विरोध पक्ष का ऐसा काम करने से कोई लाभ नहीं था। यह साधारण जनता भी समझती है, क्यों कि ललित बाबू के सवाल पर वर्षा और शीत कालीन सत्र में जो यहाँ पर लम्बी बहस चली उस से विरोध पक्ष का तो कोई नुकसान नहीं हो रहा था। आप लोगों का नुकसान हो रहा था और फरवरी के बजट सत्र में इस सवाल पर हम लोग मुस्तैदी के साथ आगे बढ़ने वाले थे। इसलिये साधारण जनता यह कहती है कि विरोध पक्ष का इस से सम्बन्ध हो ही नहीं सकता है क्योंकि विरोध पक्ष को ऐसा करने से कोई लाभ नहीं था। लेकिन ललित बाबू के ले कर जिन को जबरदस्त एंबेसमेंट हो रहा था उन के बारे में लोग अपना तर्क जरूर कर रहे हैं। मैंने, सभापति महोदय, यह सुना है कि 23 तारीख को ललित बाबू से प्रधान मंत्री जी की बात हुई। व यहाँ हैं और व स्वयं कह सकती हैं। जो उन्होंने कहा, वह मैं आन के सामने रख रहा हूँ... (व्यवधान)... लोगों ने कहा है और मुझ यह पता लगा है कि प्रधान मंत्री जो ने ललित बाबू से कहा कि आप को अब तक तो मैं

टिफेड करती रही है लेकिन अब हमारे लिए मुश्किल है और आप मंत्री मंडल में अब हटने के बारे में सोचें।

प्रधान मंत्री, परमाणु ऊर्जा मंत्री, इंचेस्ट्र-निक्स मंत्री, अन्तरिक्ष मंत्री, योजना मंत्री तथा विज्ञान और औद्योगिकी मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) मैं यहां पर मौजूद हूँ।

श्री मधु लिमये : आप बाद में बोलिये।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैं बाद में क्या बोलूँ इस में जरा भी सत्य नहीं है। ऐसी कोई बातचीत मेरी ललित बाबू से नहीं हुई।

श्री मधु लिमये : ठीक है। यह मैं आप के लिए छोड़ देता हूँ, लेकिन मेरी यह जानकारी है कि इन की मुलाकात हुई थी और इसलिए ललित बाबू चिन्तित थे, दुखी थे, यह पक्की बात है। यह मुलाकात कब हुई, कैसे हुई, क्या नहीं हुआ और क्या बात हुई, उस को छोड़िये लेकिन यह बात निश्चित है कि इस को ले कर ललित बाबू दुखी थे और दो चार लोगो से उन्होंने ऐसा कहा कि मैंने जो कुछ किया वह कभी अरने लिये नहीं किया, अग्रर किया है, तो प्रधान मंत्री जी के लिए और कांग्रेस पार्टी के लिए किया है (व्यवधान) और इसलिए अब मेरी उपयोगिता समाप्त हो गई है, मेरी यूटीलिटी समाप्त हो गई है और इसीलिए मुझे को हटाया जा रहा है। यह उन्होंने जा नजदीक के दो चार दाम्न थे, उन से कहा (व्यवधान)

श्री विभूति मिश्र : (मोतीहारी) मंत्रों से नजदीक रहने वाला मैं था। उन्होंने मुझे मे कहा था कि आप लोगो की वजह से वे बहुत चिन्तित थे। मुझे को उन्होंने कहा कि मिश्र जी, मैं मनुष्य हूँ और कोई ऐसा काम नहीं करता हूँ लेकिन हमारे ऊपर

दल्जाम लगाया गया है। इपलिंग आप लोगो की वजह से ललित बाबू चिन्तित थे। मुझे को वे कहते थे कि लास्ट मोमेंट तक मेरा साथ देने वाले विभूति जी है। आप लोगो से वे चिन्तित थे।

श्री जनेश्वर मिश्र : (इलाहाबाद) क्योंकि प्रधान मंत्री जी ने मफाई दी है, मैं यहां पर यह 'मार्च' अखबार रखगा, जिम का हेडिंग है "मधु मिश्र दरबार-इन्दिरा परिवार का" (व्यवधान)। इस की भी मफाई इन को देनी पडगी। यह मृत्यु से पहले की खबर है। (व्यवधान)

MR CHAIRMAN When that allegation has been positively denied by the Prime Minister, it is not relevant at all

SHRI MADHU LIMAYE Which allegation?

MR CHAIRMAN There there was such a talk between Lalit Babu and the Prime Minister Your allegation has been positively denied.

श्री मधु लिमये : उन्होंने यह नहीं कहा कि मुझे मे मुलाकात नहीं हुई। आप रिकार्ड देख लीजिए, क्या कहा है। वह तो सदन के सामने कहा है उस पर बहस की क्या जरूरत है (व्यवधान)

अब विभूति जी कहते हैं कि आप लोगो को ले कर बड़ चिन्तित थे। हम तो ललित बाबू के राजनीतिक विरोधी थे। उन के बीच और हमारे बीच व्यक्तिगत विद्वेष का सवाल नहीं था। हम उन के राजनीतिक स्तर पर विरोधी नहीं थे लेकिन पांडिचैरी लाइसेंस बाड से हमारी राय से उन्होंने अनर्चित काम किया, उस का लवर हम बोलते थे और उस में कांग्रेस पार्टी, प्रधान मंत्री और उन में हमारे लिए कोई फर्क नहीं था क्योंकि ललित बाबू से अपने दोस्तों से यह

[श्री मधु लिमये]

कहा कि सब कुछ मैं इन के लिए और कांग्रेस पार्टी के लिए करता था और मुझे अब हटाया जा रहा है या मुझे बलि का बकरा बनाया जा रहा है। तो यह आप के आपस का मामला है और इसमें मैं नहीं पड़ता, लेकिन आज साधारण लोगों की यह राय हो गई है कि विरोधी पक्ष का इस से कोई सम्बन्ध नहीं है और अगर यह काम किया है, तो व्यवस्था और इस्टाब्लिशमेंट के लोगों ने ही किया है क्योंकि श्री ललित नारायण मिश्र उन के लिए एक बहुत बड़ा इम्बेसमेंट बन गये थे। इसलिए आप लोगों को इस की शुरू में ही जो निष्पक्ष जांच करनी चाहिए थी वह नहीं की और पोस्ट मार्टम नहीं करवाया और जब पार्लियामेंट का सत्र शुरू होने की स्थिति उत्पन्न हो गई, तब आप ने इस चार्ज को प्री-एम्प्ट करने के लिए मेथ्यू कमीशन नियुक्त किया। अब इस कमीशन को भी देखिये।

सभापति महोदय, आप मेरी ओर क्यों देख रहे हैं। मैं आप का ज्यादा समय नहीं लेने वाला हूँ और मुझे ज्यादा समय लेने की जरूरत नहीं है।

सभापति महोदय 10 मिनट हो गये हैं और मैंने आप को टोका नहीं है। आप जरा जल्दी खत्म कर दीजिए।

श्री मधु लिमये उम वक्त तीन किम्म की जांच चल रही है। एर मेडिकल टीम बनाई गई है जा गह देखगी कि उन का ईलाज ठीक म हुआ या नहीं। मेरे जानकारी यह है कि भल्ला साहब ने कहा, जब उन का तक्लीफ और पीडा हो लेगी तो फिर डाक्टर को मँलून मे बुलाया गया ता डाक्टर न कहा कि आप को कुछ नहीं हुआ है और आप नरवम हा रहे है। उम्मीद वहा यू डोन्ट ट्राई टू मिमलीड और उम समय जानबूझ कर इन्टरव्यू करवाया गया हरि प्रसाद शर्मा मे, जो पटना स्थिति आल टण्डिया रेडियो में थे और यह आल इण्डिया रेडियो पर भी आया है। अब यह

एक मामूली सी बात है कि जब इस तरह की चोट होती है, तो जो पेशेंट होता है, उस को पानी बगैरह नहीं पिलाया जाता है लेकिन रास्ते में उनको कई दफा पानी पिलाया गया और इतनी देर मे उन का आपरेगन हुआ कि सब जमा हुआ खून उन के पेट में से मिला है। इसलिए मेरा आरोप है कि उस वक्त जो डाक्टर आ पर थे उन्होंने सही ढग से उन का ईलाज नहीं किया है और उस में विलम्ब हुआ है। दरभंगा, समस्तीपुर, पटना और दिल्ली की बात तो आप छोड़िए लेकिन मलून में भी जा उन का इलाज होना चाहिए था, वह नहीं हुआ और राम्ने भर उन को बराबर पानी पिला रहे जिस का बहुत बुरा असर उन के घाव पर पडा और उन को मृत्यु हो गई।

तीसरी सी० बी० आई० की जांच चल रही है। इटेलीजेस वाले क्या कर रहे हैं, मुझे पता नहीं है। तो मेरी राय में इस में विलम्ब अक्षम्य विलम्ब का बुरा असर होगा सरकार ने बहुत सारी एजेंडें को नष्ट किया है या नष्ट होने दिये हैं। साथ ही साथ सरकार के जो अफसर है या मंत्री लोग है, उन का इस कांड में जो रोल है वह मेरी राय में बहुत गैर-जिम्मेदाराना है। वे बहुत गैर-जिम्मेदाराना तरीके में पेशे आण है और उन्होंने अपने दायित्व को ठीक तरह से नहीं निभाया है। इसलिए मैं मांग करना चाहता हूँ कि अगर आप चाहते हैं कि सत्य का पता लगे, तो मैं मे जा भी दोषी प्रकृत है, दोषी लोग है उन को हटा आप का कर्तव्य हो जाता है। सम्मन्तपुर सिन्हाट के वार में जब बिहार सरकार की अपनी अकर्मण्यता है, इतनी असफलता है, तो मैं गमसता हूँ कि बिहार सरकार को सत्ता में रहने का अधिकार नहीं है। स्वयं डा० जगन्नाथ मिश्र ने, जो उन के भाई है, कहा है कि यह बहुत बड़ा घडयत था और बिहार सरकार ने सेक्यूरिटी के बारे में अक्षम्य अपराध किया है। यह स्वयं डा० जगन्नाथ मिश्र की राय है। तो ऐसी हालत में मैं सरकार को मलाह देना चाहता हूँ कि वह बिहार सरकार को तत्काल बर्खास्त करे

श्रीरुथे जो सारी बातें हैं इन बातों के बारे में सारी मदद मेम्बर कमीशन को दी जाए करना यह जो रहस्य है, यह कभी खुलने वाला नहीं है।

इस के अलावा अनिल चोपड़ा को जो नकथित सड़क दुर्घटना में हत्या हुई है, उन के बारे में जानकारी लेना चाहता हूँ।

उनके पास जो कागज पाए गए हैं उन में तीन तीन बार जोगी ताडेल का नाम आया है। यह जोगी ताडेल कौन है। एक और उसकी रिश्तेदारी हरि भाई ताडेल से है जो कांग्रेस पार्टी के दमण से एम एल ए हैं और मुकुंद नारायण बखिया के रिश्तेदार हैं। दूसरी बार प्रेमा भाई ताडेल से है जो मार्कट लिमिटेड में इनस्पेक्टर हैं। यह अनिल चोपड़ा के कागजों में स्वयं मैंने देखा है कि दो दो तीन तीन बार इन सभी लोगों का उल्लेख है—

एक माननीय सदस्य कहा देखा है।

श्री मधु लिमये : क्या ताऊ ?

SHRI K LAKKAPPA: (Tumkur):
You are allowing all these things How
is it relevant?

श्री मधु लिमये क्या मैं गलत बोल रहा हूँ। मैं यह कह रहा हूँ कि सिक्योरिटी और इंटेल्जेंस का टोटल फेल्योर हुआ है, पूरी असफलता के ऊपर मैं बोल रहा हूँ। इसलिए मुझे यह कहने का अधिकार है। अन्त में मैं मांग करता हूँ कि सरकार अगर इन रहस्यों का उद्घाटन चाहती है तो मैं कहूँगा कि नागरवाला से ले कर समस्तीपुर बम विस्फोट तक जितनी भी स्थस्यमय मृत्युएँ हुई हैं उन सभी की जांच करने के लिए एक ससदीय समिति आप बिठाएँ। आप जानते ही हैं कि ससदीय कमेटी में दलीय दृष्टिकोण से विचार नहीं होता है और इस कारण जो सत्य है वह बाहर आ सकता है। अगर इस तरह की बात को आप कबूल नहीं करेगे तो जनता का जो विश्वास है वह आप पर से उठता ही चला जाएगा। इनको बहुत धमड़ बा कि जनता मेरे साथ है।

हमेशा कहती थी कि मेरे साथ हैं लेकिन लगातार जो उन निर्वाचनों के नतीजे निकल रहे हैं वे आपसे खिलाफ जा रहे हैं। आप कहती थी कि बमीलाल की ज च नहीं की जाएगी। क्यों नहीं की जाएगी? क्या इसलिए कि गडगाव जिले में उन्होंने मार्कट लिमिटेड को तीन सौ एक्ड़ जमीन दी है? लेकिन जनता ने फंसला दे दिया। तीन में से दो उप निर्वाचन आप हार गए हैं। मेरे पीछे मेरे मित्र बैठे हैं जो जबलपुर जैसे आपक गढ़ में कांग्रेस के उम्मीदवार को 87000 मतों से हरा कर आए हैं। गुजरात में आप चुनाव नहीं करा रहे हैं क्योंकि आपको डर लग रहा है। आपके जो कारनामे रहे हैं उनकी वजह से जनता का विश्वास आप खो चुका है और इसलिए हम चाहते हैं कि सदन को तत्काल स्थगित किया जाए और इस सरकार को सेश किया जाए। अगर आप इस प्रस्ताव को नहीं मानते हैं तो जनता अन्त में आपका विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव और सेश मोशन जरूर पाम करेगी वशत कि ससदीय लोकतंत्र को आप बचने दें।

MR. CHAIRMAN. Motion moved:

'That the House do now adjourn'.

SHRI H K L. BHAGAT (East Delhi) Mr Chairman, when Shri Madhu Limaye said that a Parliamentary Committee should be appointed and that the committee would be able to make an impartial inquiry into certain things, including this assassination, I do not know whether he was trying to feel himself or anyone else in this House or the people of India. I would tell him with respect and humility that he is only trying to feel himself if he thinks that anyone in this country can believe that, with men like Shri Madhu Limaye here and making speeches of the kind that they are making, any impartial study can be made by any parliamentary committee of any matter regarding this country if he will

[Shri H. K. L. Bhagat]

excuse my saying so, I would say that such a hard approach would create an impression of a false witness, a prejudiced prosecutor and an absolutely perverted judge. Can such an Opposition sit in judgment and pronounce on things which have happened in this country?

I am sorry to say and I feel ashamed to say that on a serious matter like this, assassination of one of our colleagues, today Shri Madhu Limaye has betrayed a completely crude political approach. Of course, it is consistent with their past attitude. All of us here and the whole country knows that in this House itself and outside this House he and his like have continued a political assassination of Shri L. N. Mishra in season and out of season without any foundation or anything. They were trying to create an atmosphere of hate and violence not only against the Congress and its leadership but particularly against Shri L. N. Mishra personally.

When I heard him today talking about Shri L. N. Mishra's assassination and saying these things, if he does not mind, I would say, "Well, God save this country from hypocrisy, simple and pure"

He has taken exception to the Prime Minister mentioning about an atmosphere of violence in this country and warning the nation about it and saying that such murders are the result of an atmosphere of violence. Was the Prime Minister wrong in saying that? Is it not a fact that after JP's movement started, an atmosphere of violence has developed in this country? Is it not a fact that 40 bomb explosions have taken place in Bihar after this movement? Was there any bomb explosion before this movement? Is it not a fact that rails were paralysed? Is it not a fact that students were shot? Is it not a fact that non-violence was preached while, in fact, violence was created and an atmosphere of violence was created in this country? Now, if the Prime

Minister says that such murders are the result of an atmosphere of violence, if she warns the nation about it, what is wrong in that? If she had not done it, she would not have done her duty. I think, the Prime Minister did her duty to the nation by warning the nation about it.

I want to be very ruthlessly candid about it. I do not know how my friends will like it or the Prime Minister will like it. I want to be very frank about it. The Opposition are creating an atmosphere of hate and violence. They created it not only against Shri L. N. Mishra but they are creating it against the Prime Minister herself. Mr. Limaye was quoting his Bible today. He was quoting from the *Motherland* to substantiate a point. If you read the *Motherland*, the *Jana Sangh* paper, if you read the *Organiser*, if you read various papers of these parties, as your colleague, I am warning you that you are deliberately creating an atmosphere of violence personally against the Prime Minister herself. I tell you, if anything happens, the nation will never excuse you. I am giving you a warning. (*Interruptions*)

SHRI SAMAR GUHA (Contal):
On a point of order, Sir.

MR. CHAIRMAN: Mr. Guha, don't get excited. Please sit down. There is no question of a point of order.

SHRI SAMAR GUHA: Can a Member of this side or that side point out to this side or that side regarding a particular person, primarily taking the name of the Prime Minister, that they are creating an atmosphere of violence as a result of which something happened? This accusation is very dangerous. Its implication is equally dangerous. Will you permit?

MR. CHAIRMAN: You were on a point of order.

SHRI SAMAR GUHA: There is a way of speaking. But this gentleman is making a pointed attack on the Opposition, by taking the name of the

Prime Minister herself, that they are creating an atmosphere of violence. I want your observation whether a Member can be allowed to make this kind of an accusation.

MR. CHAIRMAN: There is no point of order in your interruption, Mr. Samar Guha. Let him continue. He is making his point with reference to a certain context. Do not get excited.

SHRI H. K. L. BHAGAT: Mr. Madhu Limaye has said that they have asked for a judicial inquiry. He has said that so many things are there and that the Mathew Commission will go into this and so on. I am glad, he has directly or indirectly expressed confidence in the Mathew Commission. Now, a Commission has been appointed under the Commission of Inquiry Act, which has a much wider scope than even a judicial inquiry. Instead of welcoming the appointment of an Inquiry Commission under the Commission of Inquiry Act, even this has been made a subject-matter of criticism and it is being said that this has been delayed. He is asking why it has been appointed after a few weeks. An offence has been committed, and it is the duty of the investigating agency to go into the case and try to find out the culprit. There are various aspects which require to be gone into carefully. If Mr. Madhu Limaye will excuse my saying so, after his speech, if he himself introspects—but I am sure he will not—he will find that he did not say even one word new. He has only picked up one piece from one paper and another piece from another paper, and what does not suit him, he says that that part was inspired by the police. And many versions have been given—one version, second version, third version and so on. If, according to him, the whole thing was carefully planned—he has tried to raise clouds of suspicion and doubt against the Government—then, would the Government arrange to make these contradictory statements? Would the Government ask Dr. Bhalla to say that the injuries were superficial?

Another very funny argument was given by Mr. Madhu Limaye. He has said that the murder of Mr. L. N. Mishra helps the Government; at the same time he says that all the people believe it. If the people believe it, as you say, that it helps us and if the people are angry with us, then the murder suits you; it could be a motive for you. When I say 'you', I am speaking symbolically of the forces you represent. I do not want to express any direct opinion. It is for the Commission to inquire into it. Left to myself I would not have said anything. But since you have said certain things, I have to say that it could be said that this murder could give the Opposition the ground to criticise the Government, which you are doing. It is most fantastic to say that the murder was committed to suit this person or that person. By trying to create all these innuendoes and suspicions, by all this funny logic, I would say, you are only trying to deceive yourselves.

He has spoken about All India Radio. If I were to scrutinise the All India Radio reports, I would point to him and say that I have this grievance against AIR. I have a great respect for Mr. Madhu Limaye. He studies things and sometimes says relevant things. But many times what he says is irrelevant. But the All India Radio has been very generous to him. He should not have any complaint against the All India Radio. His name appears in the All India Radio very prominently, while whatever I say, even if it is relevant, is ignored generally. Why? According to their own paper, their procession did not contain more than 10,000 people. But it was described by the A.I.R. as a big procession, whereas the procession which we took out and which contained 35,000 to 40,000 people, was described as just a procession. I do not want to say much on this. If the All India Radio can be accused, it can only be accused of partially in favour of the Opposition. That is a fact. I will tell you another instance. We were busy in the UP elections

[Shri H. K. L. Bhagat]

We were fighting the elections and the All India Radio was narrating the details of the Nāv Nirman movement in Gujarat at that crucial time in the radio, TV and what not. These people say, 'Look, the correspondents are free to write' and they give their opinion against us. Mr. Pandit is a respected journalist. Journalists give the opinion one way or the other, but to pick out an instance to condemn the Government is, I would say, hitting below the belt. Now, he has narrated the story given by Mr. Jha and so many other Jhas. . . (Interruptions) Shyamnandan Babu, all these things are for the Mathew Commission to judge.

"मैंने सुना है", "मुझे किसी ने बताया है", "कहा जाता है", "कहा गया है" :

What is this? We are Members of Parliament. We are supposed to speak here not on the basis of hearsay, not even on the basis of some mere press reports. We are supposed to speak on materials which we honestly believe in and for which we have proof to quote as authentic. Now, merely on rumours, on talks, on hearsay and what not, to make these statements on a matter so serious like this is not proper for members.

Now, it was said that delay had been there in the appointment of the Mathew Commission. As I said, it was appointed a few weeks after the incident. When was the Warren Commission appointed to go into the murder of President Kennedy? In our own country when did we appoint Kapoor Commission after Gandhiji's murder? When we thought that there were still several aspects of the case which needed to be gone into.

Now, my friends have no faith in the CBI. Now, in this so-called licence case they rely on the CBI report and on the other hand, they condemn the CBI. Ultimately, they are the national agencies and they have unravelled many a mystery. They caught many cases. Now, my friend was trying to link this up with

the deaths of Nagarwala, Anil Chopra, Kashyap and what not. For Mr. Jyotirmoy Bosu every case of death of anybody is a link in the chain of his imagination. We have discussed this Nagarwala case for a fairly good number of times in this House. Now, Mr. Nagarwala was caught immediately and it was the investigation agency which arrested him. It was again the investigation agency which recovered the money. He made a confession and what not. Similarly, our friend talked of Kashyap's case. We all know that there was an accident in which four people died and a tonga and a car collided and so on..

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Why no *post-mortem*?

SHRI H. K. L. BHAGAT: Therefore, I am saying that the irresponsibility of these allegations would convince nobody. The Opposition, some of the Opposition parties, I would say—my friend, Prof. Samar Guha can have some consolation—is deliberately and consistently following a policy of creating chaos, lawlessness and violence to beat this Government and the leadership of the ruling Party with any fabricated falsehoods, even I would say, lies, deliberate lies, knowingly deliberate and shameless lies, I would say that.

Now, what I would respectfully submit . . . (Interruptions) I am not pronouncing my verdict whether any better medical treatment could have been given to Shri L. N. Mishra. I do not know. On the one hand, my friend, Shri Madhu Limaye says, 'Why did you not have the *post-mortem*?' Mr. Madhu Limaye should place himself in the position of a relative and I ask him if he would have asked for a *post-mortem* in such circumstances.

17 hrs.

He says, *post-mortem* has not taken place; he also said, accumulated blood

was found from his stomach, as if he has conducted the post-mortem himself, I have seen so many post-mortems before. My dear friend, you know quite a lot, but you do not know law and medical jurisprudence. The gamut of inquiry of the Mathew Commission is very comprehensive. They will go into the whole question in all its aspects. The CBI has to look into the question, who are the killers. They have got to find out this thing. He quoted Lark and said one sentence from the Prime Minister's remark where she said, who has killed is not that important. I tell you, you please read the whole of the interview, then you will find out the position. It is the atmosphere which is most dangerous, the atmosphere is responsible for killing one today maybe, it would be responsible for many tomorrow, and it is this atmosphere which is very dangerous. And it is this which the Prime Minister has been trying to emphasise. You are accusing this Government. You have a right to do so. It is your job to do it, you are here for that purpose, you will have to do it, but I tell you, please remember your duty towards the nation. This is very important. Don't forget it. By what you are now doing you are doing the greatest dis-service towards this nation by coming into this House and saying such sorts of things, uttering such kinds of talks and giving out such kinds of arguments and you are only trying to deliberately mislead the people. It is not right to make such kinds of accusations like these. The Mathew Commission would be there, they will go into all these aspects and I hope you will have the courage to appear before the Mathew Commission. You may place all your evidence before that Commission. We will all expect you to appear before them and place your evidence before them.

It is a very great tragedy that Mr L. N. Mishra was assassinated in this manner but the greatest tra-

gedy is that even after that murder some sections of the opposition continue to be as irresponsible as ever and they do not understand the writing on the wall. The Mathew Commission must go into various matters, the CBI has got to find out the killers. Mr Madhu Limaye said, that the CBI has not got the killer so far, as if the murderers are in his pocket and the CBI had only to discover them and take them out. Sometimes the killers are murdered, such murders are carefully planned and so it takes time especially when it is systematic planned murder. You cannot blame the Government in season and out of season for everything. You should welcome the appointment of Mathew Commission.

Sir I conclude by saying that this Adjournment Motion is a simple, pure and attempt at blackmail, trying to stick mud at the Government at the Congress and the ruling Party and I am sure this is bound to be frustrated. Thank you.

SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI (Calcutta—South) On a matter of personal explanation Sir, I was not in the House and I was quoted. I came to know that Mr. Madhu Limaye quoted from a newspaper *Hindustan Times*. I came to know that some news item has been published in *Hindustan Times* involving my name, that I have said in some meeting yesterday that the doubts that are being created—the atmosphere of suspicion—from Shri Nagarwala's death to the death of Shri L. N. Mishra as a result of bomb blast should be cleared. I did not say so. It is absolutely wrong and false and I think the view expressed here is wrongly attributed to me. This I would like to make clear before you.

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour) Mr Chairman Sir today it is one month and fifteen days since this tragic event had taken place. Now, what the Government has done

[Shri Jyotirmoy Bosu]
so far is to pre-empt this House and the Consultative Committee of Home Ministry by appointing a Commission of Inquiry headed by Mr. Justice Mathew.

I would like to know precisely from the hon. Home Minister as to what has this Commission got to do because my information is that most of the evidences are being destroyed, removed or nullified. This tragic event reminds us of what happened to Mr. Hemant Basu in Calcutta in 1971, who had visited this atmosphere for getting a political dividend? If the truth ever comes out, we would exactly like to know whose tainted hands were behind this murder. The tragic event shook me because I was one of the most critical persons in politics—not really against him as an individual but as a pillar of the Congress Government and the Congress Party and the lieutenant of Mrs. Gandhi as a biggest fundraiser for Mrs. Gandhi and her party. It is an irony of fate that the cause for which the late Shri Lalit Narain Mishra made himself controversial since the Congress split of 1969, it is the same cause that has destroyed him prematurely. There is not the slightest doubt that the people behind this are most powerful, resourceful and skilful. The police officers of the rank of Inspectors General working round the clock discovered six theories within three days of their work. And, Mr. Reddy—Reddy Garu—made a solemn assurance in Bihar that 'we are doing our best'. The CBI, knowing what it was, fully well, said and I am quoting from the *Times of India*:—

"C.B.I. officers investigating the Samastipur bomb blast which claimed the lives of Mr. L. N. Mishra and two others are looking for the master mind behind the outrage and are confident of a major breakthrough within a week or so."

This is dated 8th of January 1975 from Samastipur. From 8th to 18th of February it is one month and ten

days that had passed and, Mr. Brahmananda Reddy, tell me how many days make a week for you? Is it one month and ten days? Here is a clipping which you may look at. This is from the UNI news item which said:

"A Team of CBI and State police officials investigating into the bomb explosion at Samastipur on Thursday, in which three persons including Railway Minister were killed have found some definite clues into the incident, according to report: reaching here."

It is done two days after the actual happening. They found definite clues. What is it that they are trying to tell me? Are they trying to take us for a ride? Besides this, their sole job is, regret to say, to harass the employee and the Opposition Parties and in torturing them. I am positive that the bomb that was found in the railway officer's house was planted by the Intelligence. One newspaper has said that the first bomb was hurled to destroy Shri L. N. Mishra. The second bomb was hurled to save the face of this lady. From this you can draw your own conclusion.

Then comes the very powerful Minister of State, Mr. Om Mehta. He says: He says from Lucknow:

"Mr. Om Mehta, Union Minister for State for Home, today said the CBI report on its investigations on the Samastipur outrage in which Mr. L. N. Mishra and two others were killed, was expected in next two or three weeks."

Again I ask you Reddy Garu how many days make a week in the Home Ministry. I want to be enlightened as to who planted this time-bomb story first. I would like some Members in this House to understand how sophisticated a time-bomb is; what is its mechanism and how does it work. The first story they had to drop simply because the ceremony was scheduled to take place originally at 1.30 p.m. but in actual

reality it took place at 5.30 p.m. so that the time bomb story had to be discarded because the planter of the time bomb would not first take out the time bomb and then relight it. I do not take hashish and as such I can not absorb such stories.

Then a story tag was planted in the press that it is an ordinary bomb which needs to be used through ignition or spark. The Honble Defence Minister would bear me out that an ordinary bomb requires a certain length of fuse wire and it has to be a time-fuse—a fuse which will burn a minute a yard or a fuse which will burn 30 seconds a yard or a fuse which will burn 15 seconds a yard. So the fuse has to be according to a time length oriented burning rate. Therefore if a bomb had been planted in the rostrum and that has to be ignited and exploded the fuse has to be operated by a person who will not be noticed at the same time. He must be outside the security zone. Further to hide the fuse wire you have to dig at least one foot of earth and dig it at least upto a distance of five hundred to six hundred feet and there you give a spark. Tell me if somebody had to dig one foot of earth for five hundred to six hundred feet how could the freshly heaped earth escape notice? This is also another cock and bull story.

Then the grenade story came. The grenade they are talking about—I am not quoting from newspaper—is Pat 37 grenade which is something like a big egg of oval shape. The surface of the grenade is like crocodile skin. It is not like a cricket ball and as such it cannot be rolled so easily. Then on the rostrum I gather there was a mattress. I know people in certain regions like to have a mattress beneath and they like to sit on the mattress. My dear Sir, Mr Defence Minister and Mr Home Minister on the mattress this grenade cannot be rolled because the man who will role the grenade will get noticed at once and secondly it can at the most be pushed as in carrom board game. The man would not commit

suicide as the effectivity of Pat 37 grenade is around 25 yards. So, by the time, he could roll and get out, he will destroy himself. That is also a thing which has to be ruled out. I can tell you this much. Now the pin is released through the tip and the lever has the T.N.I. high explosive within the bomb and then the explosion takes place. Within four seconds, it is over. How is it possible that the grenade was rolled on the dais where hundreds of policemen and intelligence men were there where burning lights were there? Mr Chairman Sir you are an intelligent man. I would like to understand from the hon Defence Minister who should at least know something about these things as to how is it possible? Sir the grenade was placed. If I am given this job to do the grenade has to be placed in a built-in cavity when the rostrum was being built. There should be a box not very long may be six inches long eight inches long to be on the safe side so that the lever can play wholly and fully. It should be built in in a box the dimensions of which should be at least 8/8 inches and the depth should be at least four inches. Now Sir the lever has to be released. For the release of the lever, the pin has to be removed. For the removal of the pin you have to fix a conduit pipe on a hole in the box and a wire has to be tied with the pin which has to be pulled by a man outside and the man has to run away immediately after pulling the wire. You release the pin you release the lever then within four seconds the whole thing bangs and that is exactly. I suspect what had happened.

Now Sir I would like to know one thing. You are a lawyer. I would like to understand why the electricity was cut off immediately after the explosion? The electricity mains were not on the dais but were elsewhere. The man who pulled the wire put off the electricity so that it cannot be detected. The dais was demolished the very next day. Why? Because they did not want to take chances although I personally think that the box and the

[Shri Jyotirmoy Bosu]

conduit pipe. everything, should have been taken away by then. When the real culprits are in supreme authority, I assure you, Mr. Chairman, Sir, no truth will come out.

Sir, I have received a letter from a senior advocate. He has posed certain question and I would like Reddy Garu to reply to these questions here He has asked:

"Why late Mishra departed late from Delhi when he was to magurate the ceremony at 1.30 P.M. at Samastipur?"

When the bomb exploded at 5.30 P.M., why Mr. Mishra was not admitted to Samastipur or Laheria Sarai Hospital, a district level hospital immediately?

Why the special train started at 8 P.M. from Samastipur and why it reached at 11 P.M. at Danapur when the same engine which was to leave for Muzaffarpur was to change its face?

What treatment was made and by whom in the meantime before train reached at Danapur at about 11 P.M.?"

I know that Dr Bhalla, who is the Chief Medical Officer of North Eastern Railway gave some sort of bandaging, saying that he is out of danger. I have got the clippings here. It was said that it was only a skin deep injury. Firstly, it was said that it was on the thigh. Now, Sir, if a splinter of a 37-Paton grenade pierces into the abdomen, the whole dhoti and the under-garments would have been red with blood. There is no question about it. You cannot hide a splinter into a 37-Paton grenade. That is also a story which has to be discounted.

Now, Sir, the advocate has further asked:

"Why Dr. S. M. Nawab a retired eminent surgeon who has his own clinic at Laheria Sarai and reached

Samastipur within an hour was not allowed interview with Mr. Mishra to treat him?"

When Dr. Nawab ordered immediate admission of any bomb victim in his clinic without asking for charge and a few got their treatment there why Mr. Mishra was not allowed?

Why there was no response on telephone by Chief Secretary, Health Secretary, Secretary to the Governor and others when Mr. U. N Sahi tried to contact them on telephone after the incident on the evening?

Why Dr. U. N. Sahi was not given any satisfactory reply by Railway staff at Patna and why he was told that the special will not halt at Patna, though it halted there for ten minutes?

Why Dr. B K Sinha was not even asked and nobody even talked to him while he waited till 11 P.M. in Danapur Hospital knowing him to be an eminent surgeon and doctor?

Why did the doctors at Danapur first declare Mr Mishra out of danger and why Drs U. N Sahi and B K Sinha were contacted only at 4 A.M. next morning but not earlier?

Did the late Mr Mishra weep to see Dr U. N. Sahi and Dr K Sinha in the hospital to save his life?

Why did Mrs. Indira Gandhi ask Mr Mishra . . ."

I will come to this later.

This is the position before me. The late Mr Mishra had said to pressmen at Patna, "I am feeling much better". Dr. Sahi had said that the late Mr Lalit Narayan Mishra's life could have been saved if instant medical care was given. Did he not die of cardiac arrest? Is it not the same case with Nagarwala also? How can you create cardiac arrest? Can it not

be done by injecting something which is given to a woman who is giving a child birth if she is haemorrhaging? Does it not coagulate the blood? Is it not a simple job to do?

I have already stated what Dr. Bhalla had said. We were really surprised and shocked when we saw Prime Minister Indira Gandhi declare here that the Railway Minister's assassination was well-planned, and squarely put the blame on the Sarvodaya leader Jayaprakash Narayan's movement in Bihar. So when you cannot catch anybody, catch the nearest man you can find. So she would not even hesitate to put the blame on a great leader like Jayaprakash Narayan. You may agree with him; you may disagree with him. In your party, there are people who are in agreement with him. Amongst us, there are many people who agree with him, and who do not agree with him. But it was most unfortunate that she had chosen Jayaprakash Narayan for this purpose.

The Prime Minister even said that it was a rehearsal for killing her. I remember on one occasion when she was the Home Minister, she said that the Jan Sangh was trying to kill her. In the Consultative Committee of that Ministry, the matter was taken up and some of us insisted: 'Kindly tell us what proof and evidence you have got to establish that your life is threatened by the Jan Sangh' After 45 minutes of bickering on both sides, she had to admit and confess that she had neither any evidence nor any proof in her hands. So what else shall I call it other than a gimmick?

I want to ask Reddy Garu why no post mortem was done. It is not obligatory that in a death under unusual, unnatural circumstances post-mortem is a must, unless you have something to hide, unless you have skeletons in the cupboard?

Then, is it or is it not a fact that on 23 December, the late Mr. Mishra was summoned by the Prime Minister and told to resign, taking 7 days'

time to make up his mind? Is it also not a fact that on 24 December some of my friends from Bihar on that side went to the Prime Minister and pleaded that he should not be pressed to resign, and to that the Prime Minister reacted sharply, saying that 'Mr. Mishra has embarrassed the party, the Government and myself and therefore, he has to be out and lie low out of politics for some time?' In that context, I want to ask: If he did something, was not most of it for the party, the Government and Mrs Indira Gandhi? This is a very sad thing for us to understand.

There is a report in the *Hindustan Times* dated 5th February 1975. It says:

"Two bags containing the personal papers of Mr. L. N. Mishra which are reported to have included two tape conversations giving an indication of an anti-Mishra conspiracy are missing. The tapes were said to have been handed over to the late Minister in December and are considered of 'primary importance'. The CBI in investigating various theories and possibilities in the Mishra murder case has reportedly got clues regarding the involvement of political figures"

This proves one thing, besides other things, that our telephones are tapped and tapes of tapped telephone conversations are taped again and the copies of the tapes in this case, were handed over to the late Mr. Mishra. That is what I hear. I am told that the Prime Minister's telephone was tapped; her telephone tapped tapes were handed over to the late Lalit Narayan Mishra and later on the Prime Minister came to know about it....

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: The telephone of the Prime Minister?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Of course; I say that on my own responsibility. He had copies of the tape-recorded conversations that the Prime Minister had with somebody else, important in the party.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA:
We are in good company then.

SHRI JYOTIRMOY BOSU:
Frankenstein will never spare anybody. I am told that the late Lalit Narayan Mishra out of sorrow and disgust said 'if I am drowned in the river, I shall not get drowned alone; it will be others also. He also said: I have collected Rs. 8 crores for the party, even if Jyotirmoy Bosu is correct and I might have swallowed a crore, what happened to the Rs. 7 crores that I handed over to the proper authority?.. (Interruptions)

The late Lalit Narayan Mishra understood that his days were numbered and it is said that he warned his family not to open their mouth if something happened to him; he cautioned them: if they opened their mouth after anything had happened to him, the same fate will come on their children: that is the position.

We know that the genuine, original report of the CBI which included the name of the son of a great entrepreneur, the son of a VVIP, namely, Mrs. Indira Gandhi, first reached the hands of the late Lalit Narayan Mishra and he promptly did photostat copies of the same and sent those photostat copies to different places including one set to Nepal. I want to know. The name of Ram Bilas Jha was mentioned. Is it or is not a fact that he was employed by the police department once upon a time? Is it or is it not a fact that he also worked for the intelligence department once upon a time. Is it not a fact that he flew with Mr. Kapur on 6th January to Delhi? Are these not facts? Is it not a fact that he was the man who was preventing people, doctors, from going inside?—A day will come. There was a picture called the Fall of Berlin; you will also see the picture; the fall of Indira. And the days are not very far off. Because you can shut me out here through the rules of procedure but you cannot shut people in the country

who have understood the sort of the Government they are living under, not only through their miseries but also through this murder, politics of murder. They talk about violence, etc. They are the people who are doing it all the time.

They waste the whole of the last session on Tul Mohan Ram licence scandal and at last they yielded. If they had yielded earlier, we could have discussed many other important issues concerning the people, namely, food, unemployment and so many other things. Nothing was done. I assure you that after reading the CBI documents which we are not authorised to divulge at the moment, although Mr. Raghu Ramaiah charged me that I had broken the gentleman's agreement and then he had to withdraw it; I forgive him ...

THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): No, I never withdraw anything.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Then how did you allow it? You wanted us to stop perusal of the CBI report; you wrote to the hon. Speaker that Jyotirmoy Bosu had broken the gentleman's agreement but you swallowed it and you had to allow us to go and see it.

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: It must go on record; what he says is not true, I never stopped perusal. The other hon. Members are there; they will stand by what I say.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: That is precisely the reason. That is why you were not taken in the Ministry in 1971. I know the reason.

My humble request is: let us maintain the dignity that the House deserves because it is the Peoples House. There should be a Parliamentary prob. Let the Parliamen-

tary probe bring the truth to light and let those who are guilty be punished. And we are not interested in witch-hunting including the hunting that seems to have been started against poor railway employees after dismissing 16,800 of them for a legitimate strike. I tell you the hands behind this murder are all at Delhi. So, the CBI enquiry at Samastipur will only yield a big lemon and nothing else.

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: On a point of personal explanation on what he said. When certain friends wanted to peruse beyond a certain date, I said there has been enough perusal and there was no question of further perusal. I did maintain that they had enough time to peruse the documents and therefore it should be stopped.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I was authorised by the non-CPI opposition to tell the press, not what we did in the CBI perusal operations, but other matters. Basing on that it was given in the "Times of India New Service". On that Shri Raghuramaiah in his wisdom wrote a letter to the hon. Speaker saying that Jyotirmoy Bosu had broken the gentleman's agreement by addressing the Members and therefore the CBI perusal would not take place any more. That letter was passed on to us. So, we went to the Speaker's house and told him that what he had reported was nothing but a cock-and-bull story. Therefore we were allowed to go on again because what he said was not true.

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: This again is not correct. Let the record be set right. What I wrote to the hon. Speaker was whether under the circumstances in which Mr. Jyotirmoy Bosu went to the press it was necessary to further peruse the documents. I did not say the perusal should be stopped.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: No, Sir. I cannot divulge anything.

MR. CHAIRMAN: Let us not sidetrack the debate.

SHRI N. K. P. SALVE (Betul): In a debate which revolves around an event, an incident which was so unfortunate, which was so tragic, which was so grim, involving the death of a colleague of ours, a loveable person by all standards, I expected that at least in this debate the Mover and Shri Jyotirmoy Bosu, who have just made their speeches would show a modicum of dignity, restraint, moderation and responsibility so utterly necessary on this occasion. But having heard Shri Madhu Limaye and Shri Jyotirmoy Bosu I am inclined to consider that this adjournment motion has been brought forward entirely with the purposes of bursting a bloated bladder of lies, fallshoods, wild allegations and utterly baseless charges and any concern which is sought to be shown in this motion by the Mover or Shri Limaye about the death of Shri Mishra is sheer hypocrit. Therefore, I am impelled to conclude that this adjournment motion is no more than plenty of sanctimonious political humbug and it deserves to be treated as such.

Before I come to whatever I have to submit on this very grim and tragic incident involving the death of Lalit Babu, I would like to deal with two or three points which Madhuji made. So far as Shri Jyotirmoy Bosu is concerned, I attribute his speech and his wild allegations entirely to dementia and I cannot deal with him. Shri Bosu showed the knowledge of a ballistic and explosive expert. He had the experience of faithfully serving the British army which benefit most of us did not have fortunately. What he said in details about the explosives and about the ballistic techniques may be hundred per cent correct, but I must say one thing. Such immaculate precision with which he described the incident made me feel that he seems to have done the whole thing himself. Otherwise, it is impossible to comprehend such details about the explosion unless it is

[Shri N. K. P. Salve]

his own fertile imagination. If he is worth his salt, he should go and show his knowledge in front of the Mathew Commission. Justice Mathew is known not only for his learning and erudition but also for his fearlessness. What do we innocent members of Parliament know of explosives and ballistic techniques? If you are really sure of your facts, instead of wasting 20 minutes of Parliament, you would have done well to appear before the Mathew Commission. I hope you will go as a witness before the commission.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I shall consider your submission.

SHRI N. K. P. SALVE: The amount of casualness I am seeing in the whole debate is most unfortunate. Let us not reduce this debate to sheer irresponsibility, making allegations and averments against each other. Let us do something which may help avoid the recurrence of this sort of thing again in the country

Shri Madhu Limaye is known for his being extremely studious. When I saw him at the library, I thought he was collecting a mass of evidence and he would come out with something which might be clinching and convincing about the motion. I want to deal with two of the many points he made. He asked, why was not a *post mortem* made and according to him, because it was not made there is something hanky-panky. On this point when I tried to interrupt him, he felt a little unhappy. I want to remind him only from a professional angle that a *post mortem* is done on a body only where there is any doubt as to the cause of the death, either proximate or approximate. In this case, for six long hours, the medical experts operated on the entire thorax starting from the throat to the abdomen. If a *post mortem* was considered necessary, it should have been left to the medical experts. They would have done it if there was something vague or ambiguous about

the cause of the death, immediate or ultimate.

The second point he made is an extremely serious one. In Maharashtra and even in M.P. the rumour was widely circulated that the Prime Minister was alleged to have told Lalit Babu "You are no longer good to be a member of the Cabinet" and it was for this, Lalit Babu was sought to be got rid of. Fortunately, the Prime Minister was here and she immediately got up and said that the allegations were absolutely false and untrue. This should put an end to every controversy on this point. If you are capable of reason, I want to put one thing. In all these days, whatever else the Prime Minister may be guilty of, she is not guilty of one thing. If she does not like a minister, she cannot tolerate him even for one minute. She drops him like hot bricks. Was it necessary for her to go into this sort of thing? It was not.

श्री मधु लिमये : वह रहस्य जानन

थे ।

श्री नरेन्द्र कुमार साठवे : श्रीर यह रहस्य सिर्फ़ आपको ही मालूम है, दुनिया में किसी और को मालम नहीं है। या सारी दुनिया जानती है ये रहस्य। आपको क्या तलित बाबू ने बोला है और आप क्या उनसे ऊपर से पूछ कर आये है। कैसी बातें करने है आप? समझदारों की बात कीजिये। ऐसी इन्स्पेक्शिवल बात करने में अफ़वाह फैलती है और यह ठीक बात नहीं है।

If Mr. Madhu Limaye has any detailed information which can be of some help and use for investigation, he should give it either to the CBI or to the Mathew Commission which is going into the matter. If some political slants are there, if some unwritten or hidden things are there into which CBI is not going, I think the Mathew Commission can be entrusted to unearth all these matters. We want

that commission should come out with a detailed and complete report on the matter. We want a detailed analysis, a detailed report, of the events leading to this most heinous and tragic political murder of a colleague of ours.

Shri Madhu Limaye made another point. By a very strange process of logic he tried to establish who was to benefit by the murder, or by the death, of Shri L. N. Mishra. He said the opposition had absolutely no benefit out of his death. In fact, if he had survived, possibly they would have continued with renewed vigour his character assassination, right, left and the centre and made life hell for him (Interruptions) They characterised him as the sole symbol of corruption. Corruption has so much eroded the entire society that who is free from it in this country? These paragons of virtue on the other side should search their hearts and say, did they or did they not portray Shri L. N. Mishra as one person who symbolised the entire political corruption and as though the entire opposition was a paragon of virtue? Therefore, Shri Madhu Limaye by a very strange process of logic wanted to show that the opposition did not gain by his death. After all, what did we gain by his death? Shri Limaye argued "In fact, if he had lived, he would have been more useful to us," and for them probably provided a good target for character assassination and mud-slinging.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: (Bogusarai): Do not bring in these things. It is unfair to a dead person.

SHRI N. K. P. SALVE: Shyam Babu, I wish you very long and very healthy life. I respect you. We had some private dialogue in this matter. I am the last person to be profane or irreverential to Shri L. N. Mishra. I have always maintained that this sort of campaign of vilification, these irresponsible charges, as if he alone was responsible for entire political corruption, this sort of vendetta, this

sort of atmosphere that created an atmosphere of lawlessness in which this unfortunate tragedy looked inevitable.

I want to submit that this is an extremely fallacious argument by Shri Madhu Limaye. On the other hand, I submit, that the only reason why Shri L. N. Mishra met with such a tragic end, was because he was a Minister who belonged to the Congress Party and so he was chosen for a persistent attack by the opposition party for such unabashed character assassination by painting him as the embodiment of corruption. Because of continuous propaganda of this type, a feeling of hatred and bitterness was created against him, and that resulted in this. Therefore, to that extent, these people are responsible for this type of political murder.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Your law has done it, your Research and Analysis Wing.

SHRI N. K. P. SALVE: You have never been known for sense of responsibility. So, your interruption means nothing to me.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Why do you not face the people?

SHRI N. K. P. SALVE: I may inform Shri Bosu that this challenge of "go to the people" is not new to us. This was the very challenge which was given to us in 1971. We went to the people and you know what happened. We will again go to the people.

AN HON. MEMBER: What about the by-elections?

SHRI N. K. P. SALVE: Do not go by the results of a few elections or by-elections here and there. When people are faced with such economic crisis in the country, they are annoyed, and they have a right to be annoyed, and they show it in this manner. We will go to the people, and you will again come here with

[Shri N. K. P. Salve]

a microscopic minority, and you will still continue to brag in the manner that you have been doing for the last over two decades.

Be that as it may, in this debate I want to raise some very fundamental questions, which impinge on the question of the political atmosphere which has been created, an atmosphere in which political hatred, bitterness and intolerance has come about. Is not there bitterness? Is not there hatred? Is not there disrespect for law and order? Why is there manifestation of violence? Who has started it? History will some day judge. What I must submit today is that if an unstable majority is always a threat to democracy, an irresponsible frustrated Opposition is a menace and is a real threat to the survival of parliamentary democracy. That is what is happening today?

SHRI JYOTIRMOY BOSU. Follow Mujib Sahib.

SHRI N. K. P. SALVE: We do not need your advice. We have our own ideals. None of your advice matters to us. You may go to China or elsewhere and follow such advice as you think best and proper. So far as we are concerned, we cherish our ideals. We have our aims and objectives about which there is no ambiguity. It is well known and well established. We follow them, make no mistake.

The discontent of the people is sought to be harnessed for political opportunism. It is very easy to harness this sort of discontent of the people when the country is in the grip of economic peril. National calamities are not being spared by this motley crowd of political opposition even for the purpose of petty political gains. That does not matter. What matters really is whether this attitude of the Opposition of holding the majority and the country to ransom can

ever nurture and nourish the norms of parliamentary democracy. The manner in which they have worked in the winter session—and this is the crux of the matter—has seen one death and unless they improve, I have no doubt in my mind, they will be responsible for the death of parliamentary democracy. For an effective opposition there are some requirements. It needs to be responsible; it needs to be moderate; it needs to understand the requirements of parliamentary democracy.

In the end I have only one submission to make and it is that we on this side of the House are extremely concerned about the investigations and inquiry. If there is delay in the inquiry, I have no doubt in my mind that it is because of the complications involved. It was a deep-seated, deep-rotted and well-planned conspiracy to get rid of a colleague of ours. I only hope that the Home Minister will not be hustled and bullied by these people in the opposition into unnecessarily expediting the investigation. Let it be a thorough and complete inquiry and let the culprits be brought to book. Let it be shown and let it be clear to the country that so far as these people in the opposition are concerned, they and they alone are responsible for creating this sort of an ugly political atmosphere. And even if they and they alone are responsible for vitiating the political climate, they would still not improve. I have no doubt in my mind about that. It is beyond them. That is the greatest misfortune of this country. That is the greatest misfortune of our Parliamentary democracy. In 27 years we have failed to give to this country a responsible Opposition.

श्री भोगेन्द्र झा (जयनगर) . महापति महोदय, इस सवाल पर विचार विमर्श में जो रुख लिया जा रहा है उसको मैं बदलन का प्रयास करूँगा। यह जो घटना हुई है यह प्राकृतिक घटना नहीं थी। इसमें एक केन्द्रीय मंत्री श्री ललित नारायण मिश्र और दो अन्य व्यक्ति जिन में एक विद्वान

परिषद्, बिहार के सदस्य श्री ब्रज नारायण झा हैं तथा एक रेल कर्मचारी हैं उनकी हत्या हुई है। इनके अलावा 27 व्यक्ति घायल हुये हैं जिनमें दो हमारे मदन के सदस्य हैं तथा श्री राम भगत पासवान और श्री यमुना प्रसाद मडल। ये भी उनमें से थे जो इस विस्फोट के समय मंच पर थे। इतनी बड़ी यह घटना जिसमें 29-30 आदमी मरे या घायल हुये दिन दहाड़े हैं। उस मदन में हम सब अपने अपने राजनैतिक मंत्र रखते हैं। और अपने बचर पर विचार के मत बिना जैना वः म उठाते हैं। हम सब एक राय के हैं कि चाहे उस हत्या में किसी का भी हाथ रहा हो, लेकिन यह एक राजनैतिक हत्या है और किसी व्यक्तिगत विषय या दुश्मनी से यह नहीं हुआ है। उस स्थिति में हम सबको अपने अपने भी सोचना पड़ेगा, क्योंकि हम दुश्मना से कोई बदम उठाते हैं, कोई नीति अपनाते हैं ता यह खतरा हम पर भी आ जायेगा। हमारे जनतंत्र व लिये यह एक चुनौती है कि क्या हमारे देश में अपने कामों, कदमों और कृत्यों के लिये व्यक्तिगत हत्या के जर्मिये ही समाज करने का रास्ता अपनाया जायगा, या जो हमारा तरीका है उसका अपनाया जायगा। हम लिये भी समझना है कि दोनों तरफ में सदस्यों को इस बारे में कुछ मुद्दों पर एकमत होने की आवश्यकता है।

क्या यह सही नहीं है कि जिस दिन यह दुर्घटना हुई, उस दिन 400 से अधिक राइफल और पिस्तौल-धारी पुलिस के दंगे सुरक्षा के लिये वहाँ मजदूर थे? वहाँ के अफसरों के माध्यम से मजे इन बात का पता है। इसीलिये मैंने दरभंगा की गार्जनों में कहा कि दिल्ली में मेरे घर के दरवाजे पर बम फेंका गया था और हमारे अपने आदिवासी ने उन लोगों को खदेड़ दिया था; पुलिस के सिपाही मेरे यहाँ नहीं थे, इसीलिये मैं बच गया; अगर पुलिस के सिपाही वहाँ होते, तो मेरी जान भी चली जाती। वहाँ के अफसर इस बात का खडन नहीं कर सके।

क्या कांग्रेस का कोई सदस्य इस बात से इंकार कर सकता है कि इस घटना को रोकना नहीं जा सका, इसमें बिहार सरकार के खुफिया विभाग, गेनबेज के खुफिया विभाग जिनके वह मंत्री थे, और केंद्रीय सरकार के खुफिया विभाग की पूरी नाकामी और विफलता सिद्ध होती है? उस बारे में दो रायें नहीं हो सकती हैं। क्या श्री ब्रह्मानंद रेड्डी या कोई कांग्रेसी सदस्य यह कह सकते हैं कि हमारा इन्तजाम सफल रहा? अगर उनका इन्तजाम सफल नहीं रहा, और अगर वे ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं चाहते हैं, तो इन्हें इमानदारी और हिम्मत के साथ यह बात चुनन करनी चाहिये, और यह मदन उस बारे में एकमत हो, कि उस मामले में खुफिया विभाग की साफीमदी नाकामी हुई। इसकी जिम्मेदारी यहाँ के मंत्री ले, या वहाँ के मुख्य सचिव या पुलिस मंत्री ले, लेकिन उस जिम्मेदारी से वे बरी नहीं हो सकते। आखिर सुरक्षा का भार जनता पर नहीं है। अगर यह काम लोगों को दिया जाना, तो शायद वे हमें बेहतर कर सकते थे।

नहीं उठाना मुना लिया गया था, वहाँ पढ़ने की व्यवस्था थी। रेलवे एम्प्लॉय के टेलीगेशन और प्रतिनिधियों का वहाँ नहीं जान दिया गया। लेकिन जो लोग वहाँ जाना चाहते थे, या ता पूर्णतः बले उनको ले गये, या कांग्रेसजनों के सटिफिकेट के आज़ार पर ने भीतर घग गये। यद्यपि वह कांग्रेस कमेटी की बैठक नहीं थी लेकिन उनका कांग्रेसजनों ने सटिफिकेट दे दिया, वह अन्दर चला गया। ऐसे लोग भी वहाँ पहुँच गये, जो रेलवे में सँवाटेज करना चाहते हैं जो आनन्द मार्ग के प्रमुख व्यक्ति हैं। वर लोगों ने मुझ से यह बात कही। मैंने उन म सी० बी० आ० के नामने यह बयान देने के लिये कहा। और सी० बी० आ० के नामने ऐसे बयान दिये गये हैं।

मंच के पास कुछ लोग मौजूद थे, जिनको वहाँ रहने की जरूरत नहीं थी। जो लोग अब तक कांग्रेस में दुश्मन हैं और रहे हैं,

[श्री भोगेन्द्र श्र]

उन दो भी कांग्रेसजनों ने मॉर्टफिकेट दिया था। मैं यह बात इसलिये कहा रहा हूँ कि इस प्रश्न को दलबन्दी का मामला न बनाया जाये, क्योंकि यह एक हत्या का मामला नहीं है—आग भी ऐसी घटना घट सकती है।

जब यह घटना घट गई और मच पर बैठे कई लोग घायल हो गये, तो वहाँ जो 400 पुलिस के अफसर और मिपाही थे, बजाये इसके कि वे घायलों की सेवा के लिये लाकते, लोगों को बचाने वाला, उठाने वाला अफसरों का सच तबका ही भाग गया। इस घटना की तुलना तो उस लडाई से की जा सकती है जिसमें हमारे पन्द्रह जार लोगों ने दोनों हथ उठा दिये थे। वहाँ 400 राइफल वाले लोग थे सी०आई०डी० के लोग थे, बड़े बड़े अफसरों की फौज थी, लेकिन एक भी बच्चा नहीं रहा, जो घायलों को उठा सके।

मैं पूछना चाहता हूँ कि जिन सरकार ने हजारों रेल-मंचाग्रियों को अभी तक नाकरी से बाहर रखा है, क्या उनमें उन 400 लोगों में से किसी का भी मुआत्तिल किया है, जो सुरक्षा इन्तजाम के लिये जिम्मेदार थे क्या उनमें से एक को भी समगोड किया गया है। बाद में सरकार चाहे उनको इनाम दे देती, उनको भारत रत्न' पदान कर देती, लेकिन क्या इस मामले में अफसलता के लिये किसी भी कर्मचारी को, चाहे वह राज्य सरकार का हो, रेलवे सुरक्षा या हो या खुफिया विभाग का हाँ मुआत्तिल किया गया है? अगर नहीं किया गया है तो क्या यह इन्तजाम नहीं लगाया जा सकता कि सरकार इस मामले को हल्के रूप में ले रही है। इतनी बड़ी घटना कि बावजूद कोई भी घायलों का उठाने वाला उनकी सेवा करने वाला पानी पिलाने वाला या हास्पिटल ले जाने वाला नहीं रहा। मैं किसी की नीयत में नहीं जा रहा हूँ, लेकिन इस नाकामी के लिये—चाहे वह जानबूझकर हुई हो और चाहे अनजाने में हुई हो—क्या किसी को मुआत्तिल किया गया है। अगर लोकसभा सदस्यों पर आरोप करने के लिए कोई छूला जाता है, काँ

बम फेकता है या गोली चलाता है, और बाघ एंड बाई अगर उसको न पकड़े, तो क्या कोई उसके लिए जिम्मेदार ठहराया जायेगा या नहीं, क्या किसी को मुआत्तिल किया जायेगा या नहीं? इतनी बड़ी घटना के बाद भी किसी को मुआत्तिल नहीं किया गया है। जो सरकार अम्पिको और किसानों को बेवजह दंडित करने में सकोच नहीं करती है, जो उनके विरुद्ध कड़ा रुख अपनाती है और शक्ति का इस्तेमाल करती है, उसने इस मामले में अभी तक बेपरवहों का रुख अपना रखा है।

अगर सत्तारूढ़ दल यह समझता है कि एजार्नमेंट मोशन सरकार का सेन्चुर है, तो हम समझते हैं कि जिन मुद्दों का मैंने जिक्र किया है, उन पर सरकार सेंचुर के लायक है। जो सदस्य इंधर से बोले हैं जिन्होंने इस मामले को दूसरा रूप देने का प्रयास किया है, मैं उनमें सहमत नहीं हूँ। लेकिन कुछ बुनियादी मुद्दा पर हम सब को सहमत होना चाहिए। जनतन्त्र की रक्षा और विचारों को रखने की स्वतन्त्रता की रक्षा के बारे में हमारी दो रायें नहीं होनी चाहिए।

कांग्रेस के जो सदस्य बोले हैं उन्होंने बहुत निराशाजनक बाने कही है। उन्होंने ऐसा रुख अपनाया है कि जैसे कोई अचानक घटना हो गई हो, कोई आकाश में बिजली गिर गई हो। इसलिए लोगों में आशोक है, लोग उलझन में है। अखबार क्या लिखते हैं, उसको छान्न दोजिए। लेकिन लोग समझते हैं कि इस मामले में सरकार नाकाम साबित हुई है। सरकार की यह नाकामी दूसरे खतरे की घटी है।

पाकिस्तान में पहले बज्जिरे-आखम, नियाकन अनी खा, को हत्या हुई, और जो कातिल पकड़ा गया था—नीयद अकबर, उसका भी कत्ल हो गया था। पाकिस्तान न तो दुनिया को, और न अपने अखाम को, बता सका है कि उसके पहले बज्जिरे-आखम के कत्ल के पीछे किसका हाथ था। हम यह भी जानते हैं कि पाकिस्तान के दुर्भाग्य से वहाँ

जनतन्त्र का खात्मा हुआ। हम यह भी जानते हैं कि अमरीका के राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या कैसे हुई। मैं उधर जाना नहीं चाह रहा हूँ। जो कुछ सदन में कहा गया है उसी के आधार पर मैं जानना चाह रहा हूँ। जो कुछ बाहर कहा गया है मैं समझता हूँ कि उन बातों में कुछ जाने की जरूरत है लेकिन अच्छा है कि मैं उनमें न जाऊँ। सभापति जी इशारा दे रहे हैं कि मैं न जाऊँ।

18 hrs.

एक माननीय सदस्य छोड़िए ?

श्री भोगेन्द्र झा : छाड़ने का मतलब नहीं है। आप छाड़ कर बच सकते हैं, मैं नहीं बच सकता हूँ। क्योंकि यह हुआ तो हमारे यहाँ है, बम हमारे यहाँ गया, आपके यहाँ नहीं गया। इसलिये मुझे चिन्ता है इस बात की। मैं इस बात को कह रहा हूँ कि कुछ वर्षों में जो हमारे देश पर खतरा है जनतन्त्र पर भी और आजादी पर भी आगे जर्मन के बारे में देश के बाहर भी आवाजें उठाई जा रही हैं जा काम पहले भी होता था लेकिन किसी अधिकारी ने मुल कर के यह नहीं कही, अब अमेरिका के अभी के राष्ट्रपति फोर्ड ने खुल कर यह बात नहीं कही है कि हमारी सी आई ए विदेशों में अपने हित की रक्षा के लिए सरकारों के बदलने के काम को करती रहेगी। इसके पहले किसी राष्ट्रपति ने नहीं कहा था। लेकिन यह फोर्ड ने, नये राष्ट्रपति ने इसको बाजाब्ला कहा है और चिली की घटना के बाद जहा की ट्रासपोर्ट हडताल के लिए करोड़ों डालर दिए गए थे जो चिली के जनतन्त्र का खात्मा हुआ, राष्ट्रपति की हत्या हुई, उस सब को हम जानते हैं और ऐसी परिस्थिति में जब भारत सरकार ने एतराज किया था सी आई ए की गति-विधियों के बारे में और सरकारों का तबचा पलटने के बारे में तो किसिगर ने कहा कि जब कोई पकड़ा जाय तो हमें खबर दीजिएगा, हम वापस बुला लेंगे। तो ऐसी चीज खुद हमारे देश में हो रही है... (अवधान)...

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अभी तक एक भी खबर नहीं दी।

श्री भोगेन्द्र झा : इन्होंने नहीं खबर दी, खबर देने का भार आप ले लीजिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, मैं उनका साथ दे रहा हूँ और भाग हम ले लें। भारत लेने के लिए हम हैं और राज करने के लिए, उममें हिम्मत बाटाने के लिए ये हैं।

श्री भोगेन्द्र झा : चूंकि अमेरिका को खबर देनी है इसलिए वाजपेयी जी को कहा।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अच्छा, रशिया को आप खबर देने हैं ?

श्री भोगेन्द्र झा : सभापति जी, मैं कह रहा था कि अभी अमेरिका के टिफिन सेक्टरों ने यह बयान दिया है कि हमारा वेडा हिन्द महासागर में लगाता जायगा कूटनीतिक उद्देश्यों के लिए। यह नहीं कि अमेरिका को काई खतरा है, डिप्लोमैसी के लिए यानी सरकारों को पलटने के लिए या भीतर के तबचा का बाहर से मदद देने के लिए वह जायगा। अब यहाँ पर मैं यह कहना चाह रहा हूँ कि कोई भी सज्जन इस पक्ष के हो या उस पक्ष के हो, जो कुछ वातावरण पिछले कुछ महीनों में तैयार किया गया बिहार में क्या यह सरकार को या विरोध पक्ष के लोगों को पता है या नहीं कि आनन्द मार्ग नाम की एक सस्था है जिसमें बट्ट से अफसर शामिल है, पुलिस के बड़े बड़े अफसर शामिल है, रेलवे के अफसर शामिल है, विभिन्न विभागों के बड़े बड़े अफसर शामिल है जिसके प्रधान पर 6-6 हत्याओं का आरोप लगा है और वह जेल में बन्द है। उससे भयकर चीज यह है कि डेढ़ साल से वह अनशन कर रहे हैं और लोगों से कहा कि स्वस्थ भी हैं।

श्री मधु लिये : डेढ़ साल से वह कैसा पूरा क्यों नहीं हो रहा है इसके ऊपर भी कुछ कहिएगा ?

श्री भोगेन्द्र झा : एकदम सही बात है। इसीलिए तो मैं कह रहा हूँ। इसमें कोई दो राय नहीं होगी। तो वह डेढ़ साल से अनशन कर रहे हैं। और खाना छोड़े हुए है।... (व्यवधान)... यह भी सही बात है कि श्री जो एक गवाह था, एक अवधत जो उन्हीं का शिष्य था, कचहरी में उसको मंडर करने की कोशिश हुई, गोली चलाई गई, दिन दहाड़े राजधानी में कचहरी में गोली चलाई गई, आनन्दभारगियो ने गोली चलाई, जो सरकारी गवाह था अवधत जो उन्हीं का चेला था उम को मारने के लिए और उम हॉल में मैं कह देना चाहता हूँ कि बिहार सरकार के अफसरों का एक हिस्सा जो आनन्दभारगियो है, वह ईमानदारी से हो या बेईमानी में हो, यह मैं नहीं जानता, लेकिन उमका सबसे बड़ा आदमी जो अपने को भगवान कहता है, प्रोफेटर भी नहीं, भगवान के द्वारा भेजा हुआ नहीं सीधा गौड़ कहना है और जो इसके पहले उमके का एक किरानी था, एक क्लर्क था, वह जो अपने को गौड़ कहता है, जो उमको ईमानदारी से यकीन करते है, ऐसे अफसर मारे यहाँ मौजूद है, उनमें असन्तोष होगा या नहीं? जब उम उम साल के अनशन की खबर आ रही है, वह क्या खाते है वह क्या पाने, हमें पता है कि शरीर के लिए जरूरी सब चीज वह खाते है, लेकिन जब उम मान में अनशन में है तो अफसरों का वह हिस्सा जो है वे गुस्सा हांगे या नहीं? अफसरों का एक हिस्सा इसलिए नहीं कि इस पक्ष के साथ या उम पक्ष के साथ है बल्कि इसलिए कि सरकार के खिलाफ एक ऐसा हिस्सा विरोध के मूढ़ में है जो किसी नाम में सरकार का सहयोग करने के लिए तैयार नहीं है और मुझे खतरा है कि विदेशी आक्रमण भी हो तो वह हिस्सा साथ देने को तैयार नहीं होगा। इसलिए मैं ममझता हूँ कि उमको दलबन्दी का रूप हम न बनाए तो बड़ा बेहतर होगा।

एक माननीय सदस्य दलबन्दी तो प्रधान मन्त्री ने शुरू की।

श्री भोगेन्द्र झा : मैं सभी के लिए कह रहा हूँ।

मैं एक दूसरा पटलू भी कहना चाहता हूँ। जब यहाँ पर हम है चाहे इस पक्ष के हों या उस पक्ष के हो तो स्वाभाविक है कि सरकारी पक्ष एक दूसरे के बाहर नहीं जा सकता है। सरकार की रक्षा के लिए वे उठेंगे। इसी तरह विरोध पक्ष के लोग एक साथ वे आगे नहीं जा सकते हैं। लेकिन कुछ मामलों में तो हम एक है। क्या हम कहेंगे कि मदन में कोई गलत बोल देगा तो उमको जूना मारो, थप्पड़ मारो या मुक्का मारो? लेकिन नया यह सब को पता है या नहीं कि बिहार में जो कुछ आन्दोलन चला उसमें सब वे जिम्मेदार नेता ने कहा कि विधायकों को तमाचा और मुक्का मारना क्षम्य है। मैं पूछता हूँ कि अगर सबसे ऊँचा नेता किसी दल का हो, वह अगर यह कहता है किसी को तमाचा मारने के लिए तो उसको कोई शिष्य हो, ईमानदारी में भक्त हो, वह तमाचा में आगे अगर उडा भी बरसा देगा तो इसका वह लाजिराने नतीजा होगा या नहीं? इसलिए नहीं कि उमने कहा उडा मारने के लिए लेकिन अगर मैं एक सब जिम्मेदार नेता होकर रहता हूँ कि तमाचा और मुक्का मार सकते हो विधायकों को, इतना मैं खुले आम कहता हूँ तो क्या इसका अर्थ यह हो सकता है या नहीं नीचे के लोगों पर और यह बात खुले आम बिहार में हुई है, साजे अखबारों में खबर आई है। मैं इसलिए कहता हूँ कि अगर सर्वोच्च नेता इस प्रकार की बात कहे... (व्यवधान)... आप सुन तो लीजिए। मैं जिस रूप में कह रहा हूँ, मैं आग्रह करता हूँ कि दल बन्दी के रूप में इस को न लीजिये। मैं निजी तौर से कह रहा हूँ क्योंकि मेरे मामले दुर्घटनाएँ हुई हैं। मैं जानता हूँ कि लोकनाथ आजाद जो-रिजन एम०एल०ए० है 1940 में आजादी की लड़ाई में शामिल रहे है, उन को छुरे से बरकर के उन की घड़ी और सारा सामान वगैरह छीना गया, लेकिन एक निंदा का शब्द

जो लोग इस आंदोलन में शामिल हैं उन्होंने नहीं कहा। हजागों के साथ यह किया गया। कितनों की घड़ियों छीनी गईं। छुरा वगैरह सब कुछ चलाय गया। औरतो की माडी छीनी गई, मगर जो लोग आंदोलनों के समर्थन में हैं... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य जिन्होंने नौजवानों को गोली मारी गई उस के लिए भी कुछ करेंगे ?

श्री भोगेन्द्र झा : मैं जिम रूप में कह रहा हूँ कृपा कर के सुन लीजिए। मैं आप कह रहा हूँ कि मैं फिर कहना कि मैं सको दलबन्दी का रूप नहीं बनाना चाहता हूँ। हम सभी यहां जनतन्त्र की बिना पर मौजूद हैं। हम सभी लोग यहां लोगो में चुन कर आए हैं और उस की बिना पर मौजूद हैं।

श्री मधु लिमये : यह कह रहे हैं कि दोनो हिस्सों की हिंसा की बात कीजिए। सरकारी हिंसा की बात भी कटिए।

श्री भोगेन्द्र झा : एकदम सही बात है। सरकारी हिंसा में मैंने शर्क किया है।

(व्यवधान)

हम को हमारा पाव में मिर तक इस सरकार ने घायल किया है। मरा खून लिया है (व्यवधान) हमारे अलाके में 24 की हत्याएं दा माल में हुई हैं। इस सरकार की तरफ से जमींदारों ने की है। लेकिन मैं इस में नहीं जाऊंगा।

(व्यवधान)

सिर में पाव तक मेरे शरीर का कोई हिस्सा नहीं है जहां इस सरकार ने घायल न किया हो। उसके बावजूद भी हम हम सरकार को हटाना चाहेंगे लेकिन हम मीरजाफर नहीं बनना चाहेंगे चाहे इंदिरा गांधी हो चाहे कोई और हो, हम उस के लिये तैयार नहीं हैं क्योंकि एक हजार साल का इतिहास हमें कह रहा है, एक हजार साल का इतिहास चेतावनी दे रहा है कि खबरदार। जयचन्द को जायज

गुस्ता था पृथ्वीराज पर कि पृथ्वीराज हमारी लड़की को ले गया। जयचन्द अगर पृथ्वीराज को कल्प कर देता तो आज देश के लोग उस को देश द्रोही नहीं कहते। अगर उसने जो कुछ किया उस का क्या हंथ हुआ यह हम जानते हैं। पृथ्वीराज का गला काट दिया गया, जयचन्द का मारा गया। मीरजाफर को गुस्ता था मिराजदीला पर। अगर मीरजाफर मिराजदीला को मार कर नवाब बन जाता तो कांड उठने वाला देश द्रोही नहीं कहता। बहन ने नवाबा ने बहना का मारा है। लेकिन उसने नवाब बनने की चेष्टा का भते ही ईस्ट इंडिया कंपनी आए या कार्ट्रिज और उमक नतीजे के तौर पर दो सौ साल की गुनामी हमें भुगनी। इसलिए हम पूरी ताकत में लड़ना चाहते हैं और लड़ रहे हैं इस पूंजीवादी व्यवस्था का खत्म करने के लिए। जब तक पूंजीवादी व्यवस्था रहेगी अत्याचार रहेगा, बारह आन सरकार की तरफ तो चार आने दूसरी तरफ भी... (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य अगर हम आ जायगा तो ?

श्री भोगेन्द्र झा : अगर हम आ जायगा तब तो हमारा पुरखा का जो सपना था स्वर्ग का धरती पर कार्ड मूला नगा नहीं रहगा... (व्यवधान)

श्री जनेश्वर मिश्र (इलाहाबाद) मीरजाफर स्पीकम नाउ मर।

श्री भोगेन्द्र झा : आप चुप रहिये, कृपा करके चुप रहिये। मगर आप कहें कि जर्मन रूस की मदद करने हैं अगर रूस को बुलाना चाहते हैं तो हमारे पुरखा का जो सपना रहा कि धरती पर ऐसा समाज हो कि जिस में न एक भूखा हो न एक नगा हो न कोई बेकार हो वह समाज कायम हो सकता है... (व्यवधान)

श्री भोगेन्द्र झा : और बिना रूस के आए हुए अपनी ताकत में ही हम चाहते हैं कि आप की मदद से, उन की मदद से और जो तैयार

[श्री भोगेन्द्र झा]

हो उन की मदद से वगैर खून खराबी के हिन्दुस्तान में शोषण रहित समाज बनाएं। लेकिन अगर आप का यह विचार ही की बिय यको के साथ हुआ की जाय, उन की हत्या का जाय तो भी स्पष्ट रूप से कह दें। चाहता हू कि यह नहीं चल सकता है।

इस हत्या काण्ड के बाद अखबारों में जो खबर आई—मैने उन को पढा था। दिल्ली में एक सभा हुई—जय प्रकाश नारायण जी उस सभा में आये, उन्होंने उस समय शोक सभा लिये कहा, हालांकि लोक इकार कर रहे थे, लेकिन उन्होंने भत्सना की और शोक प्रस्ताव के समर्थन में लोगों को जाने के लिये कहा। यह सभा शायद 4 या 5 जनवरी को हुई थी। उसी सभा में उन्होंने कहा था कि हम पर अभियोग लगाया जायगा। यह उन्होंने पहले कहा था। उस के बाद प्रधान मन्त्री जी ने तो कहा—उस का यहा पर काफी जिक्र हुआ है—उन्होंने कहा—किस व्यक्ति ने हत्या की है, यह निर्णायक चीज नहीं है, निर्णायक चीज यह है कि किन परिस्थितियों में यह चीज हुई है किम वानावरण में यह चीज हुई है उम वानावरण का पैदा करने के लिये कीन जिनमदार है। आज जब हम यह कह सकते हैं कि किसी व्यक्तिगत दुश्मनी में हत्या नहीं हो रही है तो फिर हम वानावरण के प्रभाव में बरी नहीं हो सकते।

एक माननीय सदस्य लेकिन किसी व्यक्ति ने तो किया है।

श्री भोगेन्द्र झा : हा, किसी व्यक्ति ने किया है, लेकिन इधर में जो भाषण हुए है, उस व्यक्ति पर नहीं हुए है जिस में ऐसा किया है, उस के पीछे जो शक्ति है, उस पर भाषण हुए है। इसलिये हम इस तर्क में भाग नहीं सकते, जो वातावरण इस समय है, उस को भी ह; दोषी बनाना होगा, उस को निर्मूल करने के लिए इधर के लोग ही या उधर के लोग ही, सब को मिल कर भागे बढाना होगा। हमने जन-

तन्त्र का जो रास्ता अपनाया है, उस में इस तरह का अपराध जघन्य है, इस को दलबन्दी का आधार नहीं बनाया जा सकता।

इसलिये मैं आग्रह करना चाहता हू— जो स्थिति है जो सुरक्षा के मामले में हुआ जो इलाज के मामले में हुआ, जो लोग उन के साथ थे, जैसे रामविलास झा थे, जो बिहार के एम० एल० सी० है, उन के पी० ए० कोई गुप्ता भी साथ में थे हालांकि मेरी उन से बात नहीं हुई है, तकि बिहार में डाक्टरों की हडताल चल रही थी, इसलिये शायद ऐसा समझा गया कि दरंगा या पटना अस्पताल में ले जायेंगे तो वहा ठीक में इलाज नहीं हो सकेगा, दानापूर में हडताल नहीं है वहा ले जायें तो ठीक में इलाज हो जायगा, शायद इसी लिये उन को वहा ले जाया गया। यह ठीक है कि डा० नवाब, बिहार के एक टाप मर्जन है, वे रिटायर्ड हैं अपना प्राइवेट क्लिनिक चलाने है, उन के यहा हडताल नहीं थी, वहा ले जाने तो शायद बच जाते। मुझे मालूम हुआ है, कि ललित बाबू का घाव इतना बड़ा नहीं था, जितना वहा के डी० आई० जी० का था, जिन को डा० नवाब के क्लिनिक में लेा या गया और वे बच गये। मैं नहीं कह सकता कि उन को ऐसा क्यों नहीं मूझा। उन की नीयत या बदनीयत के बारे में मैं नहीं जानता लेकिन फिर भी यह तथ्य है कि अगर वे दर्भगा जाने और डा० नवाब की क्लिनिक में ले जाया जाता तो शायद उन की जान बच सकती थी। यह बात भी तथ्य है कि रेलवे के डाक्टरों ने जानबूझ कर या अनजान में ऐसा किया—लेकिन यह बात भी मन्थ है कि उन्होंने ऐसा बयान क्यों दिया, जिस में कि उन की जान खतरे में थी, यह भयकर नैगिजेंस नहीं तो क्या है। इस तरह के बयान देने वाले को मुझचित्त किया जाना चाहिये या नहीं किया जाना चाहिये इतनी बड़ी दुर्घटना हो जाए और उस पर कोई डाक्टर कह दे कि कोई बड़ा घाव नहीं है— यह क्या है। मरीज को आग्रवासन देने के लिये अगर कोई डाक्टर ऐसी बात कहे तो

समझ में आ सकता है, लेकिन वह तो ऐसी कोई बात नहीं थी। क्या ऐसा कोई अफसर मुद्रास्तल हुआ है, यदि नहीं हुआ तो फिर इस सरकार पर निर्दयता और बेरहमी का इल्जाम आ सकता है या नहीं। जो जुर्म को होने दे या अनजान में ही जुर्म हो जाय तो क्या सरकार उस को मुर्दिल भी नहीं कर सकती थी— यह इलाज की बात नहीं है।

सभापति जी, जो स्थिति आज पैदा की गई है, उस स्थिति में हमारे देश के लिये, हमारे जनतन्त्र के लिये अभी तक जो खतरे का घन्टी बज रही है

सभापति महोदय : अपोजीशन के 8 और कांसेस के 10 सदस्यों को अभी बोलना है, आप कब तक बैठेंगे, मेहरबानी करेंगे, अब अपने भाषण को खत्म कीजिए।

श्री भोगेन्द्र झा में 3 मिनट में खत्म कर देंगे।
सभापति महोदय आप 25 मिनट बोल चुके हैं।

श्री भोगेन्द्र झा : मैं तीन मिनट में खत्म कर रहा हूँ। मैं कह रहा था कि मांसनिनी की कार्यवाही न होने से एक सन्देश का वातावरण बना है। मैं एक बात यहाँ और कहूँ—रेल मन्त्री जब जब बिहार जाते थे वे जब रेल मन्त्री नहीं थे, तब भी वे बिहार जाते थे तो वहाँ के अनेको मिनिस्टर उन के साथ जाने थे। लेकिन इस घटना के समय बिहार का कोई भी मिनिस्टर वहाँ मौजूद नहीं था सिर्फ एक मिनिस्टर थे जो उन के भाई थे। यह बड़ी लाइन के उद्घाटन का समारोह था, यह उत्तर बिहार के लिये ही नहीं, सारे बिहार के लिये एक महत्वपूर्ण चीज थी, लेकिन उस मौके पर कोई भी मिनिस्टर वहाँ मौजूद नहीं था—यह एक अनहोनी सी बात लगती है।

सभापति जी, एक बात का हवाला और देना चाहता हूँ—जिस समस्तीपुर में रेलवे

लाइन के उद्घाटन के लिये वह वहाँ गये थे, वहाँ 56 रेलगाड़ियाँ कौंसिल हैं—कोयले के अभाव के कारण। समस्तीपुर डिब्रीजन की पूर्वोक्त रेलवे मजदूर यूनियन ने रेलवे अधिकारियों के सामने जो मांग रखी है उन में कहा गया है कोयला खदानों से कोयले का ढेर लगा हुआ है लेकिन रेल का डिब्बा न मिलने के कारण उठ नहीं रहा है, इधर कोयला न मिलने के कारण 56 गाड़ियाँ नहीं चल रही हैं। उन्होंने कहा है कि हम जिम्मा लेते हैं हम कोयला खान कर गाड़ियाँ को चलायेंगे। बिहार के कोयला खान मालिक रियल्टे दे रहे हैं कि कोयला लाने के लिये रेट मत दो अगर कोयला नहीं आयेगा तो ऐसी स्थिति पैदा हो जायगी जिस से ये कोयला खदानें हमारे पाम में आयेगी वे यह भी कहते हैं कि इदिरा जी के कैबिनेट में उन के समर्थक हैं। अगर लोगो में असन्तोष पैदा होगा तो राष्ट्रीयकरण के चलते हुए भी ये खदानें उन को मिल सकती हैं—ऐसा मालिक लोग बोलते हैं। ऐसी स्थिति में जिस दिन रेल मन्त्री उद्घाटन के लिये गये थे तब उन्होंने यह भी कहा था कि टम बड़ी लाइन से सीधे कोयला मुजफ्फरपुर तक पहुँचेगा जिस में उत्तर बिहार की समस्या का समाधान हो सकेगा। मुझे रेल मजदूरों में यह भी मालूम हुआ है कि उस दिन भरी मन्त्रा में उन्होंने यह भी कहा था कि मैं आदेश दे रहा हूँ कि जो बर्खास्त रेल मजदूर हैं जो काम पर नहीं लगाये गये हैं, उन को भी हफ्ते—दो हफ्ते में काम पर लिया जायगा। उन्होंने नाम भी दिया था जिन में एक नाम जोगी पामवान का भी था कि इन को फौरन काम पर वापस लिया जाएगा। उस मीटिंग में पूर्वोक्त रेलवे के जनरल मैनेजर—श्री चोपड़ा भी मौजूद थे। कुछ अफसरान इस बात का नहीं बोलते थे यह बात उन्होंने खुले आम पचास हजार मजदूरों के सामने कही थी, मुझ से सँकड़ो लोगो ने कहा है, मैंने इस को धरिफाई किया है—उन लोग को थोड़ा काम पर वापस लिया जायगा जिस के खिलाफ सैबोटैज का या कोई गम्भीर आरोप नहीं होगा, जिस में जोगी पामवान

[श्री भोगेन्द्र झा]

भी नाम था। लोगों के मन में शक है कि कहीं इस में रेलवे अधिकारियों का हाथ तो नहीं है, क्योंकि अभी तक किसी को वापस नहीं लिया गया है और जहाँ बम पकड़ा गया, महादेव साहू के घर में, उस के लिये अगर कोई कहता है कि सेंट्रल इंटेलिजेंस के किसी आदमी ने बम रख दिया तो यह बड़ी गैर-जिम्मेदारी की बात है। क्योंकि उस बच्चे ने बयान दिया कि वह रेलवे ट्रैक से उठा कर लाया और लडके की बड़ी बहन ने बयान दिया कि किसी ने फेंका और वह फट गया जब कि खिडकी में जाली लगी हुई है इसलिये फेंकने का प्रश्न ही नहीं है ऐसे हालत में फिर यह कहना कि पुलिस के कर्मचारी ने फेंका यह गैर-जिम्मेदारी बात है।

हा, मैं यह मानता हूँ कि अगर ललित बाबू टा० नबाब के क्लिनिक में पहुँचाये जाते तो वह बच जाते। ललित बाबू मर गए, उन की पत्नी हैं बच्चे हैं, और उन के बच्चे से मेरी बात ललित बाबू की मृत्यु के बाद हुई उन लोगों से मकान खाली कराने की नोटिस गई है। एक मिनिस्टर जो इन हारनेस मारा गया है, हम ने इस में पढ़ा। ऐसे मामलों में कुछ परम्परा अपनायी है, स्वर्गीय शास्त्री जी और मोहन कुमार मगनम के बारे में। मैं जानता हूँ, कि सरकार वह परम्परा इस मामले में निभाने जा रही है कि नहीं। जिस औरत का मूँह गल्टा है इस मामले में मैं समझता हूँ कि सरकार को ऐतान करना चाहिए कि आप क्या करने जा रहे हैं कम से कम उन को बरम निकालने की बात तो न हो। यही मैं चाहता हूँ।

SHRI B. R. BHAGAT (Shahabad):
Mr. Chairman, Sir, on the second of January this year, a terrible thing happened at Samastipur which gave to us, coming from the State of Bihar, a terrible pang of grief. But, to the country as a whole, it was one of the greatest shocks and it was expressed through the statements of the leaders of the country and Press comments.

18 23 hrs.

[SHRI ISHAQUE SAMBHOJI in the Chair]

I expected that when this matter was raised in the House by way of an adjournment motion, my friend and colleague, Shri Madhu Limaye, who is known for his great parliamentary ability and experience and his seriousness, would at least try to raise some basic and serious issue about it.

I followed his speech with great interest and I am sorry to say that he did not raise any of those basic issues. Rather, he skirted them. Instead of that, he raised issues which were trivial and which had no bearing. He has a very fine mind one of the best minds that we have in this House. But probably he has used that mind to twist facts or to gloat over hearsays or some statements by somebody and prove certain conclusions which he has already arrived at. They were pre-conceived conclusions about Government's complicity in the matter. He said that a conspiracy was hatched here in the Government and that the conspirators were involved in it.

Sir, the CBI itself is vigorously and actively pursuing the matter. I think it is one of the best deployment of men. The best resources in matters of investigation and intelligence that we have at our command are there at Samastipur. They are engaged in this matter. They have not been able to achieve a breakthrough so far. This is because these are matters about which we will be able to know only when it reaches a conclusive stage. The Government will be able to let the House know only when the matter reaches a conclusive stage. So, it is not correct to say that because they have not been able to arrive at certain conclusions within few weeks, the Government is responsible for it and that the Government does not want it. These are things which are surprising. Often times, we hear these things.

Whenever a thing is not achieved immediately, you go and attribute motives. At times, you attribute the worst kind of motives.

Now a Judicial Commission has been appointed. It has been said that there has been inordinate delay. True, the demand came from the Opposition.

SHRI MADHU LIMAYE Also from
Babuji

SHRI B R BHAGAT From both sides. Therefore, a Commission was appointed. But instead of welcoming it, you say there has been inordinate delay and Government should be censured for it.

What are the real issues? In his last sentence, he said that probably the parliamentary system may be destroyed—or something to that effect. Yes, there is danger to the very political system we have been practising in this country. My hon. friend Shri Bhogendra Jha referred to it. He is not right in saying that we on this side are weak in saying about. We are saying this with the strongest voice of our command. On this occasion it is the future of democracy of the parliamentary system in the light of the culture of violence and political assassination that is living its head in the country that should be discussed because this cult and the parliamentary system cannot go together.

In this House in the last 27 years when we have been practising this system members on both sides should draw inspiration from the giants in the parliamentary leadership. The country has been passing through very difficult times not only today. Of course today we are facing a very great economic crisis. On this occasion both the leaders of the Opposition and of the ruling party should have faced the national crisis together, created the will and strengthened it. It has been done in the past on very critical occasions.

Right in the beginning when we came here as very young men in the 1950s, a great crisis took place in the country. Refugees were pouring in

from the erstwhile East Bengal. Then the Nehru-Liquat Pact was signed. The country was charged with emotion. There were diverse opinions so much so that Dr. Shyama Prasad Mookerjee resigned from the Government and joined the opposition. But he did not create or spread hatred, suspicion or divisive forces. He could have done it because feelings were so strong, but he did not do it. Even though this matter was debated in the strongest possible language expressing viewpoints, there was no character assassination, no attributing of motives, no creation of a vicious atmosphere as if we are enemies in two camps—the Opposition and the ruling party. We are not enemies; we are part of the same process. Therefore, why when we face today an economic crisis do we find hatred, suspicion and divisive forces being created? If there is a failure on the economic front in certain policies have failed, why is the Prime Minister being attacked in a personal way? Why is a spirit of hatred being created against her? And why, of all persons, against the Prime Minister whose life is known to all? When Prime Minister Nehru was alive she did not join any office, though she could have. Nobody can say she exploited the position of her father in any way. So is it right to say that she is the fountain-source of corruption today? Is it not creating hatred against her? And why? Because the Opposition thinks that by creating hatred by demolishing the image of the leader they will be able to win a political game. This is being done. Is it fair? Is it parliamentary democracy?

SHRI NOORUL HUDA (Cachal)
There is no personal character assassination.

SHRI B R BHAGAT Then what is it? What can be more personal than this? When the late Railway Minister was attacked, Shri Madhu Limaye said, "We do not attack him. We attack the Prime Minister. She is the fountain source of corruption."
(Interruptions)

श्री मधु खिन्वत . यह मैंने नहीं कहा ।
मैंने यह कहा था कि हम व्यक्तिगत
दृष्टि की भ.वा.स प्रेरित नहीं हुए थे ।

SHRI B. R. BHAGAT: I am coming to that. I will prove it. I will put it before this august House and the country. Who is contributing to the undermining of the political system? Can this political system survive when there is no spirit of accommodation, then the Opposition and the ruling party think that they are enemies of each other. I am citing Dr. S. P. Mookerjee, a great Opposition leader, a great Indian and showing what his conduct was on those issues, when the issues were no less important. Emotionally the situation was more charged at that time. I then come to the great national crisis of 1962 when the Chinese overran certain parts I can cite the leaders Atal Bihari Vajpayee who was here at that time, Mr. A. K. Gopalan, Mr. Masani and others. What did they do? Did they launch a campaign of great hatred against the then Prime Minister? No. See the conduct of the Opposition leaders at that time of grave national crisis and compare that with the conduct of the Opposition leaders today.

PROF. MADHU DANDAVATE (Rajapur): In 1962 during the time of the Chinese aggression when the policies were attacked, I think Pandit Nehru was mercilessly attacked as far as his policies were concerned. It is not correct to say that he was not attacked. The same thing is happening today. We are attacking the policies.

SHRI B. R. BHAGAT: You attack the policies but do not create hatred against persons. The country is passing through difficult times. Every home is having great privations and difficulties. Young people are restive. If you say that the present leadership is dishonest and that it has not good intentions and has not got public good at heart, then that is creating hatred. You will create such a feeling in the

country. Young people will think of eliminating the leadership, not of removing them by vote. This is what is happening; this is what has happened in the assassination of our friend and colleague L. N. Mishra. I know that fact. He had told me thrice that whenever he would go to Bihar he said that he felt that people would murder him. I give the example. When he became the Railway Minister, for the first time he went to inaugurate some function at Dhanapur. My friend Shastri will know; he was leading an agitation. He was surprised and he got the shock of his life; he had to be rescued out and taken to a police van and he had to be escorted. A crowd surrounded him and he said: I could see the anger in their faces, if I had not been taken out, I would have been killed.

श्री महात्तर शर्मा (दुना) : अगर वे मिल लेते तो स्थिति संभल जाती। वे मिले नहीं, इसलिए मसला ज्यादा गर्म हो गया।

SHRI B. R. BHAGAT I am not saying you had done it. I am giving the second example. In the Madhubani election on the polling day, our P.C.C. President Sitaram Kesari was mobbed: he was attacked with spears and guns and it was only because the police came in time that he escaped. Otherwise, he has said openly that he would have been killed.

श्री ज. नेश्वर प्रसाद दादब (कटिहार) :
वहाँ डेमोक्रेसी की हत्या की है। मधुवनी में जाने के लिए सारी गाड़ियां बन्द कर दी थी और सारे लोगों का जाना बन्द कर दिया था और आप मधुवनी के चुनाव का उदाहरण दे रहे हैं।

SHRI B. R. BHAGAT: That is no ground for killing persons. I was saying that Sitaram Kesari was surrounded by people who were armed with spears and guns, all sorts of lethal weapons. Mr. L. N. Mishra did a lot of things for North Bihar. Particularly with regard to railways, our friend

Mr. Bhogendra Jha said just how that he did a lot of things. The opening of a big railway line is a matter for rejoicing for the local people.

He reconstructed the lines which were disrupted 26 years ago in the Kosi area. He wants to inaugurate them. At every place his meetings were disturbed and he had to be given protection. I am asking: Is this the way of protesting against policies? You can demonstrate, and in times of election you can defeat us. I am not worried. You are gloating over the fact that we lost two bye-elections. If the people do not feel that we deserve their confidence, we should not be here. But in a Parliamentary democracy one thing must be clear to everybody. The leaders on all sides have to play the game. The cult of violence and political assassination has no place in a Parliamentary democracy. For over a year at least in Bihar, violence has not only been raising its head. In fact, there has been the largest number of murders taking place in Bihar. In the district I come from, over 80 murders have taken place this year.

SHRI MADHU LIMAYE: What is the Government doing?

SHRI B. R. BHAGAT: That is a different matter. The Bihar Government's police budget is the largest ever. Rs. 4 lakhs every month is being spent on the police out of the depleted resources of Bihar. But this thing cannot be controlled by the Government alone. It may be that Bihar is going through a very difficult process. Agitation is going on. What the Prime Minister said is very right. I do not know why Shri Madhu Limaye should contradict it when she said that it is these fears which lead to such acts which are more important. Who kills, who does not, is for the CBI to find out. Shri Bhogendra Jha has rightly said that the CBI may or may

not be able to find out. We will be all happy, and the Home Minister should be jubilant and satisfied if he is able to come and tell the House that the CBI has been able to solve the mystery, but it may well be that the CBI is not able to solve the problem. It is not an unusual thing. Examples have been cited of the murder of Liaquat Ali Khan and President Kennedy. I may also add a third, the murder of Luther King, the Negro Leader. (*Interruptions*). This is creating hatred.

SHRI DINEN BHATTACHARYYA (Serampore): You are creating hatred (*Interruptions*)

SHRI B. R. BHAGAT: Nobody in the United States said that President Johnson who was the beneficiary of Kennedy's death had got Kennedy killed. We are a peculiar country. When I and the Home Minister were travelling together to attend the funeral of Shri Mishra in his village, on the 3rd January itself the editorial of *Mother Land* straightaway said that the responsibility for the murder was on the Government and on the Prime Minister. What do you say of this? Is it not creating hatred, tarnishing the Prime Minister's image in the country, making it appear that she is a diabolical person and therefore some young people may feel that she should be eliminated? Is it not encouraging political violence? Not only on the 3rd January, but from that day to at least the 20th January, for 14 or 15 days, every day the *Motherland* directly, indirectly, by innuendoes, by insinuations attacked the Prime Minister. After all this has been done, when the Prime Minister says that it is the result of the cult of violence practised by a section of the Opposition parties—she did not say all Opposition parties—our friend takes objection to it.

Mr. Limaye said that this Commission has been appointed to pre-empt a discussion in this House. Every stu-

[Shri B. R. Bhagat]
dent of parliamentary procedure and practice knows—and more so Mr. Limaya—that a discussion in the House cannot be pre-empted by the appointment of a judicial commission. I cannot believe that he is ignorant of this. He has been carried away by his partisan views about this matter. Mr. Bosu has brought out a ballistic theory of his own and said that it has been done in a particular way. It is precisely for the commission to find it out. The CBI will find out other matters. About the delay, Government was quick enough to appoint a medical board and they will bring those things to light. On a matter like this, we should not create further suspicions. It does not help anybody. If people do not like our policies, they may defeat us at the polls. If they start eliminating us physically, today it may apply to us. Tomorrow it may apply to you. Therefore, it will never serve the purpose. Therefore, we should use this occasion to focus attention on the basic facts that lead to such terrible incidents in our public life. After the assassination of the Father of the Nation in 1948, as if he had taken all the poison, this country was relatively free from the cult of violence or political assassination except for a brief period in the area from where Mr. Jyotirmoy Bosu comes where there were some very regrettable incidents.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I come from India. To say that I come from a particular part of the country is narrow parochialism.

SHRI B. R. BHAGAT: It is not. It is a parliamentary practice not to call members by name but to call them by the constituencies they come from. I am only following the correct parliamentary procedure when I say you come from West Bengal.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Then you should say Diamond Harbour.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: There has not been a single case of violence

in my constituency. The only incident of violence there was when my house was attacked by the people belonging to Mr. Bhagat's party.

SHRI B. R. BHAGAT: I know that he has encouraged them but he does not want to own them.

Now this violence has again come in a big way. I would request all the hon. Members who love democracy, who believe in the parliamentary system, who want that to reign supreme so that it is effective and it is able to solve all the problems of the country let all such people put their heads together instead of blaming each other, instead of maligning each other, instead of creating hatred and divisive spirit against each other, let all of us rise to the occasion and say that we shall not allow this cult of violence, this political assassination, to prevail in this country and that we will solve all our problems through debate, through argument, through discussions and, at the time of elections, by the vote of the people and not by physical. I am eliminating persons whom we do not like.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (खालियर)
सभापति महोदय, श्री बलि राम भगन जी ने जहां अपना भाषण समाप्त किया है, मैं वहीं से प्रारम्भ करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा है कि श्री ललित नारायण मिश्र की हत्या से रूप में, जो गम्भीर घटना घटी है वह हमें आत्म निरीक्षण के लिए प्रेरित करनी चाहिए और हमें मिल कर इस बात का प्रत्यन करना चाहिए कि भविष्य में इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति न हो। मैं उनकी इस भावना का समर्थन करता हूँ। लेकिन मिश्र जी की हत्या के नुरस्त बाद बिना राजनीति को बीच में लाए हुए उस हत्या का राजनीतिक विरोधियों को बदनाम करने के लिए प्रयुक्त करने के बजाए अगर यह भावना प्रकट की जाती और प्रधान मंत्री सभी विरोधी दलों के नेताओं को, प्रवक्ताओं को विचार विनिमय के लिए बुलाती तो शायद

पिछले डेढ़ महीने में देश में जो कुछ हो रहा है उसका रूप बदला जा सकता था और एक शोकपूर्ण घटना में से भी भविष्य के लिए लोकजत को बलशाली करने का मांगे डूबा जा सकता था।

सभापति महोदय, हममें सन्देह नहीं है कि जब मैंने बम विस्फोट की घटना की खबर सुनी तो मुझे गहरा धक्का लगा। उससे भी गहरा धक्का तब लगा जब मैंने हाजीपुर में सुना—मैं उस दिन हाजीपुर में था, बिहार में था—कि बम विस्फोट के कारण श्री ललित नारायण मिश्र हमारे बीच में से उठ गए हैं। लेकिन उसी दिन मैंने यह भी पढ़ा कि बम विस्फोट के तुरन्त बाद रेल विभाग के उम मंत्री श्री ब्रूटा सिंह ने अखबारों को बयान दिया जिस में उन्होंने कहा

"This incident showed that fascist elements have joined the Bihar agitation"

श्री राम सहाय पांडे क्या मदरलैंड भी पढ़ा है या नहीं ?

श्री छट्टा बिहारी बाजपेयी अगर माननीय सदस्य इस विवाद को फिर नीचे स्तर पर लाना चाहते हैं, तो मैं उनको तुर्की बन्कों जबाब दगा।

श्री राम सहाय पांडे आप कैसे भी जबाब दें, लेकिन बताए कि मदरलैंड पढ़ा है या नहीं।

श्री छट्टा बिहारी बाजपेयी मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मदरलैंड भारतीय जनसंघ का पत्र नहीं है। मदरलैंड का सम्पादक जो कुछ लिखता है, वह हमारे निर्देश से नहीं लिखता है। उस में बहुत सी बातें ऐसी छपी हैं, जिन्हें को पसन्द नहीं करता हूँ। मैं खुले सदन में यह बात कह रहा हूँ। मैंने उस के सम्पादक को भी कहा है कि आप जो छाप रहे हैं, उन में से बहुत सी बातें ठीक नहीं हैं। लेकिन सम्पादक स्वतंत्र है, वह मेरे निर्देश से नहीं

चलते हैं। न बदरलैंड भारतीय जनसंघ का मख-पत्र नहीं है।

श्री शंकर दयाल सिंह (चतरा) मदरलैंड के 4, 5 तारीख के पत्र में जो छपा है, क्या वह आप की मर्जी से लिखा गया है या नहीं, क्या आप उस से सहमत हैं या नहीं ?

सभापति महोदय। माननीय सदस्य श्री बाजपेयी के बाद बोलने वाले हैं। मेरी दर-रूजत है कि वह इनदरदर न करे। अपने भाषण वार्त्ता जो चाहे कह सकते हैं।

श्री भटल बिहारी बाजपेयी ये मदरलैंड की चर्चा कर रहे हैं। मैं हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड की कटिंग आप के सामने रखता हूँ। वह कांग्रेस का पत्र है अगर आप पढ़ेंगे, तो आप लज्जित होंगे। दुस्मान स्टैंडर्ड कहना है कि श्री ललित नारायण मिश्र जिस बोगी में जा रहे थे, उस की बगल में बैठे हुए लोग शराब भी पी रहे थे और मिठाइयाँ खा रहे थे।

THE DEPUTY MINISTER IN THE
MINISTRY OF HEALTH AND FA-
MILY PLANNING (SHRI A. K. M.
ISHAQUE): How do you say it is a
Congress paper? Say that Hindustan
Standard says so.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAJEE-
How do you say that Motherland is a
Jan Sangh paper?

श्री राम सहाय पांडे : यह किसी ने नहीं कहा कि मदरलैंड जनसंघ का पत्र है। मैंने पूछा है कि क्या आपने उस को पढ़ा है या नहीं। आप गर्म क्यों होते हैं ? (व्यवधान)

श्री भटल बिहारी बाजपेयी : अगर देश में कोई घटना घटे, तो समाचार पत्र उस घटना की तह में जाने की कोशिश करेंगे। उस घटना के सम्बन्ध में जितनी भी खबरें उनको मिलेंगी, वे उनको प्रकाश में लायेंगे। यह स्वतन्त्र प्रेम का एक तरीका है। उसमें

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

किसी का मतभेद हो सकता है। माननीय सदस्य 4, 5 जनवरी की बात कह रहे हैं। श्री बूटा सिंह का बयान किस तारीख का है ?

क्या कांग्रेस अध्यक्ष ने मिश्र जी की हत्या को आधार बना कर सारे बिहार आन्दोलन को, उस बिहार आन्दोलन में शामिल दलों को, और बिहार आन्दोलन के सर्वोच्च नेता, श्री जयप्रकाश नारायण, को बदनाम करने की कोशिश नहीं की ? यह हमला किस ने शुरू किया ? जब हमले का जवाब दिया जाता है, तो आप कसमसाते हैं, तब आपको आपत्ति होती है। (व्यवधान)
श्री बूटा सिंह ने क्या कहा ?

"The incident showed that fascist elements had joined the Bihar agitation"

बम-विस्फोट यह कैसे साबित हुआ ? इसका मतलब यह है कि बम-विस्फोट आन्दोलनकारियों ने किया, और आन्दोलनकारियों में फासिस्ट तत्व घुस गये हैं। मरदार बूटा सिंह ने बिना जांच किये यह पता लगा लिया। (व्यवधान)

श्री ज्योतिरंजयबसु 12 बजे कहा हागा।

MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI THE DEPUTY MINISTER IN THE BUTA SINGH) Sir, I take objection to this

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE Objection to what? Do you want to deny your statement?

SHRI BUTA SINGH On a personal explanation

I have never in this Parliament, in the last 12 years seen such a mean attack of personal nature as Shri Jyotirmoy Bosu has done to me

About the press report which Shri Vajpayee quoted, certainly, I have a

right to deny or to accept it As he was quoting—I am not interrupting him, let him quote it—I will say, if I am called upon to say, about the correctness of the report that has been published Any thing everything, can be published and it is being published every day Many things are being published which have never taken place

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE Am I to understand that he did not make that statement?

SHRI BUTA SINGH What I said was (Interruptions)

सभ, पति इहाँ बय मैं फिर से कहता हूँ कि अभी बोलने वाला का काफी नम्बर मौजूद है। आपोजीशन के लीडर भी काफी बाकी है और कांग्रेस में मंत्रान भी काफी बाकी है। मैं कोशिश करूँगा कि ज्यादा से ज्यादा मेम्बरों को एकामोडेड किया जाय। लेकिन अगर इस तरह परमैन्ल डिसकशन शुरू हो गया, या सवाल-जवाब होन लगे, तो आप अन्दाजा कीजिय कि शायद हम 12 बजे तक बैठना पड़ेगा। इसलिए मेहरबानी करके आप लोग इन्टरेशन न कीजिय।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी यह बड़े खैद का विषय है कि एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना का देश के मानस को झकझोर कर जगाने के लिए प्रयोग करने के बजाये एक प्रचार का अभियान छेड़ दिया गया। (व्यवधान) प्रधान मंत्री की पहले दिन की प्रतिक्रिया सही थी, लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष वरुणा की नहीं। उन्होंने एकदम फासिस्ट ताकतों को दोष देना शुरू कर दिया। (व्यवधान) मगर प्रधान मंत्री ने 7 तारीख को जो कुछ कहा, वह उनके पद के गरिमा के अनुकूल नहीं था। वह हत्या के तथ्य की तह में पहुँचने के लिए जांच करने वाले तंत्र को सहायक भी नहीं हो पाता।

"The P.M. Today warned the nation that Shri L. N. Mishra's murder was only "a rehearsal" for a bigged catastrophe."

क्या हत्याओं के रिहर्सल हुआ करते हैं ? क्या हत्या करने वाला व्यक्ति पकड़ा नहीं जा सकता ? क्या हत्या करने वाला कटघरे में खड़ा नहीं किया जा सकता ?

श्री राम सहाय पांडेय : यह एक विचार-धारा थी । यह व्यक्ति नहीं था, विचारधारा थी । व्यक्ति प्रतीक था ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : अब ये विचारधारा पर आ गए ।

समापति जी, भ्राल इंडिया रेडियो को देश में एक जनून का वातावरण पैदा करने के लिए प्रयुक्त किया गया । आज सरकार इस बात के लिए श्रेय लेना चाहती है कि उसने चीफ जस्टिस की अध्यक्षता में एक कमीशन बनाया है, मगर भारतीय जनमण्डल के अध्यक्ष मिस्टर अडवानी ने उसी दिन हिंसा की निन्दा करते हुए यह मांग की थी कि सारे मामले की जांच के लिए कोई हाई पावर कमीशन बनना चाहिए, जो भ्राल इंडिया रेडियो से श्री मी० एम पंडित ने जो प्रसारण किया उस में क्या कहा था

"It is obvious from the demand of the Jana Sangh Leader for a high-powered inquiry into the bomb outrage at Samastipur. He seems to be more worried about the blame coming to the parties behind the Bihar agitation rather than about the blow such an outrage is bound to strike at the root of democratic functioning."

यह सूचना मंत्रालय से सारे ब्राडकास्ट मंगा कर मैंने रक्ते हैं । एक एक ब्राडकास्ट आप देखते जाइये, लातर रि. श्री .ल पर सांछन लगाया गया है ।

19 hrs.

एक माननीय सदस्य : पंडित से झगडा कीजिए ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : पंडित से झगडा नहीं है । लेकिन भ्राल इंडिया रेडियो कोई पंडित की जायदाद नहीं है । भ्राल इंडिया रेडियो सरकारी है . (यवब न)

.. हल्की बातों पर मत आइए । जरा गम्भीरता से बात कीजिए । श्री एल० एन० मिश्र की हत्या का नाम उठा कर देश में एक हवा बनाने की कोशिश की गई । यह हवा बनाने की किसने कोशिश की ? अगर आपको मालूम है कि हत्यारा कौन है तो जांच करने की जरूरत नहीं है । अगर बिहार के आन्दोलन के समर्थक हत्यारे हैं, गिरफ्तार कर लीजिए, मुक्दमा चलाइए, फिर भी आपको अदालत में साबित करना पड़ेगा ।

मैंने इसीलिए भगत जी के भाषण की जहा समापति थी वही से शुरू किया । आज भगत जी आकर सदन में कहते हैं कि एक बड़ी घटना हो गई है, हमें आत्म-निरीक्षण करना चाहिए । कोई कांग्रेस का मेम्बर आत्म-निरीक्षण करने के लिए तैयार है ?

श्री जगन्नाथ राव जोशी (भाजापुर) . आत्मा हो तो न करे ।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : कोई तैयार नहीं है । अगर आत्म-निरीक्षण की तैयारी होती तो श्री एल० एन० मिश्र की हत्या से सब को धक्का लगना चाहिए था और इस बात के लिए बँटना चाहिए था कि इस तरह की बात कैसे हुई ? भ्राल इंडिया रेडियो, समाचारपत्र और वहा से जो खबर आई मेरे मित्र श्री मधु लिमये ने उनका उल्लेख किया है । रोज एक नई खबर समस्तीपुर से आ रही है । किसी को नहीं छोड़ा गया ।

श्री राम सहाय पांडेय : इसी सदन में उनका नाम ठीक से नहीं लिया गया । उनके

[श्री राम सहाय पांडे]

नाम का उच्चारण ठीक से नहीं किया गया। नगदनारायण मिश्रा कहते थे उनको बसु जी। यह नफरत नहीं है तो क्या है ?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: We have expressed our deep sorrow, and if these people are trying to heap up the insults on that man in order to attack us, that will only show how mean and small they could be.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, श्री भगत ने एक बात और कही। उन्होंने कहा कि श्री एल० एन० मिश्र जब बिहार जाते थे तब उन्हें अपनी सुरक्षा की चिन्ता होती थी। वहाँ एक रेलवे प्रदर्शन का भी उन्होंने हवाला दिया। क्या इस बात की जानकारी बिहार की सरकार और केन्द्र की सरकार को नहीं थी ? अगर थी तो श्री एल० एन० मिश्र की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध क्यों नहीं किया गया ? मंत्री की रक्षा की जिम्मेदारी सरकार के ऊपर है। यह ठीक है कि कोई सार्वजनिक नेता सौ प्रतिशत सुरक्षित नहीं रह सकता। जिस जनता में जाना है, लोगों में घुलना मिलना है, सार्वजनिक सभा में भाषण करना है उसके जीवन रक्षा का दायित्व केवल पुलिस पर नहीं सौंपा जा सकता। लेकिन मिश्र जी का मामला अलग था।

दिल्ली के एक श्री के० ए० लक्ष्मण प्रभु हैं जो अपने निजी तौर पर गुप्तचरी का काम करते हैं। सरकार को कई बार सूचना दे चुके हैं कि कौन टैक्स की चोरी कर रहा है, कहां वित्तीय मामलों में कितने धांधली की है। उन्होंने यह बताया कि जुलाई 1974 में उन्हें निश्चित जानकारी मिली थी कि मिश्रा जी की हत्या का षडयंत्र किया जा रहा है। इस बात की सूचना उन्होंने मिस्टर यूसुफ रहीम डी० आई० जी० सेक्योरिटी को दी थी। जुलाई के बाद अक्टूबर 1974 में मिस्टर

प्रभु ने फिर लिख कर सूचना दी कि उन्हें पता लगा है कि फिर मिश्रा जी की हत्या की साजिश की जा रही है। यह सूचना उन्होंने मिस्टर गुप्ता ऐडीशनल डी० एस० पी० सेक्योरिटी को दी। श्री गुप्ता ने एक छहबार के प्रतिनिधि से स्वीकार किया है कि हां हमारे पास यह लिखी हुई सूचना आई है मगर उन्होंने कहा कि हमने श्री प्रभु से विवरण मांगा, उन्होंने विवरण नहीं दिया। लेकिन किसी ने श्री रहीम से पूछा कि जुलाई 1974 में सूचना मिलने के बाद उन्होंने क्या कार्यवाही की ? अगर लिखा हुआ विवरण श्री प्रभु ने नहीं भेजा तो क्या श्री गुप्ता का यह काम नहीं था कि उन्हें बुलाते और उन से पता लगते कि आपके पास कहां से यह जानकारी मिली है ? यह नहीं किया गया। क्या यह भ्रसावधानी नहीं है ?

श्री मिश्रा बिहार गए। अब कहा जाता है कि बिहार के मुख्य मंत्री ते भी केन्द्र को लिखा था कि श्री मिश्रा जी के लिए यहां शंका है। अब यह भी कहा जा रहा है कि उन्होंने यह भी कहा था कि ममस्तीपुर का इलाका ऐसा है कि जहां समाज विरोधी तत्व सक्रिय रहते हैं। लेकिन क्या यह जिम्मेदारी नहीं थी बिहार सरकार की और केन्द्र सरकार की भी उनकी रक्षा का पूरा इंतजाम करती ? सभापति महोदय, मैं 2 जनवरी को

श्री इरान नन्दन मिश्र : ममस्तीपुर वैसा इलाका नहीं है, यह अपमान है ममस्तीपुर का।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : ममस्तीपुर के खिलाफ कुछ नहीं कहना चाहता हूँ। मगर यह अखबारों में आ रहा है।

रेलवे लाइन को छोटी लाइन से बड़ी लाइन में बदलने का कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम पहले से निश्चित

था। मैं समस्तीपुर स्टेशन पर गया। मैंने उस मंच को देखा। वह मंच स्टेशन के बाहर नहीं था, वह पहले प्लेटफार्म पर नहीं था, वह बीच के प्लेटफार्म पर था। वहाँ कोई भी बिना इजाजत के नहीं जा सकता था। भीतर पुलिस का कड़ा पहरा था। सेंट्रल रिजर्व पुलिस थी, बोर्डर सेक्योरिटी फ़ोर्स थी, रेलवे प्रोटेक्शन फ़ोर्स थी, सब गुप्तचर सेवाएँ वहाँ मौजूद हो गई थी। बिना इजाजत के वहाँ जाना संभव नहीं था। फिर हत्यारा मंच के पास कैसे पहुँचा? टाइम बम नहीं था। मैंने दूसरे दिन मंच को देखा। बम मंच को तोड़ कर नहीं फूटा था। मंच जैसे का तैसा था। प्रगर मंच बनाने समय टाइम बम रख दिया जाता तो मंच टूटना चाहिए था। मंच नहीं टूटा। वह बम फेका भी नहीं गया। कोई व्यक्ति जो मंच पर था या मंच के निकट था हो सकता है मेरे मित्र ज्योतिर्मय बसु हमसे मतभेद रखने हो, वह बम के बारे में ज्यादा जानकार है, मैं उतना जानकार होने का दावा नहीं करता, मेरा अग्र बम मे नाता है तो हर हर बम बम मे नाता है, और किसी बम से नाता नहीं है . . .

श्री ज्योतिर्मय बसु : इसीलिए न बैचलर रह गए।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : जो पत्रकार वहाँ मौजूद थे उनका कहना है कि उन्होंने कार्यक्रम की समाप्ति के बाद जब मिश्रा जी चलने लगे तो कोई चीज लुढ़कती हुई देखी . . .

एक माननीय सदस्य : यह कहते हैं कि लुढ़का नहीं सकते

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : यह अलग चीज है, यह जांच में पता चलेगा लेकिन कोई व्यक्ति वहाँ था, वह वहाँ कैसे पहुँचा? ऐसे व्यक्ति को वहाँ कैसे पहुँचने दिया गया? क्या यह जांच करना वहाँ के सुरक्षा अधिकारियों का काम नहीं था? यह सवाल अभी अनुसरित है।

दूसरा सवाल है कि जब वे घायल हो गये तो उसके बाद जो कुछ हुआ, वह अग्र संयोग है तो वह इस देश के दुर्भाग्य की कहानी है और यदि वह योजनाबद्ध है तो फिर सुरक्षा के प्रबन्धक, अस्पताल के अधिकारी और रेलवे का प्रशासन इस हत्या में शामिल है। अग्र हत्या की साजिश की बात कहते हैं तो क्या यह साजिश का हिस्सा था कि मिश्रा जी घायल हो गये और उन्हें रेल के सैलून में ले जाया गया

एक माननीय सदस्य : कौन ले गया ?

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : जो लोग उनके साथ थे, वे ले गये।

एक माननीय सदस्य : सुरक्षा अधिकारी नहीं ले गये।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : खबर यह है कि वे तो भाग गये। जो मंत्री जी की रक्षा के लिए गये थे, वे अपनी रक्षा के लिए वहाँ से पलायन कर गये (अव्यवधान) इतने सालों में क्या आप ने ऐसी ही पुलिस तैयार की है।

सभापति महोदय, अब इसके दो पहलू हैं—एक डाक्टरी सहायता का—डा० भल्ला वहाँ थे, कैसे थे मैं नहीं जानता। उनका मुख्य कार्यालय गोरखपुर है। किसी रेलवे के उद्घाटन में गोरखपुर डिबीजन का कोई रेलवे का चीफ़ मैडिकल अफसर था—मैं इसके शौचित्य को नहीं समझता। लेकिन वे वहाँ थे और जैसा मेरे मित्र मधु लिमये ने कहा कि गोरखपुर का मैडिकल अफसर वहाँ पहुँच गया, लेकिन बिहार का कोई मंत्री वहाँ नहीं गया, क्यों नहीं गया ?

एक माननीय सदस्य : सिवाय जगन्नाथ मिश्र के।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : वे उनके भाई थे।

एक माननीय सदस्य : विधान सभा
चल रही थी ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी: विधान सभा चलने के बाद भी आप किस तरह से सदन से गायब हो जाते हैं—हम जानते हैं। हैदराबाद में सीटिंग चलती रही और प्रधान मन्त्री जी हैदराबाद के विमान ९-१२ पर पहुँची, तमाम सदस्य उनसे मिलने के लिये चले गये। श्री मिश्रा का बड़ा बड़ा आदर और मान था, बहुत से मन्त्री तो उन के बनाये हुए थे, लेकिन उनसे कोई भी मन्त्री वहाँ उस दिन उपस्थित नहीं हुआ। अगर मिश्रा जी के पहनू को छोड़ भी दें तो वह ममारोह एक महत्वपूर्ण ममारोह था। छोटी लाइन से बड़ी लाइन में बदलना उस क्षेत्र के लिये एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था, ऐसे अवसर पर वहाँ किसी मन्त्री का उपस्थित न होना—क्या उस सयोग मात्र था।

डा० भल्ला का कहना है—“मैंने कहा था कि मैं तो फिजीशियन हूँ। क्षमा कीजिए—मैं डा० भल्ला से बात कर चुका हूँ। उन्होंने कहा मैं फिजीशियन हूँ, आप को चोट लगी है, यह सर्जन का काम है, रेनवे सर्जन यहाँ उपलब्ध हैं, मैं उन को बुला सकता हूँ, लेकिन मुझे नहीं बुलाने दिया गया। मैं पूछना चाहता हूँ—उन को किस ने रोका? मैं सवाल खड़े कर रहा हूँ जवाब चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि कमीशन में इन बातों के उत्तर निकले।

सभापति महोदय, बम विस्फोट से मिश्र जी की जान नहीं गई। जो उन से अधिक घायल थे, उचित इलाज के कारण बच गये। अगर उन का भी तुरन्त ठीक इलाज किया जाता तो मिश्र जी आज हमारे बीच में होते। लेकिन खून बहता रहा, तिल-तिल कर प्राण निकलते रहे और उन के माथी, उन के मिन पुलिस अधिकारी, सुरक्षा अधिकारी, कोई फँसला नहीं कर सके कि उन को चोट लगी है, बम विस्फोट के कारण घायल हुए हैं, उन को तुरन्त मेडिकल सहायता चाहिये। उन को दरभंगा ले जाँजा

सकता था, लेकिन नहीं ले गये। यह निर्णय किस का था कि उन को दानापुर ले जाँ जाना चाहिये।

जो मिश्र जी के समर्थक हैं, जिन में हमारे कांग्रेसी मित्र भी हैं, वे कह रहे हैं कि समस्तोपुर गाड़ी चलने में इतनी देर क्यों हुई? दुर्घटना साठे पाच बजे हुई, लेकिन गाड़ी चली—8-20 पर, केवल इजिन का मुह बदलना था। जो गाड़ी पर बैठे थे, उन्होंने बतलाया कि हम समझते थे कि गाड़ी चल रही है लेकिन वास्तव में पता चला कि गाड़ी स्टॉप कर रही है—इतनी देर क्यों हुई? इसका जवाब देह कौन है? क्या यह भी बिहार के आंदोलन में भाग लेने वालों यह साजिश है?

SHRI DEVENDRA SATPATHY (Dhenkanal) When you call Bihar a total revolution you have to take responsibility for everything that happens there including Mr L N Mishra's death

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, श्री मतपथी जी के कथन से मैं भी महमत हूँ। देश में जो कुछ हो रहा है, हमें सब की जिम्मेदारी लेनी है और देश का शासन इन लोगों के हाथ में। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि वह जिम्मेदारी भी हम को लेनी है। सभापति जी, आप घड़ी को मत देखिए—मैं इधर उधर की बात नहीं कर रहा हूँ ..

सभापति : मोहबय आप 30 मिनट ले चुके हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं इधर-उधर की बात नहीं कर रहा हूँ—

इधर-उधर की बात न कर,
बता कि कारवा क्या लुटा ?

मेरे लिये यह राजनीति का प्रश्न नहीं है, लेकिन राजनीतिक प्रश्न आपने बनाया है। मुझे दुख हुआ, जब मैं बिहार में था तब—

मैं उस मुद्दे पर धाना चाहता हूँ, आप मुझे थोड़ा समझ दें, मेरे साथ ऐसा अन्याय न करें। क्या आप ने डा० साही का वक्तव्य पढ़ा है—डा० साही कहते हैं—

"Dr U N Sahi told UNI today that Shri Mishra could have been saved had he been allowed to be examined by a team of surgeons who rushed from Darbhanga to Samastipur soon after the blast

उन्हे देखने नहीं दिया गया—

"Under what circumstances these surgeons were not allowed to examine Shri Mishra and who were those medical experts on whose advice he was allowed to be brought to Patna in a train, only God knows"

आगे डा० साही कहते हैं कि हमें कहा गया कि हम पटना स्टेशन पर पहुंचे। हम पटना स्टेशन पर पहुंचे तो हमें कहा गया कि गाडी पटना नहीं रुकेगी—यह किस का फैसला था? अगर गाडी पटना रुकी—यह किसका निर्णय था? पटना में दानापुर जाने के लिये 10-15 मिनट लगने चाहिये, लेकिन पटना में जो गाडी के आने का समय दिया गया है .

श्री झंकर बयाल सिंह : ऐसे ही बता दीजिए, समय क्यो बरबाद कर रहे हैं।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : बहुत कुछ बरबाद हुआ है, थोड़ा सा समय बरबाद हो जाय तो आप को क्यो दुख हो रहा है। दानापुर अस्पताल में उन को 11-50 पर भरती किया गया—यह खबर है। 6 मील के रास्ते में जो उमय लगा, वह एक घंटे से ज्यादा था—यह कैसे लगा ?

श्री श्याम नन्दन मिश्र : पैदल चलने में भी इससे कम समय लगेगा।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी : बिहार के मुख्य मन्त्री उस समय कहां थे? बिहार के

चीफ सैक्रेटरी समस्तीपुर नहीं गये, आई० जी० समस्तीपुर नहीं गये, यह बात कही जा चुकी है—अब रेलवे अधिकारियों का आचरण क्या है—इसको देखिए। यह समय द्, आकस्मिक घटना है या इसके पीछ कोई योजना है? यह कहना कि डाक्टरों की हड़ताल थी, इसलिये दानापुर में जाना जरूरी था—यह बात कोई झूठ नहीं रखती। मेरी डा० सिन्हा से हवाई अड्डे पर बात हुई थी। जब हमें खबर दी गई कि हम आपरेशन करने पहुंचे, तब तक देर हो चुकी थी मैं पूछता हूँ क्यो इतनी देर होने दी गई? अब आप यह कहे कि यह सारी माजिश है—बम दुर्घटना में घायल करना साजिश है, तो खन बहते—बहते आदमी मर जाये—तो यह भी साजिश का हिस्सा है। डाक्टर समय पर न देखे—यह भी साजिश है, साठे पांच घंटे तक गाडी को अटका कर रखा जाय—यह भी साजिश है—अगर वे सब साजिशें हैं तो फिर तो कोई बहुत बड़ी साजिश है। लेकिन, मभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि ये सब साजिश नहीं है—मैं जानना चाहता हूँ कि यदि साजिश है तो यह साजिश किस ने की है, यदि सयोग था या षड्यन्त्र था, तो हत्यारे पकड़े जाने चाहिये, कटघरे में खड़े किये जाने चाहिये। लोकतन्त्र और हत्या साथ नहीं चला सकते। जिस तरह से इस का प्रचार किया गया—वह भी साथ नहीं चल सकता। कुछ काग्रेसी मित्र गांधी जी की हत्या के बाद के वातावरण को दोहराना चाहते थे, लेकिन हम वार जनमानस बदला हुआ था और वह जिम तरह में बदला था, उस में भी मुझे ठेस लगी है, क्षमा करें—मैं जानता हूँ यह बात मेरे मित्रों को पसन्द नहीं आयेगी। मैं बिहार में था, मृत्यु की खबर आ गई, मैं रक्सौल की पब्लिक मीटिंग में बोल रहा था, मैंने कहा आज मैं भाषण नहीं करूंगा मिश्राजी के देहान्त का समाचार आया है हम शोक प्रकट कर के सभा समाप्त कर देंगे तो ने कहा कि नहीं, हमें भाषण सुनना है। यह वातावरण यह पसन्द नहीं रहा।

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

सभापति महोदय, यह कहना कि बिहार में क हिंसा का वातावरण था, तथ्यों के विपरीत है। मैं बिहार में दौरा कर रहा था, वहाँ कोई तनाव नहीं था। आन्दोलन की उग्रता भी बाह्य दृष्टि से कम हो गई।

श्री विभूति मिश्र : वाजपेयी जी, मोतिहारी स्टेशन पर मैंने सुना कि मिठाई बाटी गई।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, मैं बिहार में था और मुझे ताज़्जुब है कि मुझे अभी तक हत्या के षडयंत्र में क्या नहीं घसीटा गया कि अटल बिहारी वाजपेयी बिहार में क्या कर रहा था ? जरूर उसका हाथ मिश्रा जी की हत्या में होगा।

श्री विभूति मिश्र : यह जो कहते हैं कि वातावरण सही था तो उनके मरने के बाद मोतिहारी स्टेशन पर मिठाई बाटी गई यह किम वातावरण का परिचायक था ?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, बिहार का आन्दोलन मोटे तौर से कुछ छुटपुट घटनाओं को छोड़ कर शान्तिपूर्ण आन्दोलन था। श्री हमारे कांग्रेस के सदस्य हृदय पर हाथ रख कर कह दे कि क्या जयप्रकाश जी के व्यक्तित्व ने आन्दोलन का अहिंसात्मक रखने में निर्णायक योगदान नहीं किया ?

श्री विभूति मिश्र : नहीं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : सभापति जी, मेरा कहना यह है कि 4 नवम्बर को पटना में जो कुछ हुआ उसके बाद जब शान्तपूर्ण जलूस पर इंदिरा विंगेट के लोगों ने गोली चलायी तब कुछ घटना नहीं हुई। हजारों की भीड़ उत्तेजित थी, किन्तु शान्त किया ? उस दिन पता नहीं पटना में क्या

हो जाता। मगर उस दिन शान्तपूर्ण जलूस निकल गया। यह घटना तो जनवरी की है।

मेरा निवेदन है कि आप बिहार के आन्दोलन को बदनाम करने के लिये यह बात मत लाइये। उस आन्दोलन से आपका मत भ्रम हो सकता है। आप केरल में असेम्बली को भंग करने की मांग करे वह लोकतन्त्रवादी हो सकता है। बिहार में विधान सभा को भंग करने की मांग फासिस्ट हो सकती है। यह लोकतन्त्र को नापने के दो अलग गज है। और यही दुर्भाग्य है कि हमारे और आपके अलग गज हो गये, मानदंड बदल गये, मूल्यों में अन्तर आ गया। जो बात केरल में ठीक थी, बिहार में ठीक नहीं है। गुजरात में आपने विधान सभा भंग कर दी तो बिहार में वह अलोकतांत्रिक कैसे हो गई ? मगर हो गई। आन्दोलन अलोकतांत्रिक है इसलिए फासिस्ट है। फासिस्ट है तो दबा दो, कुचल दो, गोली चलाओ। अभी माननीय भगत जी कहते हैं कि मिल कर बैठना चाहिए। प्रधान मंत्री कहती है Dialogue with whom Dialogue on what basis किस से बात होगी ? जब देश पर हमला होता है तो अटल बिहारी वाजपेयी आल इंडिया मेडिकल इन्स्टीट्यूट में पडा था प्रधान मंत्री देश के सकट के समय हम को याद कर सकती हैं, अब नहीं। डायलाग विद हूम।

पाकिस्तान से बातचीत हो सकती है। शेख अब्दुल्ला के साथ समझौता हो सकता है। सौदा हो सकता है। देश में दो बज्रिरेआजम होने वाले हैं। एक श्रीमती इन्दिरा गांधी और दूसरा शेख अब्दुल्ला। एक देश में दो प्रधान मंत्री और दोनो कमिरी। बनने दीजिये। यह बातचीत हो सकती है, लेकिन हम से बात नहीं हो सकती है। प्रधान मंत्री ने यह भी कहा कि जनसभ के साथ कैसे कान्सेशंस हो

रुती है। आप जनसभ को छोड़िये। कांग्रेस समझन के साथ ही कोशिश कर लीजिये। वह आपके पुराने मित्र हैं। उनसे नहीं पटती तो भारतीय लोक दल वालों से कामेसस कर लीजिये। हमारे लिये जी पक्के समाजवादी हैं जरा इनसे पटरी बैठा लीजिये।

श्री ज्ञानेश्वर मिश्र. आपस में ही बैठा लीजिये। पटना में आपस में ही लड़ रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अब किमी के साथ डायलाग की गुजायश नहीं है। अब हमारे लिये कोई मिलन भाम नहीं है। यह देश मिलन भूमि है या नहीं? इस देश की स्वतंत्रता, इसकी रक्षा, लोकतांत्रिक आदर्श यह हमें मिल कर काम करने की प्रेरणा देने है या नहीं? क्या बिहार के आन्दोलन को आप ने जिस रंग में रंगा है उसके बाद आप कैसे कह सकते हैं कि मिलने की गुजायश है? भ्रष्टाचार का सवाल कोई व्यक्ति के विरुद्ध का सवाल नहीं है। मैं मानना हू कि जिम तरह से रोज रोज चंच चली उससे जनता में यह भावना पैदा हुई कि भ्रष्टाचार को संरक्षण दिया जा रहा है। मगर क्या यह सच नहीं है? आखिर भ्रष्टाचार के आरोप लगने के बाद अगर जांच कराने की प्रक्रिया स्वीकार कर ली जाये, एक तरीका मैं कल के त्रिभुज के बधाई देना चाहता हू, सभापति जी, आपकी पार्टी उसमें शामिल है आप भी थोड़ी सी बधाई लेने, केरल के मन्त्रिमंडल ने तय किया है अगर कोई एफिडेविट देकर 500 रु० जमा करेगा और एफिडेविट ने आरोप लगाया तो कमीशन बनेगा। मथानम कमेटी ने कहा था 10 एम०पी० एम० एल० एज० अगर मेमोरेन्डम दें तो जांच होनी चाहिए। अभी राजाजी के बाद यह 1975 है, अभी तक भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच का कोई सर्वसम्मत तरीका नहीं निकला है, कोई निश्चित तरीका नहीं निकला है। हर व्यक्ति के लिये अलग तरीका होगा? आखिर ललित बाबू के विरुद्ध आरोप लगाये गये, उनकी जांच

हुई, आप ने अज्ञात किया। और बगल के दो मंत्रियों को जाना पड़ा। मगर जो बगल में हो सकता है नई दिल्ली में क्यों नहीं हो सकता?

मैं एक बात कह कर समाप्त कर दगा। यह जांच कमीशन बनाने में इतनी देर क्यों हुई? जांच कमीशन तुरन्त बन सकता था। पांच सप्ताह का समय कुछ कम नहीं होता है। फिर एक मुझे शिकायत है कि जी टर्म्स आफ रेफरेंस है उसमें पहले टर्म्स आफ रेफरेंस के अन्त में लिखा हुआ है :
Subsequent explosion that has occurred the same day in the House of Shri Mahadeo Sahu
इसको भी जोड़ लिया है। तो और भी विस्फोट हुए हैं बिहार में। या उमी दिन का विस्फोट महत्वपूर्ण है। सरकार इम निर्णय पर कैसे पहुंची? क्या इसको टर्म्स आफ रेफरेंस में शामिल करना जरूरी था? कमीशन देख सकता था कि दूसरा जो बम विस्फोट हुआ है उसका क्या नाता है? मेरा आरोप है कि इस जांच को भी निश्चित दिशा देने की कोशिश की जा रही है कुछ रेलवे कर्मचारियों को बलि का बकरा बनाने की कोशिश की जा रही है। अगर वह दोषी है तो उन्हें कठघरे में खड़ा किया जाना चाहिए। इस टर्म्स आफ रेफरेंस में यह जो वाक्य लिखा गया है हममें कुछ सदेह पैदा होता है।

दूसरी बात यह है कि सी० बी० आर्डी० अलग जांच करेगी, मेडिकल टीम अलग जांच करेगी और यह कमीशन अलग जांच करेगा। कमीशन के पास इन्वस्टीगेशन मशीनरी कहा है? कमीशन किस तन्त्र का उपयोग करके तथ्यों का पता लगायेगा? कमीशन आफ इनक्वायरी एक्ट में इसका कोई प्राविधान नहीं है। अब सी० बी० आर्डी० की स्वतंत्र जांच क्यों चलनी चाहिए? सी० बी० आर्डी० को

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

कमीशन के निर्देशों में जांच करने के लिये अब उपस्थित किया जाना चाहिए। सभापति महोदय, समानान्तर जांच चलेगी। सी०बी०आई० अलग जांच करेगी, कमीशन और डाक्टरों की टीम अलग जांच करेगी। क्या इन जाचों को एक जगह इकट्ठा नहीं किया जा सकता? ससदीय जांच का प्रस्ताव मैंने दिया हुआ है। लेकिन सरकार की समानान्तर जाचों की बात मेरी समझ में नहीं आती।

हम चाहते हैं कि इस हत्या का उद्घाटन हो। यह एक व्यक्ति का काम है या गुट का काम है, कोई साजिश है उसका पता लगना चाहिए। मगर सभापति महोदय, यह पहली हत्या नहीं है। हेमन्त कुमार बसु की हत्या पर अभी तक पर्दा पड़ा हुआ है। भारतीय जनसच के अध्यक्ष, स्वर्गीय दीन दयालु उपाध्याय किन परिस्थितियों में मुगलसराय की रेलवे लाइन पर मरे हुए पाये गये, वह परिस्थितिया हृदय निवारक है। सी०बी०आई० ने उनकी भी जांच की। क्या यह चोर का काम था? चोर अदालत में गये और छूट गये। हत्याग कौन है, इसका पता नहीं चला। सभापति महोदय, आप ने कभी ऐसा सुना है कि चोर चोरी करने आये और जाते जाते पांच रुपये का नोट जो मरने वाला है, उसके हाथ में पकड़ा जाये। ऐसे चोर भारत के किस भाग में मिलते हैं, मैं उनसे कहीं मुलाकात करना चाहूंगा, मगर यह बात गले के नीचे उतर गई, कोई कांग्रेस का सदस्य नहीं बोला कि तथ्य का पता नहीं लगा।

श्री सभापति महोदय, हत्या केवल बम से ही होती है। श्री अनिल चोपड़ा जिन परिस्थितियों में नई दिल्ली की चाणक्यपुरी में मारा गया, वह दुर्घटना नहीं थी। ट्रक कुचल कर भाग गया। एक पुलिस आफिसर वहाँ टपक पड़ा। पुलिस आफिसर ने ट्रक का पीछा नहीं किया और आज तक पता नहीं चला कि वह ट्रक था या उस मिलिट्री ट्रक के

आवरण में कोई और था। सरकार कुछ नहीं बोली। तस्कर उसके पीछे पडे और दिल्ली में उसको मार दिया गया। अगर दुर्घटना थी, तो दुर्घटना करने वाले को पकड़ा जाना चाहिए। वह अपोपन-वे ट्रेफिक है। सभापति जी, वह स्कूटर पर जा रहा था और स्कूटर के पीछे उसके घर वालों की कार थी। मा ने अपनी आंखों से देखा कि कोई मार कर चला गया मगर मा को आज कोई पूछने वाला नहीं है। बहन ने देखा कि ट्रक इधर से आया और कुचल कर बायें को चला गया। अभी तक उसका पता नहीं चला है। क्या यह दुर्घटना है?

श्री मूरज नारायण सिंह की बिहार में हत्या हुई। मैं उसका उल्लेख नहीं करता। यह लोगों के दिल में सदेह पैदा करता है। इन सबेहों का निराकरण प्रतिपक्ष को बदनाम करने से नहीं होगा। भगत जी ने ठीक कहा कि हम अन्वनि भग ने। श्री जी की हत्या ने हमें झकझोड़ कर रख दिया है और यह विवेक के मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित कर सकती थी मगर भुद्र राजनीति ने हम दोनों को भी खो दिया। भुद्र राजनीति ने बगला देश की विजय को भी दूषित कर दिया। अब प्रधान मंत्री जी कहनी है कि हम किमी से बात नहीं करेंगे और बात करने के लिए कोई आधार नहीं है। अगर ऐसा है तो लोकतंत्र नहीं चलेगा और लोकतंत्र नहीं चलेगा तो हिंसा, हत्या, भ्राजकता से देश बच नहीं सकता है। हम फिर समझधारी के रास्ते पर वापस आये और भ्रष्टाचार की जांच के लिए निश्चित कदम उठाए और राजनीति नहीं बल्कि राष्ट्रनीति की भ्राजकता करे। आज इस बात की आवश्यकता है और अगर यह स्वयं प्रस्ताव हमारे कांग्रेसी मित्रों को इस दिशा में सोचने के लिए प्रेरित कर सकता है, तो मैं अपने मित्र श्री मन्मथ को बधाई दूंगा अन्यथा बहुमत के बल पर

अस्य अङ्गे अस्वीकार कर सकते हैं मगर जनता के हिस में उठने वाले हजारों सवालियों का जवाब नहीं दे सकते ।

श्री शंकर बखाल सिंह (बतरा) : सभापति जी, जहाँ से बाजपेयी जी ने प्रश्न। भाषण सयाप्त किया है, वही से मैं शुरू करता हूँ । समस्तीपुर बम कांड और उस में भतपूर्व रेल मंत्री श्री ललित नारायण मिश्र की हत्या भी भस्मता का प्रतीक है, नीचता का द्योतक है, फासिज्म का करिष्मा है और भ्रासुरी प्रवृत्ति का केन्द्र बिन्दु है। जो यह चाहता है कि जनतन्त्र का मुकट भोठ कर और जरा बड़ी बड़ी बातें कह कर इस की सफाई दे, इतिहास कभी भी उस को क्षमा नहीं करेगा और जिस तरह से गांधी जी का खान भभी तक उनके माथे पर चमक रहा है वैसे ही ललित बाबू का खूब भी बराबर उनके माथे पर चमकता रहेगा ।

सभापति जी, बाजपेयी जी ने बहुत सारी बातें कही हैं जिन में से एक दो बातें तो उन्होंने ऐसी कही जिन का जिम्मे मैं खुद करना चाहता था लेकिन धन्यवाद है उनको कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है। एक बात तो उन्होंने यह कही कि जिस समय समस्तीपुर में यह दुर्घटना हुई, उस समय मैं हाजीपुर में था । मतलब यह है कि समस्तीपुर हाजी पू-से नजदीक है और वहाँ पर बाजपेयी जी स्वयं उपस्थित थे । वे वहाँ क्यों थे, मैं इस पर कुछ नहीं कहना चाहता लेकिन उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि वे वहाँ पर थे ।

दूसरी बात उन्होंने यह कही कि डा० भल्ला जिनके बारे में तरह तरह की बातें कही जाती थी, उनसे उन की बड़ी भिन्नता है और उनसे उनकी बातें हुई थी । ये सारी बातें उन्होंने स्वयं कही हैं, मैं नहीं कह रहा हूँ और तीसरी बात बाजपेयी जी ने यह कही कि इस क पीछे बहुत बड़ी साजिश है। यह जो कमीशन बैठा हुआ है, आब से सारी बातें हमारे सामने आ जायेंगी लेकिन जब बाजपेयी जी हमारे सामने यह कहते हैं कि विहार में किसी

तरह का हिंसा का वातावरण उन दिनों नहीं था, तो यह बिल्कुल हास्यवद सी बात लगती है खास कर जबकि बाजपेयी जी कितक हैं, और अच्छे बक्ता हैं और सोचने समझने वाले व्यक्ति हैं । जब बम विस्फोट समस्तीपुर में हुआ, तो यह हिंसा का वातावरण नहीं था तो क्या था । इतनी बड़ी दुर्घटना हो जाए और आप कहें कि हिंसा का वातावरण नहीं था, इतना बड़ा कलक इतिहास के माथे पर लग जाए और आप कहें कि हिंसा का वातावरण नहीं था मे कहता हूँ कि हिंसा का वातावरण था और उस वातावरण में आप का बहुत बड़ हाथ है । केवल आपका ही नहीं बल्कि उन सारे दलों का हाथ है जो प्राज जय प्रकाश जी के साथ चल कर उस प्राग में हाथ सेक रहे हैं और धी डाल कर ज्वाला को प्रज्वलित कर रहे हैं । अगर यह वातावरण नहीं होता, तो यह दुर्घटना नहीं होती ।

सभापति जी, बाजपेयी जी ने तथा दूसरे विरोधी दलों के मित्रों ने एक बात और कही । श्री राम विलास झा की चर्चा बार बार की । मैं कह देना चाहता हूँ कि श्री राम विलास झा कांग्रेस के एम० एल० सी० नहीं हैं । मैं कह रहा हूँ कि वे कांग्रेस के एम० एल० सी० नहीं हैं और वे कांग्रेस प्रत्यायी के खिलफ जन सच की मदद से विजयी हुये थे । आप इस बात का पता लगा लीजिये । मैं कोई गलत व्यानो नहीं कर रहा हूँ । इसलिए जो बातें श्री बाजपेयी जी ने कही हैं, उन में एक बहुत बड़ा तथ्य झलकता है । सभापति जी इस के बारे में बहुत सारे तथ्य घ्राए हैं हमारे सामने । मैं नहीं चाहता कि इतनी बड़ी दुर्घटना जो हमारे सामने हुई है जिस से सारा, देश, सारा जनतन्त्र और सब कुछ हिल गया है, उसको राजनीति का मामला बनाया जाये प्राये त्रद कर। राजनीति का मामला कभी न बनाया जाए और बाजपेयी जी बराबर इस चीज को कहते हैं पर पता नहीं कि वे इस को हृदय से कहते हैं या जिब्बा से कहते हैं लेकिन मुझे बड़ी खुशी होगी अगर हृदय से वे इस बात को मस्यूस करें कि इसे राजनीति

का मामला न बनाया जाए किन्तु मैं जानना चाहता हूँ कि इनके बार बार दुहाई देने के बावजूद भी का। इसे राजनीति का मामला नहीं बनाया गया ? हमारे मित्र श्री प्रार० एस० पाण्डेय ने जब मदरलेड का हवाला दिया, तो वे घ्राण-बबला हो गये, पाजामे से बाहर हो गये, आपसे बाहर हो गये—महावरे बोल रहा हूँ—लेकिन 4 और 5 तारीख के मदरलेड में जो कुछ भी निकला, 4 को निकला "डू किल्ड मिश्रा" 5 तारीख को निकला, "येस, डू किल्ड मिश्रा" ? इससे क्या सिद्ध होता है।

एक भावनीय सबस्य इस में क्या लिखा है ?

श्री शंकर बहाल सिंह : मैं पढ़ने में समय बर्बाद नहीं करना चाहता हूँ। सभी लोग इसका पढ़ चुके हैं लेकिन इन सब बातों से पता लग जाता है कि इस आखबार का उद्देश्य क्या है। राजनीति का मामला आप सब लोगों ने इस को बनाया है।

श्री राम सहाय पांडे : मैं ने जो कहा था उस पर बाजपेयी जी बिगड गये थे। जब उन्होंने श्री बूटा सिंह के पत्र को पढ़ा, तब मैं ने नमू निवेदन किया था कि क्या आप ने मदरलेड के आरोप को भी पढ़ा है जो एडिटोरियल में थे और सभाचार पत्र की सुर्खी में था। जब मैं ने यह कहा था आप बिगड गये। लोक तन्त्र की परिभाषा और परिवेश को राजनीतिक रूप न दिया जाये, इस में कोई दो राय नहीं हो सकती है।

आप ने एक और अच्छी बात कही कि "मदरलेड" जनसभ का पत्र नहीं है और गो कुछ उस में लिखा है, उस सारे के मैं सहमत नहीं हूँ। आप ने उसकी सुराई की, भर्त्सना की, इस से मैं सहमत हूँ।

श्री प्रदल बिहारी बाजपेयी : ये सब मेरे मुह में रख रहे हैं (व्यथधान)।

पांडे जी अगर "मदरलेड" पढ़ने का वायदा कर लें, तो मैं मामले को छोड़ देता हूँ। (व्यथधान)...

श्री शंकर बहाल सिंह सभापति महादेव श्री मधु लिमये जी ने, श्री ज्योतिर्मय बसु जी ने और माननीय प्रदल बिहारी जी ने सभाचारपत्र के बहुत सारे हवाले दिये, लेकिन मैं इन में बहुत अधिक न जा कर, एक विचारशील पत्र का केवल एक ही वाक्य आप के सामने रखना चाहता हूँ। दिनभान एक सम्मदवार पत्र है और उस की प्रतिष्ठा भी है। उसने इसके सम्बन्ध में अपने एक सम्पादकीय में लिखा है :

जिस ने भी सार्वजनिक सभा में मंच पर अनेक निरीह लोगों पर बम फेंक कर व्यक्ति को ससार से ही हटा देने का रास्ता अपनाया है उसने बुद्धि और भाषा से ललित बाबू का सामना न कर पाने की अपनी चरम अहता को ही हिंसा का रूप दिया है। वह व्यक्ति साधारण हो या असाधारण निराशा में जजर हो या क्रोध में, अपना ही प्रतिनिधि हो या किसी दल का, विचार और उसकी लोकतंत्रीय सार्वकता की मृत्यु उसके मन में मंच पर बम फेंकने के पहले ही चुकी थी।

दूसरा पत्र है साप्ताहिक हिन्दुस्तान जिस ने अपने सम्पादकीय में लिखा है: राजकीय तिक

हत्या के तीन प्रकार देखे गए हैं। इनके अनुसार पहली सम्भावना—किसी सिर फिरे ने महज नाम कमाने के लिए इन्हे मार दिया। दूसरी सम्भावना—किसी राजनीतिक व्यक्ति या गिरोह में सामान्य राजनीतिक के प्रति इतनी भयंकर घनास्था पैदा हो चुकी थी कि उसने अपनी बात कहने का यह भातकवादी तरीका अपनाया। तीसरी सम्भावना—सामान्य राजनीति के ही किसी व्यक्ति गिरोह या दल ने ही सुनियोजित षडयन्त्र द्वारा यह हत्या इस ढंग से करवाई कि उसका उद्देश्य भी सिद्ध हो जाए और उस पर कोई शक भी न आए। जो बातें हमारे सामने कही गई हैं और ललित बाबू की हत्या के बाद से जो एक वातावरण हमारे सामने आया है वह कम दूषित नहीं है। मैं अपने मित्रों का दिल दुखाना नहीं चाहता हूँ क्योंकि वे इसे सहन नहीं कर पायेंगे। लेकिन एक बात मैं उनमें पूछना चाहता हूँ कि इसी मदन में पिछली बार जब हम शरद कालीन सत्र समाप्त करके जा रहे थे तो उस समय इसी सदन में कौन सी ऐसी बात थी जो नहीं न गई हो, डिक्शनरी का कौन सा ऐसा शब्द है जिस का प्रयोग न किया गया हो, कौन से ऐसे वाक्य थे, तीर थे जिन को भिगो भिगो कर झटल जी, ने, लिमये जो ने तथा दूसरे लोगों ने न चलाया हो। उसमें जो वातावरण दूषित हुआ उसका ही यह फल है, यही मैं कहना चाहता हूँ। हमारे विरोधी दल के भाई अभी भी जैसा श्री बलि राम जी भगत ने कहा है समझ जाए, उनको इस बात की अनुभूति हो जाए, सच्चाई उनके सामने आ जाए तो जनतन्त्र के लिए यह एक सुनहला पक्ष होगा। मुझे दुख है कि आज भी उनको यह अनुभूति नहीं हो रही है।

ललित बाबू दो जनवरी को समस्तीपुर गए थे एक बड़े काम को करने के लिए, रेलवे लाइन के उदघाटन के सिलसिले में वे बहा गए थे। स्वयं मद्रलैंड में यह निकला है कि उनसे किसी ने कहा कि साहब आप बड़ा मत जाए, खतरे की सम्भावना हो सकती है जिसके जवाब में ललित बाबू ने कहा कि जनता का काम करते करते भयर्ष मैं शहीद हो जाऊँ तो इसके लिए

भी मैं तैयार हूँ। यही हुआ। एक बहुत अच्छे काम के लिए जा कर वे शहीद हुए। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि भला होना भी कभी कभी भादमी के लिए बहुत बुरा हो जाता है। राष्ट्रपिता बापू जी की मृत्यु पर बर्नार्ड शाह ने कहा था कि बापू की शहादत इस बात का सबूत है कि बड़ा होना भी कितना बुरा है, भला होना भी कितना बुरा है। ललित बाबू की मृत्यु भी इसी बात की द्योतक है कि भला होना और काम इतना अच्छा करना भी व भी व भी कितना खतरनाक होता है।

तरह तरह की बातें हमारे सामने कही जा रही हैं। सभापति जी, आप खुद भी एक बहुत बड़े शायर हैं और शायरी के प्रशंसक हैं। इनकी तो बड़ी हालत है

हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम ये कल्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती।

ये जो चाहे कह दे सब ठीक है लेकिन हमारी जो सच्ची बात है उसको भी ये बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। आज मुझे इस बात पर खूशी है कि शुरू से लेकर अन्त तक जितने लोग बोले हैं केवल भाषण के लिए बोले हैं, कोई तथ्य की बात उन्होंने नहीं कही है। एक भी बात उभर कर सामने नहीं आई है। मैं यह इसलिए कह रहा हूँ कि ये लोग अपने को साफ और सुथर साबित करना चाहते हैं। मैं यह कहना चाहता हूँ कि इनका बहुत बड़ा हाथ इस कांड में है। मैं किसी का नाम नहीं ले रहा हूँ। इसलिए हाथ है कि इन्होंने वातावरण को दूषित करने में, हमारे जनतन्त्र को कलकित करने में, हमारी ससदीय पद्धति को कमजोर बनाने में, हमारे नेता पर आरोप लगाने में तथा स्वर्गीय श्री ललित नारायण मिश्र का चरित्र हनन करने में कोई भी कसर उठा नहीं रखी। पिछली बार जब यहाँ तरह तरह की बातें कही जा रही थी तब अध्यक्ष महोदय ने बार बार स्वयं इनको कहा था कि आप इस तरह की बातें कहना छोड़ दें लेकिन ये छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुए। बेधर्मी को उससे भी बड़ी हद कल हमारे सामने आई जब इन्होंने भारतीय परम्परा का भी त्याग कर दिया। यहाँ शोक

[श्री शंकर दयाल सिंह]

प्रस्ताव पारित किया जा रहा था। उस समय कुछ विरोधी दलों के सदस्यों ने जिस तरह का असहोमनीय आचरण किया, असहोमनीय आचरण का परिचय दिया उससे इनको शर्म से डूब कर मर जाना चाहिए। उस घटना को जब कभी भी ससदीय इतिहास में लिखा जायगा तो कोई भी व्यक्ति उनको पढ़कर इनको क्षमा नहीं करेगा, जिन लोगों ने इस तरह का असहोमनीय कार्य किया उनके नाम पर आने वाली सतति बूक देगी।

अन्त में मैं अपनी ओर से कुछ मुझाव गृह मंत्री जी के सामने रखना चाहता हूँ। सबसे पहले मैं यह चाहता हूँ कि इस वीभत्स और जघन्य घटना के पीछे जिस किसी व्यक्ति या दल का हाथ हो उसे खोज निकाला जाए।

दूसरे विरोधी दलों के लोग बार बार यह कहते हैं कि तथ्यों को छिपाया जा रहा है। मैं उनसे भी अपील करना चाहता हूँ कि अगर उनके पास तथ्यों की जानकारी है और इसमें उनका कुछ हाथ है तो वे भी सामने आएँ और तथ्यों को सामने रखें।

तीसरे मध्य आयु के जाच कार्य को जल्दी से जल्दी पूरा किया जाय, सब तरह की मदद उसे पहुँचाई जाय।

चौथे, गांधी जी की हत्या में जिन तरह एक दल विशेष का हाथ था उस तरह से यदि इस इश्या में भी है, किसी दल विशेष का हाथ है उस पर बैन लगना चाहिए।

पाचवें दश में कुछ दिनों में हम तरह की धिनीनी राजनीतिक प्रवृत्त चर गयी है तथा हमारे सामाजिक वातावरण का दूषित किया जा रहा है और इस प्रवृत्ति को मरकार कड़ाई के साथ रोकें।

छठे, जैमा वाजपेयी जी ने कहा है मैं उन की इस बात की तसदी करता हूँ। समस्तीपुर से लेकर दानापुर की दूरी भुयिकल से तीन सवालीन पंटे की है जबकि गाडी आठ साठे अठ

घटे में बहा पहुँची। इसकी सबसे ज्यादा कड़ाई से जाच होनी चाहिए कि क्यों इस तरह से हुआ। यह भी इलजाम लगाया जाता है और हर व्यक्ति की जवान पर यह बात है उनकी जो ललित बाबू के साथ मच पर या किनारे खड़े थे, जो सभा में सम्मिलित थे कि अगर मेडीकल एंड उनको समय पर मिल जाती तो उनकी जान बच सकती थी। इन लोगों में डी० आर० जी० हैं, कपिल देव सिंह एम० एल० ए० है, राममगत पासवान है, यमुन प्रसाद जी मडल है जो एम० पी० है। इन लोगों के सामने कम खतरा उत्पन्न नहीं हुआ और कम चोटे इन्हें नहीं लगी थी। लेकिन इन सभी की जाने इस लए बच गई कि समय पर मेडीकल एंड इनको मिल गई। इस वास्ते यह जाच सख्ती के साथ होनी चाहिए कि गाड़ी पहुँचने में इतनी देर क्यों हुई, मेडीकल एंड उनको समय पर क्यों नहीं दी गई, किसी ने अवरोध पहुँचाया रागते में तो उसको भी सामने लाया जाय, उसको भी प्रकट किया जाए।

आखिरी बान प्रब मैं कहना चाहता हूँ। श्री भोपेन्द्र झा ने बताया है कि उनके परिवार के लोगों को यह नोटिस दिया गया है कि मकान खाली कर दो। यह सवाल राजनीति का सवाल नहीं है, मानवता का है। राजनीति की दुनिया में विरोधी दल चाहे हमसे भी नीचे गिर गया हो लेकिन मानवता का इतिहास में समझना है कि इसमें कलकित और जर्जरित होगा। इसलिए उनके परिवार को, उनकी विधवा पत्नी को वे सारी सहूलियत और सहायता मिलनी चाहिए जो मिल सकती है क्योंकि ललित बाबू ड्यूटी पर थे, ड्यूटी पर सहोदर हुये, काम करते करते शहीद हुए। इन सब बातों को सरकार को मद्देनजर रखना चाहिए।

अन्त में मैं अपने विरोधी दलों के विरुद्ध से अपील करना चाहता हूँ कि वे स्वस्थ वातावरण बनाने में योगदान करें, क्योंकि जिस तरह की प्रवृत्तियाँ देश में उभर रही हैं, जिस का वातावरण पैदा हो रहा है, तोड़फोड़ की मनो-

वृत्ति बढ़ती जा रही है, एक दूसरे के प्रति वैमनस्व बढ़ रहा है, संसदीय लोकतन्त्र का पाया कमजोर हो रहा है, उससे देश का भविष्य ही भ्रष्टाकार-मय कर रहे हैं इसलिए मेरी उनसे अपील है कि वे राजनीति के छोटे चक्कर में न फँस कर अपने को ऊंचा उठाएँ तभी देश का कल्याण होगा ।

इन शब्दों के साथ मैं कहना चाहता हूँ कि जो काम रोको प्रस्ताव उन्होंने रखा है इसका कोई औचित्य नहीं है ।

यह तो उन का एक तरीका है कि हर बात में झूठगा लगाओ । वे च हते हैं कि जांच भी ठीक ढंग से न हो । इस लिए वे कह रहे हैं : रोको । वे यह नहीं कह रहे कि बढ़ाओ । हम चाहते हैं कि काम रोको नही, काम को आगे बढ़ाओ ।

इम लिए मे श्री मधु लिमये से प्रार्थना करूंगा कि अभी जबत हूँ, वह समझदारी में काम ले और अपने काम-रोको प्रस्ताव को खुद वापिस ले लें ।

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam):
Mr. Chairman, I rise to support the adjournment motion moved by Shri Madhu Limaye. All the speakers, either on this side or that side, have condemned the gruesome and dastardly act committed on the 2nd January. It has been committed with a savagery which does not bring any credit to democratic set up. In a democracy, decisions are taken by discussion and not by applying violence or through bomb-shell.

The speaker who preceded me, Shri Shankar Dayal Singh, appealed to the opposition to cooperate with them in this matter by saying that this should not be viewed from the narrow political viewpoint. The same appeal I would make to him and to all others, that this should be taken above narrow party lines. Because, there is internal politics in that side also. Now, instead of tracking down the real culprits, they are dragging in scapegoats;

instead of unravelling the mystery, they are trying to throw an air of suspicion, an air of hatred against the opposition.

While discussing the adjournment motion they drag in the Bihar movement, they drag in the name of Shri Jayaprakash Narayan and they drag in the speeches made in this House itself. The last speaker made a reference to the speeches made by us in the House in the winter session. I cannot understand how we can be taken to task for our speeches and then they can connect our speeches with the Samastipur incident. That means the opposition members cannot make any speeches here, they cannot make any demands here. The only thing we wanted in the last session was a parliamentary probe into the whole affair of the granting of licences in the Pondicherry case. While that demand was not conceded, now that is taken as a scapegoat for the murder that was committed at Samastipur.

I do not want to go into the entire ambit of the case. The adjournment motion is confined to two things—the total failure of the Government in giving security to Shri L. N. Mishra and the inordinate delay in the setting up of the enquiry commission. Even the last speaker, while admonishing all others ended up by saying that there has been inordinate delay in providing medical attention to Shri L. N. Mishra and the train which should have taken only three hours actually took eight hours. Even he has come round in this circle and joined the opposition in making this charge.

The first charge about security lapse is a very serious one. To put it more plainly, there has been indifference on the part of the State and Central Governments in providing security during the visit of Shri L. N. Mishra for the opening of the Samastipur line.

[Shri Sezhiyan]

The *Times of India* has brought it out very clearly. Its Special Correspondent has stated on January 13—

"It has also been found that the state government both at the political and official levels, was conspicuously indifferent towards Mr Mishra and the function apart from being an important Union Cabinet Minister Mr Mishra had a unique political stature in Bihar which entitled him to special care of the state government. CBI detectives have arrested

This is what the CBI officers had found, namely that the State Government had shown indifference to the visit of Shri Mishra. They also said—

'CBI officials argue that absence on such a large-scale cannot be explained away as a mere coincidence'

The Chief Minister, the IG and the Chief Secretary as also all the Ministers, except his own brother, had not come to that function. The serious indifference cannot be explained away even by the CBI officials who went into that

It says further—

"It depends the mystery still further why none of the dignitaries of the state government or political leaders has visited this place after the death of Mr Mishra'

Even after the death of Shri Mishra none of them rushed to the place where a bomb explosion injured many

The report of the *Times of India* correspondent, after meeting the CBI officials who went to work in Samastipur, writing from Samastipur itself says—

"Although it is beyond the scope of the CBI investigations to establish negligence on the part of the state government or the local railway authorities or to point out flagrant violation of security norms by the po-

lice, yet its detectives can hardly ignore these events'

Therefore, the indifference shown by the State Government at the political and the official level is a thing which should be noted. When a full inquiry takes place it is a thing that should be noted by the Government here and the Inquiry Commission there.

While we have been very much agitated about the indifference shown by the State Government in the matter of security it has been stated in the *Hindustan Times*—

Similarly they,

that is the CBI

the indefinite delay in giving medical aid to the Railway Minister after the blast was due to the criminal negligence on the part of a top divisional NE official pursuing certain grievances against the late Mr I N Mishra. The same official was also responsible for unduly delaying the departure of the special train carrying Mr Mishra to Patna for the treatment of blast injuries'

Therefore while the political leaders on the other side try to pin the blame on the Opposition the CBI officials who went into the question give a different version as per the reports given by the newspapers.

Whatever may be the accusation that can be made against any other newspaper, they cannot do it against *Blitz*. What is the conclusion of *Blitz Blitz*, writing on 18th January, has stated.—

'Whoever by the men and their affiliations responsible for what was described as a "dress rehearsal" by the Prime Minister, Lalit Babu would not have died but for the ineptitude of the Darbhanga district authorities, the inefficiency of the Railway doctor on the spot, and, above all the cynical indifference of the Ghafoor outfit in Patna.

DIG Prasad, who was more seriously wounded in the explosion is happily progressing in a local hospital. If the authorities on the spot and elsewhere had not decided on the nocturnal journey to Danapur, and deem, Lalit Babu might have survived."

That means it is more the indifference and the utter ineptitude shown by the local authorities and the State Government officials that has caused the death of the late Lalit Narayan Mishra.

We are intrigued by the various reports that came in the newspapers and over the radio. It had been said that doctors examined Shri Mishra and found the wounds only skin deep at first. How then it developed into a catastrophic wound is to be explained. What was given out by the radio at least was not such a gruesome picture.

It gave a very colourful picture of the function that took place. I quote:

All India Radio in its national news bulletins at 2 p.m. and 2.10 p.m. in English and Hindi on January 2 gave a graphic account of the function. It also gave a portion of Mr Mishra's inaugural speech. AIR news readers surprised many here when they announced that the first broad gauge line train had left Samastipur for Muzaffarpur after Mr Mishra had performed 'puja' of the engine named 'Bhawani' and given the green signal.

The AIR news bulletins at 2 p.m. and 2.10 p.m. in English and Hindi reported that the function went well. It also gave a portion of Mr Mishra's speech. It reported that Mr Mishra performed "puja", did the "arti" and gave a green signal and the train left Samastipur for Muzaffarpur. All these narrations were given in the AIR news bulletins at 2 O'Clock whereas Mr Mishra reached Samastipur only at 5.10 p.m. This is the unreal situation in which the All India Radio exists.

Whatever does not happen is reported on the radio. They reported what had not happened. This is the unreality not happened. This is the unreality in which the AIR is functioning.

The CBI has not so far been able to unravel the mystery. In some of the newspapers I find they have propounded six theories. There are six systems of Hindu philosophy. I do not know how six systems have encroached into the CBI philosophy also. But the truth of the matter is that they have not unravelled the mystery.

Sometimes, when I hear persons making speeches from the other side, it looks as if they know who are the culprits and who are the persons who have been instigating all these things, and, at other times, it looks as if they do not know anything. This is the dual position that they have assumed. At one point the CBI and others do not know how the crime has been committed and at the other point they want to put the blame on some body. They try to find some scapegoat or other.

In this situation, our chief worry is this. There has been inordinate delay in setting up the Inquiry Commission. As rightly pointed out by Shri Vajpayee when Mr L. K. Advani demanded the setting up of an Inquiry Commission, he was accused of rushing in for such an inquiry just to hide the complicity of his own party in the crime. Now, at least, the Government has come forward to set up the Inquiry Commission. I welcome the decision to set up the Inquiry Commission. But it has been done in a very peculiar way.

I quote from the *Times of India* dated February 6. After reporting high level probe into Mishra's murder, it says—

"In purely political terms the appointment of the commission is a shrewd move. It will blunt the Op-

[Shri Sezhayan]

position charge that the Government has something to hide a charge which the Opposition intended to press vigorously during the budget session of Parliament, beginning on February 17."

Whatever may be the strategy of the Opposition, at least, in the coming session, the expected move that will be made by the Opposition has moved the Government to set up the Inquiry Commission. The *Times of India* says:

"In purely political terms, the appointment of the Commission is a shrewd move"

Instead of showing all their shrewdness against opposition, why don't they show shrewdness in finding the real culprits behind this crime? They are not able to do that. But the Opposition is being taken to task

There is another news report in the *Hindustan Times* dated February 6, which says

"The decision to set up the Commission was taken at a hurriedly summoned meeting of the Union Cabinet at which the Prime Minister presided"

The incident took place on January 2 and they are appointing the Commission on 6th February, after 35 days! For that, the paper says, 'at a hurriedly summoned Cabinet meeting, they took the decision'. If they had really shown the hurry in trying to set up the Commission much earlier, at least something could have been done. Why we say this is because we are very much afraid that much of the evidences would have been lost. Those who belong to that area itself, some of the Bihar Congress members who sent on February 5 a memorandum to the Prime Minister asking for an early settlement of that because they were afraid that some of the evidences would be lost if more time was allowed. Therefore, it is not a suspicion on our part; it was a suspicion on the part of the Congress members themselves that, if more time was

allowed, many of the important evidences would be lost. The conclusion is that, by the time already allowed, much of the evidence would have been lost. Therefore, we press this Adjournment Motion on these two specific issues, namely, there has been an indifference on the part of the Government in giving security when Mr. Mishra visited Samastipur and there has been an inordinate delay in setting up the Commission. Somebody here has demanded that there should be a Parliamentary probe. We demanded the same thing earlier also, we wanted a Parliamentary probe into the affairs of the licence deal. Here a murder has been committed, and the Congress members themselves, those who spoke from the other side, have pointed out that there had been very many delays which could not be explained. Though we cannot act as the detectives, we can judge for ourselves how the Government has been very indifferent, how the security system in our country works, whether we are able to give protection not only to the Ministers but also to the Members of Parliament and to the Parliament itself. If this is the way in which the Government is behaving, it will be the last day for the Parliamentary democracy in this country. Therefore, more than anybody else, those who spoke from the other side should have been the first to demand a Parliamentary probe. After all, when a Parliamentary probe is instituted, it is not as if only the representatives of the Opposition parties would be there; the majority of the representatives would be from that side. Therefore, the hon. Minister of Home Affairs should gladly accept a Parliamentary probe into the entire affairs, how indifferent was the security arrangement, how inadequate were the arrangements made both by the Central Government and by the State Government, how delayed has been the setting up of a Commission under the Commission of Inquiry Act. Unless these things are brought out, we cannot avoid such happenings in

the future. When I say this, some members may rise and say, 'Oh! You are planning for another dastardly murder'. Even for talking like this, I may be taken to task. But what I want to point out is that the entire system is indifferent, inept, detrimental to the functioning of Parliamentary democracy in this country. They seem to be more interested in finding scape-goats, in putting the blame on the Opposition for their own failures, for their own indifference; they do not have any answer to give to us.

I would say that heinous was the crime of the murder of Shri L. N. Mishra, but more heinous has been the crime of delay—the indifference shown to his security and also the inordinate delay in giving him medical attention. Those who perpetrated the heinous murder should be punished and also those who are found responsible for the inadequate security and for the inordinate delay in giving treatment to Mr L. N. Mishra should be singled out and should be given a very deterrent punishment. They cannot escape justice and the Commission of Inquiry.

Therefore, I once again appeal to the House and appeal to the Members of the other side also and just as they asked us to come out of the narrow politics, I would appeal to them to come out of narrow political confines and accept the motion moved by Shri Madhu Limaye.

THE MINISTER OF WORKS AND HOUSING AND PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): I was not here at that time. A statement is said to have been made in the House that a notice to quit was given to the family of the late Shri L. N. Mishra.

I would like to say that I got it confirmed from the Ministry that no notice has been given. I got it rechecked and I am in a position to state categorically that no such notice has been given by the Ministry of Works

& Housing. To make it doubly sure, I also just now talked to Shri Vijay Kumar Mishra son of late Shri Mishra and he has also confirmed that no such notice was received. I would like to add that we have the highest regard and respect for the late Shri L. N. Mishra and his family and we do want to make them comfortable.

सभापति महोदय : भ्रम श्री हरि किशोर सिंह जी केबो लने का नम्बर है, लेकिन पराशर जी ने मुझे चिट्ठी लिखी है कि उन की कुछ जाति मजबूरी है, वह पहले बोलना चाहते हैं, लिहाजा मैं उन को बोलने की परमीशन दे रहा हूँ। श्री पराशर ।

प्रो० नारायण चन्द्र पराशर (हमीर पुर) : गभापति महोदय, मेरे लिये श्री मिश्र जी की शहादत के बाद यहाँ बोलना ऐसा ही लगता है जैसे एक अजीम-इस्ती के बारे में किसी तुच्छ व्यक्ति को कुछ कहना पड़े। मैं चाहता हूँ, दिल चाहता है, विभाग चाहता है कि इस मौजू को बहस के दायरे से बाहर रखा जाता और हम उस महान व्यक्ति के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते और वह इज्जत, वह सराहना उन्हें दे पाते जिस के लिये वह कदम बढ़ाते थे, जिस के लिये वह मजबूती से चलते थे। ललित बाबू ने गाड़ी के पहिये को तेज करने के लिये अपना खून दिया; जिन्दगी भर तो पसीना दिया और जब जरूरत पड़ी तो खून भी दिया। इसलिये नहीं दिया कि वे समस्तीपुर में अपने किसी निजी काम के लिये गये थे, इस लिये नहीं दिया कि वहाँ कोई राजनीतिक फ़ंक्शन था, बल्कि इस लिये कि विकास के मार्ग में एक चरण और आगे बढ़ाना था, समस्तीपुर को दिल्ली से मिलाना था। उन का सपना था कि श्रीनगर से केरल तक और पोरबन्दर से नागालैंड तक जब आप गाड़ी से देश को एक नहीं कर सकते तो देश की एकता को ज्यादा मजबूत नहीं रखा जा सकता। जब तक देश में गाड़ी के जरिये एक भादमी पश्चिम से पूर्व तक और उत्तर से दक्षिण तक नहीं पहुँच सकता तो देश को ज्यादा देर तक इकट्ठा नहीं रखा जा सकता। इस

[प्रो० नारायण चन्द्र पराशर]

स्वप्न को साकार करने के लिये वह महान व्यक्ति शहीद हुआ।

उन को किन-किन कठिनाइयों से गुजरना पड़ा है—यह तो हम लोग जो उन के महयोगो थे या जो जेल मजालय की समितियों में सम्मिलित हैं, वे जानते हैं। जितनी कठिनाइयों उन के सम्मने में थी, लेकिन वह हर ग्लाइड में जूझने के आदि थे, जो बात कहते थे, उस को पूरा कर के दिखलाने थे। एक ऐम कृतसकल्प व्यक्ति के लिये जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम है।

जब ममस्तीपुर जाने में पहले दरभंगा के हवाई अड्डे पर उन को कहा गया कि आप को आज बम से मार दिया जायगा, तो उन्होंने कहा कि लोगो की सेवा में मरने में आनन्द क्या है? यह अग्रद्वार की रिपोर्ट है, मैं वहाँ मौजूद नहीं था, लेकिन जब यह कहा गया कि आप की जिन्दगी का खतरा है वहाँ विस्फोट हो न वाला है—तब उन्होंने यह आवाहन किया। मैंने ऐम व्यक्ति के जो विकास के अग्रदूत बन कर अपनी जान खतरे में डालने? मिश्रजी यही आगे नहीं बढ़े, आगे कई जगहों पर इसी तरह से आगे बढ़ने का उन्होंने प्रण किया और उस को निभाया। एक बहुत ही रहस्यपूर्ण वातावरण में घृणा के वातावरण में वह व्यक्ति हम में जुदा हुआ, इस का हमें खेद है।

बहुत सी बातें यहाँ पर कही गई हैं। मैंने जिन्होंने यहाँ कहा है और जिन्होंने नहीं कहा है—क्या आप सब का यह फर्ज नहीं बन जाता कि आज अपने दिल को सचें कर, टटोलें। एन्टनी न ब्रूम्स के बारे में जो कहा था—क्या उस मृत्यु के यहाँ नहीं दोहराया गया? उन्होंने कहा था—इन्जाम लगाये जाने थे, लेकिन क्या बात सच थी? बात दरभंगल यह थी कि जिस काम को लेकर वह आगे बढ़ना चाहते थे, उसमें हकाबट डालने वालों की परवाह नहीं करते थे। ऐम सम्मसदान्सेज में, ऐस वातावरण में वे आगे बढ़े, यह उन का कुसूर था कि फ्रील्ड में, क्षेत्र में जाने से वह घबराते नहीं थे, बड़े से बड़े खतरे

का सामना करने के लिये वह आगे बढ़ते थे—आज उन की इस बात की सराहना होनी चाहिये। उन का मार्ग वही मार्ग था—लिकन ने संयुक्त राज्य अमरीका को इकट्ठा करने के लिये अपने प्राणों की आहति दी। जब 16 सदन स्टेट्स जन्वी रियासत, ने रगभेद की नीति पर मिबिल वार शुरू कर दी, तो भी वह उठे गये, उस की एकता के लिये अपना खून दिया। लेकिन के भाई को फतमी के तटने तार पर चढ़ा दिया गया, तब उस ने काम खाई कि अपने भाई के खून से मैं रूस के भाग्य के तारीकी के धब्बे को धोना चाहता हूँ और उन्होंने धो दिया।

आज जरूरत इस बात की है कि हमारे देश पर जो तारी 5 बादल छा रहे हैं, जो तारी 5 धब्बे लगे हुए हैं उन को दूर करने की कोशिश करें और आपमें में उलझने के बजाय उन हालात का जायजा ले कि किन हालात में उस आदमी को हम से जदा हाना पडा, जिस के बारे में आप कहते हैं कि वह मजबूत धरादा का आदमी था। पालियामेंट ने कल उन का ट्रिब्यून पेश किया, कांग्रेस पार्टी ने पहले किया, उन को राष्ट्रीय शहीद कहा, लेकिन कहने में ही कुछ नहीं आता है, हम को यह देखना चाहिये कि हम किस मार्ग पर चल रहे हैं। हमारे विरोधी दोस्त कहते हैं कि हम को राजनीति में नहीं पडना चाहिये लेकिन जब आप यह कहते हैं कि म. री. मंचरं अपनी ड्यूटी को नहीं निभाये, पुलिस, एन. स कहते हैं कि अर्न्त. ड्यूटी को नहीं निभाय डाक्टरों में कहते हैं कि अपनी ड्यूटी को नहीं निभाये, जब कोई व्यक्ति ऐसा कहे कि देश के मिबिल सर्वेन्ट्स, आप अपने कार्यभार को मत निभाओ तो यह जरा सोचने की बात है। हम यह मान ले कि सरकारी कर्मचारी आप की बात को मान कर अपना काम न करें या ममस्तीपुर में जिन्होंने काम नहीं किया, डाक्टरों ने काम नहीं किया, पुलिस फोर्स ने अपना काम नहीं किया—तो ऐसी स्थिति में आप उन की निन्दा कैसे कर सकते हैं? एक ही बात में दो तरह की विचारधारायें नहीं फैलाई जा

सकती। आज मेरी आप से अपील है—जो कुछ हुआ है उग को ठीक करने पर लाने के लिये अपने आप को थोड़ा सा तैयार कीजिए। ऐसा न हो कि यहाँ तो देश में प्रजातन्त्र को बचाने के लिये भाषण होने लगे, लेकिन बाहर ऐसी बातें होती रहें जिस न देश का प्रजातन्त्र एक अन्धकारमय अन्धकार में फँस जाय।

यहाँ पर बहुत सी बातें कही गई हैं—लेकिन मेरे दोस्त शंकर दयाल सिंह जी ने जो कह—मैं उन की बातों से बहुत हद तक सहमत हूँ—इस बात की जाच हानी चाहिए कि गाड़ी को दानापर पहुँचने में इतना टाइम क्यों लगा? उम वक्त रेल कर्मचारियों को यह पता होना चाहिये कि किम लेवल पर यह डिजीजन हुआ था, उन का डाक्टरी सहायता देने में इतना विलम्ब क्यों हुआ। अगर आप इस बात का जवाब नहीं देंगे तो इतिहास आप को माफ नहीं करेगा चाहे आप किसी भी पद पर हों। आप को इस बात का पता लगना चाहिए कि जब उम के ऊपर बम फँस गया तो उस वक्त मिक्योरिटी मिस्टम क्यों पैदा हुआ है। उम में सरकार का उत्तरदायित्व है सरकार इस उत्तरदायित्व से बच नहीं सकती, इन लिये, मैं आप जनता के समक्ष अपन चरणों को साफ करके जाना चाहिये और इस की जिम्मेदारी को पिन-प्लाइंट करना चाहिये।

जहाँ कमीशन की मांग थी, सरकार से कमीशन बैठा दिया, लेकिन अब हमारे दोस्त उम से भी आगे बढ़ कर ससदीय समिति की मांग करते हैं। जब कमीशन नहीं बना था आप क्रिटिसाइज कर रहे थे कि कमीशन नहीं बना, जब बन गया तो आप अब क्रिटिसाइज करते हैं कि देर से क्यों बना और अब कहा जा रहा है कि ससदीय समिति के द्वारा जाच होनी चाहिये। हम तो यह कहते हैं कि चाहे सी० बी० आई० की एन्वयारी हो या कमीशन की एन्वयारी हो—सब मिल कर हकीकत को सामने लायें—कौन हत्यारा है, आज देश उसको जानना चाहता है, क्योंकि इस

तरह के आदमी का कत्ल जो देश को मागे बढ़ाने के लिये रेल के पट्टे को चनाने के लिये करने आप का शहीद कर गया—देश के इतिहास में एक बहुत बड़ा योगदान है। आप देश और देश में बाहर के लोग जानना चाहते हैं कि वह कौन सा बडबड था, कौन उम के पीछे था। लेकिन इस का पता तब तक नहीं पता जब हम उम के लिये वानावरण पैदा करें जिसे हम काम-नैंग के साथ, शान्ति के साथ मानें। लेकिन अगर हम उम तरह से स्टेटमेंट देने लगे—यहाँ कुछ कहें और बाहर कुछ और कहें, सरकारी कर्मचारियों से अपील करें कि अपना काम मन करना उम से वानावरण नहीं बनेगा।

इसलिए भी भी वक्त है कि हम इस बात को समझें और घणा, इन्डिफरेंस और इन्एफिशियेंसी को नकारें। प्रजातन्त्र विरोधी अभियान में या कमीशन आप उत्तमारी बनाने से यह नहीं रोका जा सकता। हम को पता करना है कि किम लिए यह सब हुआ। हमें दुख है कि जो दोस्त 20 दिसम्बर, 1971 के पहले उन को सब तरह की बातें कहने थे आज वह उन के मुँह में बड़े शुभचिन्तक बने हैं।

“की उम ने मेरे कन्व के बाद जफा से तोना हाय उम जूदे पशेना का पशेन, होना।”

क्या बात है कि उम वक्त सब से बड़े आदमी—भारत के वही थे, आज वह सब से भले हैं क्यों कि वह शहीद हो गये। हम आपमें में भिल बैठें। समद सदस्य के नाते हमारे और आपके अधिकार बराबर हैं, अगर यह वातावरण नहीं बदला, अगर हमारी एक दमने पर शक करने की नीयत नहीं बदली अगर हम ने आत्मचिन्तन नहीं किया तो समझिये कि ललित बाबू का खून बेकार हो गया। अभी वह खून में है वह मुल्क को बचा सकता है। भारत माता के मस्तक पर इस खून का तिलक लगा है। वह जिस मार्ग पर चले वह

[श्री० नारायण चन्द्र पराशर]

एव ता और विकास का मार्ग था। वह हड़ताल करवाने, और उन को क्रम करने का मार्ग नहीं था। मैं जानता हूँ कि पिछड़े इलाकों को बताने के लिये उन के दिल में कितनी सहानुभूति थी। लेकिन अफसोस है कि अ पसरशाही का चक्कर उस में फँस गया और उस पहिले में जग लगाने में कामयाब हो गया लेकिन वह जग ज्यादा देर नहीं रहेगी। ललित बाबू ने अपने खून से उस जग को धोने की कोशिश की है।

आज जो जम्हूरी पसन्द ताकते हैं, चाहे हिन्दुस्तान में हो या बाहर हो, वह एक एहद करे कि वह प्रैस को, प्लेटफार्म का और किसी भी अखबार को इस बात की इजाजत नहीं देगे कि वह घृणा के वातावरण को बढ़ाये। और इसके लिये कुर्बानी की जरूरत है। भगत सिंह ने इसलिये नहीं कहा था कि सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। उच्च फासिज्म की बात होती है तो एक टेन्डेसी की बात होती है। एक तरफ इनएफिशिएसी का इल्जाम लगाते हैं और दूसरी तरफ खुद ही उस को बढ़ाते हैं। मसोलिनी ने 3 जनवरी, 1925 को फासिस्ट चार्टर का ऐलान किया था ठीक 50 साल बाद 3 जनवरी, 1975 को श्री ललित नारायण मिश्र की उसी तरह हत्या होती है। यह एक नमूना है। आगे इस टेन्डेसी को, इनएफिशिएसी को न बढ़ाइये, नहीं तो यह हम सब को खत्म कर देगी। हिन्दुस्तान के विकास के लिये उस की रक्षा के लिये हम सब मिल कर चले। सरकार स जो अग्रह कर रहे हैं माननीय शंकर दयाल सिंह और भोगेन्द्र झा जी ने जो बात कही वह ठीक है। आप उन की इनकवारी कराइये और उन से बचने की कोशिश न कीजिये। क्यों? क्यों कि अपने ही साया से खड़ा ठीक नहीं है :

(It is no use fighting our own shadow)

हमें जनता में विश्वास पैदा करना है और उस के लिये कुछ कदम उठाना पड़ेगा। और अगर किसी आदमी को सस्पेंड करना पड़े तो जरूर सस्पेंड करें। एक कैंदी भाग जाता है तो आप दरोगा को सस्पेंड करते हैं। यहाँ पर आप ने क्या किया? मैंने बिहार में देखा है, जनता सवाल पूछती है। जनता बयान नहीं चाहती, तकरीर नहीं चाहती, बल्कि कदम चाहती है। आप कदम उठाइये हम आप के साथ हैं। हम इस हाद से में सबक ले। हिन्दुस्तान की रक्षा के लिये, जम्हूरियत के लिये तरक्की पसन्द ताकता की बढोत्तरी के लिये हम सब मिल कर काम करें। इस में देश की एकता और विकास का सवाल है। हम सब उस तरफ चने जिधर हमारे बुजुर्गों ने शिविरा दिया था। न ही उस तरफ जिधर हम एक दूसरे पर शक करके उम सकल्प को खत्म करे जिस के लिये वह शहीद हुए ?

इन शब्दों के साथ मैं जहाँ मिश्र जी को श्रद्धाञ्जली अर्पित करता हूँ और उनके विकास बसत का अग्रदूत कहता हूँ

the harbinger of the spring for
the development of the country

वहाँ यह भी कहता हूँ कि यह जो प्रस्ताव माननीय लिमये ने रखा है इस में अगर कुछ आत्म-चिन्तन की भावना बनती है तो बने। लेकिन इस से जो उन की काम रोकने की बात है वह ठीक नहीं है। न काम सदन का, न गाड़ी चलने का और न देश का रकना चाहिये, बल्कि आगे बढ़ना चाहिये और तेज बढ़ना चाहिये।

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA
(Begusarai): Mr. Chairman, Sir, it is indeed a very happy feature of this most tragic situation that there is common ground between the other side and on this side of the House that utmost effort should be

made to ascertain the truth in this matter.

There is a common realisation on the part of everybody that what happened at Samastipur and, ultimately, resulted in the death of Shri L. N. Mishra was, one of the most gruesome tragedies perpetrated in Independent India, which has disfigured our country and the society.

Shri L. N. Mishra, Mr. Chairman, fell on the second day of the New Year. So, we can say that the New Year has begun rather ominously for all of us. The tragedy has been universally condemned and felt, may I also ask you whether you are prepared—if you ask us to wear the Cross for it, I would say that the entire Indian community has to wear the Cross for it—to do the same. You seem to be donning Buddhist monk's robes and today what a fine and heart-warming spectacle did we witness! My hon'ble friends on the other side are not only Gandhian in spirit but they have gone a step further. They have turned Buddhist monks and are new apostles of truth and non-violence! It does not, however, fit at all in the Buddhist mouth to tell others that they are the very incarnation of evil and untruth.

That is what we have witnessed today. We have heard sermons from the other side. We do not want to paint ourselves as angels but I only want to ask you if S. N. Mishra turns to be an upholder of the cult of murder and violence or anybody else on this side, who will save the democracy in this country? If you alone want to hear the burden of saving the democracy in this country then, I effect, it has come to this that only one single individual is being asked to bear the burden for saving democracy in this country and that is your trump-card that you bring in, in any serious debate of this kind: That the Prime Minister is in danger and, therefore, Democracy is in danger. That is what you have brought the

whole thing to. You cannot go on claiming that you alone are the upholders of democracy, you alone are the mainstay of democracy and principles of truth and non-violence in this country. You must speak with a certain amount of humility if you want to run this vast country of 600 million or so.

So, Sir, there is absolutely no doubt in our mind that when my hon'ble friends on the other side accuse us of character assassination, I want them to tell us what exactly do they mean by character assassination. Whether they mean by character assassination the exposure of corruption and if character assassination can be equated with exposure of corruption, would they like that in a democracy nobody should expose corruption? Can they point out a single thing that we had said in this House? I do not want to speak about the dead. He was indeed one of the most lovable and charming persons that this House had. If you feel wrench in your heart, many on this side of the House feel no less wrench in their heart. We have lived long together. We have worked together. We had begun our political life almost together. Our families were living like members of one family and you cannot imagine the kind of anguish and pain that many of us bear on this side of the House. Those of you who have been trying to give them false support,—it is these people who have been responsible for much of the misty atmosphere that has been created in this country—if you tell the truth to the great lady, the Prime Minister, that these do not conduce to the growth, maintenance and development of democracy and that they, in fact, imperil and weaken democracy, then alone democracy can be saved in this country. Similarly, all of us are prone to certain indiscretions. All of us can commit some lapses or mistakes. But, unless you tell them and stay their hands that this is not done in the interest of the country, everybody

[Shri Shyamnandan Mishra]
would be running amuck, and democracy would be in danger. So, I have been telling my friends, please do not raise those things. I ask you, if criticism dies in a democracy, can you save democracy?

Then, Sir, I was reminded of when these people were talking about with mostly Opposition in their mind, what was said to some African people about the Leader of the Opposition. When it was mentioned to them that there was some animal like Leader of the Opposition, they asked 'Whom do you talk about? . You talk about the greatest traitor?'. That is the kind of opinion that my hon. friends on the other side have about the Opposition. If the Opposition is traitors and worthless, I ask you, do you think that you are the paragons of all intelligence and of constructive spirit? If the Opposition is worthless, it is you who have reduced everything to worthlessness, and yet not the substance of the Opposition. You might say anything. The substance of the Opposition is kept Simon Bure and everybody, wherever you go in the country, will tell you that it is the Opposition which has kept the flag of democracy up. You must feel proud about this. But, Sir, this is how we are being treated in this House

May I take this opportunity of telling the House and all concerned that in spite of our sharpest political differences with the Prime Minister, with the late Shri L. N. Mishra, we have got the sweetest feelings for them. No body could have any other feeling for a lovable and a charming person, like Shri L. N. Mishra. He was the very picture of sweetness, charm and humility. That is what impressed everybody and these qualities proved disarming to opponents. Yet, many of you talk as if you are great friends of Shri L. N. Mishra and other are not.

Now, Sir, we find that in regard to such a person who happened to be a Member of the House and who

happened to be a Member of the Cabinet, our esteemed President did not think it fit to refer to his death in his gracious speech yesterday. If the President did not think it fit to do so on whom does the responsibility lies? The responsibility squarely lies on that corner of the House.

Now, the President makes a speech made by the Cabinet. And yet this speech does not contain a single reference to this most tragic incident that has taken place. If you do not make a mention of the assassination of Shri Hemant Kumar Basu, we, as a House, cannot take notice of it because he did not belong to the House. But, he was, indeed, a great figure, Shri Hemant Kumar Basu, in his own right, was a great figure. Then, there was the assassination of Shri Suraj Narain Singh who was a legendary figure in Bihar politics. I had the good fortune of contesting against him in 1952 when there was a three cornered fight between me, Maharaja of Dharbanga and Shri Suraj Narain Singh and I must tell you that I have not come across a person purer in spirit and greater in courage than Shri Suraj Narain Singh. He had scaled the walls of Hazari Bagh with Shri Jayaprakash Narayan in 1942. If you do not make any mention of the assassination of such a great person also, we cannot take any notice of it because he did not belong to the House. But, in regard to a person who did belong to the House and who did belong to the Government no mention is made and it is this party, the sheepish lot, which has swallowed, hook, line and sinker, the speech of the President—a speech, to repeat, without the slightest reference to this most gruesome tragedy that has taken place.

You might probably say that the President's speech customarily does not make a mention of it.

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur):
They say the matter is *sub judice*.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Somebody might suggest and probably you may take it because you are such a gullible lot, that the President's speech customarily does not make a mention of it. But may I remind you that only two years ago the death of His Majesty the King of Bhutan was referred to in the speech of the President? Similarly on many occasions the President had thought it fit to refer to some of the deaths that had occurred of important persons.

SHRI MADHU LIMAYE: Not ordinary mortals.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: He says not of ordinary mortals. That is given to His Majesty the King or Her Majesty the Queen but not to an ordinary mortal like L. N. Mishra.

THE MINISTER OF PETROLEUM AND CHEMICALS (SHRI K. D. MALAVIYA): What a great point you have made?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: This great point would not get any place in your great mind; particularly after you have been inducted into office, your mind has become much greater, more capacious and much wider.....

SHRI K. D. MALAVIYA: My great mind cannot take care of small things

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: We are being asked; why come up with this kind of adjournment motion, stopping the business of the House? But may I ask in turn what did this Government do before we came up with this adjournment motion? A shameful lot this Government is. While we have been smarting under this tragedy, did this Government think it necessary to share with us any piece of information? We as members of the House and even as members of the public have been contenting ourselves with the crumbs of information that have fallen to us from the newspapers. You blame

the *Motherland* and you go by the dictum of the fatherland.

SHRI ATAI BIHARI VAJPAYEE: Who is that fatherland?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Whether the *Motherland* gives good information or bad information, whether the *Hindustan Standard* gives reliable information or unreliable information, who is responsible for it? Did any person from the Government or official side come out with factual details about this? They would try to look very clever, very judicial minded in claiming that it was not necessary to share information with the citizens of this country and the MPs. about this. They would pretend to be very wise and very judicial. Since the investigation is under way. But may I ask you: does anybody have any reliable piece of information given by Government about the factual details of the incident? Could not factual details have been given about what happened at Samastipur? Which is the report we must go by and in which paper? Many things are appearing in the newspapers. You ask us to go by newspaper reports!

What happened when Mr. L. N. Mishra went there? There were many persons accompanying the late Railway Minister. Was any statement taken from any of these ladies or gentlemen who were accompanying him? What was their visual impression? If anybody gives a visual impression, if S. N. Mishra gives a visual impression, what would the Mathew Commission do about it? I can give my visual impression. It may be right, it may be wrong. But they are suspicious of sharing information with the people. What did they have to say? Did they come forward with any statement about this? Did it not cause concern to all of us and the members of the family? What is it that you want the members of the

[Shri Shyamnandan Mishra]

family to go by? In this matter of the death of Mr. L. N. Mishra, we happen to be members of the same family. But what did you do about this?

When he went there, there were many persons with him. How did the bomb explode? Was it thrown? What is the impression of many people who accompanied him? All of them were not killed. Only a few were killed. Whether statements were taken from them? We could have taken them on their face value in the first instance and they could have been examined and scrutinised later. Are we not entitled to know about this—was the bomb thrown? Or had it been placed earlier in some corner and it exploded at a particular time? We really do not know anything about it. After the incident who were the first to arrive on the scene? Were some officers the first to arrive? What did they find on the spot? We were told about those things' earlier when Shri Partap Singh Kairon fell to the bullet of the assassin; we have been told earlier about factual details in some other cases too where assassinations had taken place. Why is there a particular kind of silence about this matter? Who went there and registered the case? Does the hon. Mover of the motion know whether a case had been registered? If so, under what section and at which place? .. (An Hon. Member: it is under investigation). The registration of the case is under investigation? Where was it registered? Who registered and when was it registered? What did that officer do in the matter? After all the case was registered by him. After that, who were the persons who took care of Shri L. N. Mishra? Why did the officers there not take care of the person of Shri L. N. Mishra? Why was it left to the care of some other gentleman accompanying him? Did some officers arrive there or not? They say that all of them ran helter and skelter. This is all because of the

total revolution that is being preached by the Sarvodaya Leader Jayaprakash Narayan that they mean to say is that JP is making them also go wrong? That is the total revolution brought about by JP that even this blessed Government is made to do wrong and these blessed officials are made to do wrong! Then I think greater credit has to be given to the great Sarvodaya leader and indeed the revolution is total!

Those were certain things which could have been told.

Later on what kind of medical assistance was provided to him? That had been asked by many. No answer had been given. Is that going to prejudice the investigation. Damn the investigation if these pieces of information are going to prejudice it. We require these pieces of information. No judge would say that these were going to prejudice the proceedings before him.

I ask my hon. friends on the other side to consider those things very seriously.

The condition of Shri L. N. Mishra began deteriorating every moment and it became critical at 5 O'clock. Was Delhi informed about this? Dr. U. N. Shalu says that when he arrived at Danapur around 5 O'clock, Doctors were fighting a desperate and losing battle to save the life of L. N. Mishra. Was Delhi informed about all this? Was the Prime Minister informed about it? Was the Health Minister informed about it? Was the Home Minister informed about it? When was this information received by the people in Delhi, by the authorities in Delhi? When condition became critical at 5 O'clock, was the Health Ministry consulted about this? What medical aid was rushed by the Health Ministry? What kind of consultation took place between the representatives of the Government of Bihar and the representatives of Government in

Delhi about this? My hon. friends on the other side should know that within one month of the assassination of Shri Pratap Singh Kairon—if you really feel sincere about it, if something has to be ascertained in this matter earnestly—they must know that 7,000 persons had been interrogated. Nearly 5,000 vehicles had been rounded up and thousands of bad characters were also rounded up. Have you heard any thing of that kind in this case? What is the kind of serious effort that is being made in this connection? I have not heard any thing about it. Probably a dozen persons have been arrested, but not even the Chief Medical Officer who had first examined Shri L. N. Mishra has been interrogated so far. Here is Mr Hingorani of the CBI who says so that that is the most baffling thing that even the Chief Medical Officer who had the opportunity to examine Shri Mishra first of all has not been interrogated so far. Would you not have a grievance against this Government for that?

Mr Hingorani said so or not, are you not entitled to say that the first Medical Officer who did examine Shri Mishra should have been interrogated by now, and ask why he has not been interrogated so far? These are things which should have been mentioned by the Hon. Home Minister to the House on the very first day. If a statement had been circulated, we would not have gone in for even an adjournment motion. We would have studied the statement and tried to think over it.

We do not want to make political gain out of it like the hon'ble Prime Minister and others. I ask, please hold the scales evenly in your hands. When you are here before *dharma chakra pravartanaya*, please hold the scales even. Who has turned it into a political thing? Is it Shri Jaya Prakash Narain and his movement? I am fully identified with this movement. They may call us Fascist, you may call me so to your heart's content, you call this movement

Fascist to your heart's content, but what is happening. The tremors of the movement have not yet reached the borders of Madhya Pradesh, even so all your political propoganda about the death of Shri Mishra has fallen flat on the people of Madhya Pradesh. Here is the eloquent reply to your malxious and mendacious propoganda against the opposition, the most eloquent reply. And if it is their desire to make political capital out of this murder, I wonder why they did not mummify the body of Shri Mishra and carry it all over the place during the course of the elections. But then, that would be the thing before the electorate, the thing before the electorate would be the power behind.

SHRI M RAM GOPAL REDDY (Nizamabad): It is unfair on your part.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Here is Mr. Jaya Prakash Narain who is being blamed by everyone on the other side, but I ask you is there anyone in this country who has got the guts and the courage to tell the vast gathering at the Boat Club that it must be turned into a meeting of mourning. He turned a political meeting into a meeting of mourning, a meeting of condolence, and here is our Prime Minister who turns a condolence meeting into a political meeting. Just see the contrast between the two. I ask you to judge. Is not the contrast very glaring?

My hon. friend, Shri Limaye, adroit as he is, has been pursuing certain points with great tenacity and, as you know, he goes into details. He asked only by way of curiosity whether the hon. Prime Minister had granted an interview to the late Shri L. N. Mishra on the 23rd December. If so, during the course of her talk, did she mention to him that he should now quit the Cabinet? This was the simple, curious question put. The Prime Minister with great alacrity leant to her feet and said, there was nothing of the kind. But here is a

[Shri Shyamnandan Mishra]
small piece of information which I
would like to share with the House.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH
(Nandyal): It is a deliberate insinua-
tion.

श्री मधु लिमये : माफ कीजिए, यह
जानकारी श्री ए० एन० मिश्र के बहुत
नजदीक के लोगों ने मुझे दी है। मिश्र जी
अब यहाँ नहीं हैं प्रधान मंत्री की झूठी बात
को काटने के लिए।

SHRI P. VENKATASUBBAIAH
Let him mention the names of the
people.

DR. KILAS (Bombay South). I
never expected Mr Limaye to stoop
down so low.

SHRI MADHU LIMAYE: I only
gave you the facts. You may believe
them or not. I said, people close to
Shri L. N. Mishra told me that.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA:
I completely believe the Prime Minister
when she said that she did not mention
it to Shri L. N. Mishra that he should
quit the Cabinet. However, here is
something which your great bosom
friends have said. Would you disbe-
lieve them also? You may afford to
disbelieve Mr. Madhu Limaye, but
would you afford to disbelieve such
a high dignitary as a member of the
National Secretariat of the CPI? This
is for the kind consideration of the
Prime Minister:

"Lucknow, January 17,

The late Mr. L. N. Mishra had
been persuaded by the Prime Minis-
ter, Mrs. Indira Gandhi to replace
Mr. Ghafoor as Chief Minister of
Bihar to deal with the situation aris-
ing out of the JP movement. This
was revealed by Mr. Yogendra
Sharma, M.P., Member of the Na-
tional Secretariat of the CPI, while
addressing the 10th conference of
the UP State CPI currently in ses-
sion here. Briefing newsmen, a
party spokesman, Mr. R. K. Garg,

M.L.A., said that Mr. Mishra had
told Mr. Sharma before he fell a
victim to the bomb blast about the
Prime Minister's offer."

I am placing it before the House for
whatever it is worth. It is said that
this is another way of getting rid of
him. That is the inference one would
like to draw. But I would not like to
be that uncharitable so far as the re-
marks of the Prime Minister are con-
cerned about the talk that took place
between her and Mr. Mishra. Even
now I would believe what she has
said in reply to Mr. Madhu Limaye,
but she must reckon with the state-
ment made by no less a person than
a member of the National Secretariat
of the CPI. That is my humble sub-
mission in this matter.

Why are these people so anxious
to exculpate the Prime Minister in
this manner? Did any member of the
opposition ever turn his attack against
the Prime Minister, saying that she
was involved in this? Can he point
out a single instance?

SHRI N. K. P. SALVE: Did you
hear Shri Jyotirmoy Busu and the
allegations he made that the Prime
Minister is responsible?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA:
I am coming to that. My hon. friend
must hear with me. How is it being
brought to this focus? Who is re-
sponsible for this, after the clean chit
that has been given by the great lea-
der of Bihar, Dr. Jagannath Mishra,
that the Prime Minister was not in-
volved in this matter?

श्री मधु लिमये : सब ने पहले उन के
बयान से ही मुझे पता चला कि इस तरह
की बात है।

I was shocked by Shri Jagannath
Mishra's statement.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA:
However, on the 7th of January itself
the Prime Minister said that "there
is a whisper that I have been responsi-
ble for these tragic incidents" and al-

though I will never call you Congressmen, the Prime Minister went on to say even the Congressmen are now believing this blatant lie." At least that is what the *Hindustan Times* says. May be, the *Hindustan Times*, which is under the Birlas, is known to be the enemy of the Prime Minister just now! I would only say by way of an example, that everybody knows that it is not your party or the Prime Minister who had suggested the name of Shri K. K. Birla as a candidate from Lucknow!

The Prime Minister went to the length of saying "if I die, people would say that I have killed myself"; this was on the 7th of January. Therefore, there is no use of saying that we have been telling something about it, or we have been insinuating about it. My hon. friends on the other side must reckon with this that the credibility gap between you and the people have increased so much that people are prepared to swallow anything about you and against you. Don't you reckon with this truth that the wildest thing is being said against the highest person in the government and the country and the Prime Minister herself complains about this that even Congressmen are believing these blatant lies and so on.

So, these are the few things which we wanted the other side of the House particularly to reckon with and to tell us something about them because our minds are full of apprehensions about the steps that are being taken. Here, there seems to be a curious amalgam.

Now the Government has come to see the reason behind the demand for a commission of inquiry. When we asked for a commission of inquiry, when we voiced the demand for a commission of inquiry, it was a reactionary demand, it was a fascist demand. But, ultimately, this Government comes down to this and the demand is conceded.

Now, why has it been conceded so late? There was only one element in

this country which was opposed to the appointment of the commission of inquiry, and that was the great party which happens to be in alliance with the ruling party, namely, the CPI. The hon. Chairman of the CPI, the great and esteemed person, Shri Dange, expressed himself completely against the appointment of a commission of inquiry, and he said this step would add confusion to the Indian politics, Confusion against whom? Confusion to Indian politics. What did he mean thereby?

21 hrs.

But now it seems that they have been able to convince their friends that they would not be able to resist the demand for the appointment of a commission of inquiry. It is now reflecting on their integrity and, therefore, they must concede it. So, probably that resistance has broken and this commission of inquiry has been set up now.

But what do you find even now? I ask those friends who have got some smattering of legal knowledge and also of judicial proceedings—I would not say anything which would prejudice the proceedings before the Mathew Commission—but I ask you whether you are sincere about the impartiality of the proceedings that should take place before the Mathew Commission. If that is so, why are you having this curious amalgam of four or five streams of investigations going on concurrently? Particularly I would like to refer to two streams of investigations which are going on concurrently. Whom do they want to convince. I ask my hon. friends who have got something to do with law and judicial matters.

Here is the CBI investigation which is going on in full force, and the CBI investigation is under the aegis of the executive authority. The whole busi-

[Shri Shyamnandan Mishra]

ness of appointing a commission of inquiry is to take this matter out of the hands of the executive and place it in the impartial hands of the judiciary—is that not the purpose of appointing a judicial commission?—in order to inspire more confidence in the minds of the people that the executive is not dealing with it?

SHRI N. K. P. SALVE: It is a fact-finding commission.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: I will go very logically about it. If the two streams are going on concurrently, that is, the executive stream of investigation and the judicial stream of investigation under two auspices, can there not be a conflict between the two?

My hon. friend, Shri Salve, has rightly asked me a question, which needs to be answered. He said, that the CBI only is the investigating agency. Then put that investigating agency under the guidance and the direction of Mr. Justice Mathew. That can be done Mr. Chairman, if you appoint a committee of this House with S. N. Mishra as the Chairman of that committee to inquire into any matter, with the authority of Parliament I will summon the services of the investigating agency and the Government will have to provide them. Whose authority is greater—the authority of Parliament or of the executive government? The investigating agency would be at my disposal. Have you placed the CBI, as the investigating agency, at the total disposal for this purpose of the one-man inquiry commission of Mr. Justice Mathew? If you have not done that, then there is bound to be a conflict between the two and one can be suspected of prejudicing the other.

Then, this morning here is the news that the new Railway Minister has said to the hon. Minister of Irrigation in Bihar Dr. Jagan Nath Mishra, that another inquiry would be set up by the Railway Department to go into

the question of the delay that occurred at Samastipur in transporting the late Railway Minister to Patna or Danapur. So, this is another inquiry that is going to take place.

I have not gone into the law relating to the appointment of a commission of inquiry. But it does seem to me that it is not in consonance with the law that another inquiry should be set up in this matter. It would not be in keeping with the spirit of the law on this subject. So, this is another thing which must be considered by the House in all seriousness—whether this Inquiry is indeed seriously meant by the Government.

Now, the hon. Home Minister, Mr. Brahmananda Reddy, had given everyone a wholesome advice that one must hold one's judgment in check; one must not make any observation or remark about the findings of the Inquiry. I ask the hon. Home Minister: Who flouted this wholesome advice? The first person to flout the advice of the Home Minister was the Prime Minister of India. The Prime Minister in her very first utterance on the 7th January said in so many words that there was no need for an inquiry because, she said, the reason was political. That is what she said in so many words.

She had clearly laid the blame on the shoulders of J.P. That is what the newspaper reports say. If that is so, there could be two inferences from this. One inference could be that this incident had a larger penumbra of implications. There was a spectrum of issues which had to be dealt with. If it had larger political implications, should not then a Commission of Inquiry have been set up at that very time?

It is a late realisation that it has other dimensions. No less an authority than the Prime Minister of India spelt out on the 7th January itself—I may or may not agree with her view—the implications in much wider

terms. If that is so, it was not the CBI which was the competent body to go into the matter. The CBI can only investigate crimes and offences. That is precisely the function of the CBI. The CBI could not go into larger implications, psychological, political or otherwise. The Prime Minister had spelt out these implications. If that was so, why was not the logic of the Prime Minister followed in actual terms? Why was not a Commission of Inquiry appointed at that time itself?

A whisper now goes round that the CBI—may be, it is completely wrong—was on the point of making some startling revelations and here is the check put upon it. That is also a whisper going round. Maybe, it is completely wrong. But that is the kind of atmosphere in which we live. You can say, "You are also responsible for it." But you have to share the larger responsibility for it. However, it is now being said that it is because of this and that.

My humble submission is that the Government has taken this step so late when many of the horses might have bolted out of the sheds. The Government cannot disabuse the public mind that the delay that has occurred in this matter has been indeed a culpable delay on the part of the Government. This is the impression that is carried in our mind. So, I think, we are quite justified to bring this adjournment motion. It has been our duty to society and country to come up with a motion of this kind before the House.

सभापति महोदय : समय बहुत थोड़ा रह गया है—अभी दो कांफ्रेंसी और दो विरोधी सदस्य बोलने वाले हैं। अगर पांच-पांच मिनट में बोल ल तो काम चल सकता है। श्री हरिकिशोर सिंह।

श्री हरि किशोर सिंह (पुपरी) :
सभापति महोदय, आज एक अत्यन्त दुःख

घटना के सम्बन्ध में हम लोग इस सदन में चर्चा कर रहे हैं। श्री ललित नारायण मिश्र जी की हत्या हमारे मंसदीय जनतन्त्र और हमारे स्वाधीनता के इतिहास में एक बहुत बड़ा कलंक का धब्बा है, एक ऐसी रहस्यात्मक परिस्थिति में उन की मृत्यु हुई है जिस के रहस्य का पर्दा बहुत दिनों तक उठना शायद सम्भव न हो पाये। पुलिस की एन्क्वायरी हो रही है, सी० बी० आर्द० की एन्क्वायरी हो रही है, उन की उचित चिकित्सा की व्यवस्था क्यों नहीं की गई—इस बात की भी उच्चस्तरिय जांच की जा रही है और साथ-साथ जस्टिस मैथ्यू के आयोग का भी गठन किया गया है। अच्छा होता—यह विवाद मैथ्यू आयोग के प्रतिवेदन के बाद प्रारम्भ किया जाता। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या आज इस सदन में जो चर्चा हो रही है उस के द्वारा मैथ्यू आयोग को प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है या नहीं, यदि नहीं, तो मैं जानना चाहता हूँ—जैसा अटल जी ने कहा—डा० भल्ला के बारे में—कि डा० भल्ला ने यह मलाह दी थी कि मैं तो फिजीशियन हूँ, यह तो सर्जरी का काम है, यहां सर्जन मौजूद है, उन से इलाज करना चाहिए। मुझे को जो सूचना मिली थी—डा० भल्ला का जो बयान अखबारों में छपा था, वह कुछ विचारीत सूचना देता है। डा० भल्ला ने हमें जो सूचना मिली थी वह यह है कि डा० भल्ला ने जब पूछा गया तो उन्होंने जाच-गड़नाल कर के कहा कि यह बहुत ही मामूली चोट है। जब इस तरह की इस सदन में चर्चा होगी तो जो आयोग जांच कर रहा है—क्या डा० भल्ला के सम्बन्ध में वह एक सुनिश्चित राय कायम करने में समर्थ हो सकेगा? यह बात सदन को विचार करनी चाहिए।

सभापति जी, जहां तक संदेह के बाता-बरण की बात है—सन्देह का बाताबरण तो है, लेकिन उस बाताबरण को बिगाड़ने

[श्री हरि किशोर सिंह]

की चेष्टा की जाती है। पहले आयोग को गठित की जाने की मांग होती रही, अब जब मैथ्यू आयोग का गठन हो गया तो शाम-बाबू कहते हैं—चूँकि सी० बी० आई० किसी निश्चित राय पर पहुँच रही थी, उस की जांच को रोकने के लिए मैथ्यू आयोग का गठन किया गया है—यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है। जब इस तरह का विस्तर-कैम्पेन इस देश में चल रहा है—इस में किम का हाथ है, फासिस्टवादी प्रवृत्तियों का इस में क्या प्रभाव है, मैं उम विवाद में नहीं जाना चाहता, मैं इस को राजनीतिक विवाद बनाना भी नहीं चाहता, लेकिन जिन्होंने इस को राजनीतिक विवाद बनाने का प्रयास किया है, मैं समझता हूँ कि इस मायने में उन्होंने सही काम नहीं किया है। वाम्त्व में राजनीतिक विवाद तो उमी क्षण बना दिया गया, जिम क्षण ललित बाबू की मृत्यु हुई उमी क्षण मागे देश में कोई मुनिश्चित यन्त्र है जिम के द्वारा यह प्रचार किया जा रहा है कि इस देश में जो हमारी सरकार की सब से बड़ी हम्नी है, उन का इस में हाथ है। जिन लोगों ने उन के मृत्यु के क्षण में ही इस को राजनीतिवरण किया उन के लिए यह शोभा नहीं देना है। काग्रिम के लोग या दूसरे लोग यदि इस में कुछ राजनीतिक षडयन्त्र देखें हैं तो उन को यह शोभा नहीं देना, उनको इस बात का खण्डन करना चाहिए।

मभापति जी, यहा एक दो बातें और कही गई हैं—मन्वह का वातावरण बनाने के प्रयास में श्री मधु लिमये जो ने कहा—मैं उन का बहुत आदर करता हूँ, बहुत लिहाज करता हूँ—लेकिन इस तरह की छोटी छोटी बातें इस चर्चा में नहीं आनी चाहिए थीं। जैसे [उन्होंने कहा—बिहार के बाहर के एक संसद् सभा उस दिन पटना में क्या मौजूद थे ...

श्री मधु लिमये : मैंने नहीं कहा था—हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड को कोट किया था।

श्री हरि किशोर सिंह : श्री यशपाल कपूर—आपको समाचार पत्रों से भी जानकारी मिली होगी—बिहार में काग्रिम के जिला स्तर के सगठनात्मक चुनाव के सिलसिले में वहाँ गये थे, उनका कार्यक्रम बहुत पहले में निकल चुका था, वे वहा के चुनाव अधिकारी बनाये गये थे, काग्रिम अध्यक्ष द्वारा वहा भेजे गये थे। इसलिये इन छोटी बातों की चर्चा नहीं करनी चाहिये थी।

लेकिन जो सबसे महत्वपूर्ण बात श्री अटल जी, श्री श्याम बाबू ने कही है, मधु लिमये जी ने भी वही कही है, मैं उनसे सहमत हूँ कि इस देश में सन्देश का वातावरण पैदा हो चुका है, उसके लिये चाहे हम जिम्मेदार हो या वे जिम्मेदार हों, लेकिन उस वातावरण की शिकार हमारी सारी व्यवस्था हो रही है—यह हम सब लोगों के लिए मोचने की बात है। आज जब हम ललित बाबू की मृत्यु के सम्बन्ध में चर्चा कर रहे हैं तो यह वाजिब बात है कि हम इस पर सोचें कि जो हमारी संसदीय जनतन्त्रात्मक व्यवस्था है, जो हमारी लोकतन्त्रीय व्यवस्था है उस को कैसे मजबूत किया जाये।

ऐसा होता है कि सरकार के या विरोधी पक्ष के रहने से कभी कभी ग्रन्थिया बन जाती है, लेकिन ऐसे मौके भी देश के इतिहास में आते हैं, शासन व्यवस्था और शासन प्रणाली के इतिहास में आते हैं, जब उन ग्रन्थियों को खोलना पडता है। हम आज ऐसी व्यवस्था में पहुँच चुके हैं कि देश में जो वातावरण पैदा हो चुका है उसका अगर हम नहीं सम्भालेंगे, क्योंकि उसके लिये सरकारी पक्ष और विरोध पक्ष दोनों जिम्मेदार हैं, तो न हमारे संसदीय व्यवस्था चलेगी और न हमारा जनतन्त्र कायम रह सकेगा।

अब मैं दो तीन मुद्दों की चर्चा करना चाहता हूँ—एक तो यह कि इस बात को स्पष्ट रूप से कहना चाहिये कि समस्तीपुर में सुरक्षा की व्यवस्था किस पर थी ? क्या राज्य सरकार की जिम्मेदारी थी या रेलवे सुरक्षा दल की जिम्मेदारी थी ? मेरे पास जानकारी है कि नार्थ-ईस्टर्न रेलवे के सबसे बड़े सुरक्षा के अधिकारी वहाँ पर मौजूद थे—वे उम समय क्या कर रहे थे ?

दूसरी बात—क्या डाक्टर भल्ला इस तरह की राय देने के लिये काम्पटीन्ट थे—उम बात की जांच होनी चाहिये ।

तीसरी बात—सुरक्षा के सम्बन्ध में बार बार यह बात उठनी है कि प्रधान मन्त्री जी के दौरे के मिलमिले में उनकी सुरक्षा पर इतना खर्च क्या किया जाता है । हमारे विरोध पक्ष के लोग बार बार इस बात को उठाते हैं । आज एक ऐसा समय आ गया है—सरकार की भर्त्सना इसलिये की जा रही है कि श्री ललित नारायण मिश्र की सुरक्षा की उचित व्यवस्था नहीं की गई, लेकिन दूसरी तरफ प्रधान मन्त्री जी की सुरक्षा पर ज्यादा खर्च किया जाता है—इसलिये भी आलोचना होती है—मैं चाहता हूँ कि इस सम्बन्ध में भी एक निश्चिन्त राय तय हो जानी चाहिये कि केन्द्रीय नेताओं, सरकार के मन्त्रियों और दूसरे पक्ष के नेताओं की सुरक्षा की क्या व्यवस्था होनी चाहिये ।

इन शब्दों के साथ मैं श्री मधु निमये जी से बहुत ही अदब में अर्ज करूँगा कि आज काम-रोको प्रस्ताव का समय नहीं है यह प्रस्ताव अस्मगत है, उमलिय वे दंग को वापस ले लें ।

श्री जनेश्वर मिश्र (शलाहाबाद) :
सभापति जी, मैं खुद चाहूँगा कि मैं उन बातों को न दोहराऊँ जो पहले यहाँ कही जा चुकी हैं । मैं सक्षेप में अपनी बात आपके सामने रखना चाहता हूँ ।

कुल मिलाकर जो बहस चली है—इस सदन में ही नहीं, उसमें बाहर भी, उस बहस की दो धाराएँ हैं । एक तरफ सत्ताह्व दल के लोग आज यह कहते हैं कि फामिस्ट शक्ति, विघटनाग्री शक्ति आज लगातार कई महीनों से देश में घृणा और हिंसा की राजनीति चलाती गयी है, जिनके चलते ललित बाबू की हत्या हुई और यह बात बढ़ते बढ़ते विरोधी दला पर आज जयप्रकाश नारायण जी तक आ जाती है । दूसरी तरफ न केवल विरोधी दल उम बात को नजरअन्दाज मत कीजिएगा—यदि दल की आम जनता, जिनमें खोबे वाले सिंगी वाले छोटे दुकानदार, स्कूल के विद्यार्थी, मास्टर तक ही चर्चा करते हैं कि ललित बाबू को हत्या उम लिये हुई कि देश में जिन लोगों का हाथ म नाकन है, वे लोग भ्रष्टाचार को छिमाना चाहते हैं । और य बात बढ़ते बढ़ते प्रधान मन्त्री तक जाती है । यहाँ जयप्रकाश नारायण विरोधी दल, रेल कर्मचारी, इन लोगों को अपने ललित बाबू की हत्या हुई या श्रीमती टांडरा गांधी और आपकी सरकार के चलते हत्या हुई ? यह बहस करने के पहले इतना मैं बता द कि हम विरोधियों की तरफ में अगर बम चलेगे तो कितने चलेगे ? मुश्किल से 25 या 50 । लेकिन अगर आपकी सरकार की तरफ में बम चलेगे तो आप पूरे मुल्क का भी सफाया कर सकते हैं । खतरा आप के मन में ज्यादा होगा, सरकारी बम से मुल्क में ज्यादा खतरा होगा और विरोधी बम से कम होगा । अभी उस बहस में मैं नहीं जाना चाहता कि किस के बम में ललित बाबू की हत्या हुई । एक बात मैं कहूँगा कि अगर समस्तीपुर वाला जलवा सम्पन्न हो गया होता तो आप के कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष क्या कहते, आप लोग क्या तकरीर देते ? जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन के बावजूद उनका आन्दोलन मर गया क्योंकि ललित बाबू इतने बड़े जलम में तकरीर देकर चले आये किसी ने एक बार भी नारा नहीं लगाया, आन्दोलन खत्म हो गया, हमारी सरकार कामयाब हो गई । आप कहते हमारी

[श्री जनेश्वर मिश्र]

सरकार कामयाब हो गई, हमने अपना जलसा कर लिया। यदि इन का जलसा हो जाय तो सरकार की कामयाबी और उसकी साख। और जब जलसे में बम फट जाये तो किस की जिम्मेदारी है? जलसे में माला पहना दी जाय तो सरकार की कामयाबी और प्रधान मन्त्री की शान। और जब जलसे में विघ्न पड़ जाय तो किस की जिम्मेदारी होगी? ब्रह्मानन्द रेड्डी की, गफूर की। इन्होंने खुद कहा है कि ललित बाबू बहुत बड़े त्यागी थे। जैसे ही वह दरभंगा में उतरते हैं किसी ने कहा आप समस्तीपुर न जाइये आपकी जिन्दगी को खतरा है। उस समय कहा जाता है कि उन्होंने कहा मुल्क और कौम की खिदमत करते अगर मेरी जान चली जाय तो मुझे गवारा है। क्या बजह है कि यह सूचना साधारण आदमी को थी लेकिन गृह मन्त्री, प्रधान मन्त्री और गफूर साहब को नहीं थी? सी० आई० डी० को नहीं थी। यह इनका निकम्मापन नहीं है तो क्या है? अगर इस की इन लोगों को जानकारी थी तो क्या हम लोगों का हाथ नहीं है ललित बाबू की हत्या में? क्या कहना चाहते हैं आप? आप खुद अपने तर्क से बड़े हैं। साधारण आदमी बोलता है आप की हत्या होने वाली है न जाइये समस्तीपुर। और सरकार चलाने वाले नहीं जानते। जिनके पास सी० बी० आर्द० है, सी० आई० डी० है, सरकार चलाने की पूरी मशीनरी है उनको नहीं पता चलता। इतनी जल्दी बात को हल्का न कीजिये।

मैं केवल इतना कहना चाहता हूँ कि हत्या जिस किसी ने की है, हमारी भी हो सकती है, आप से से किसी की भी हो सकती है। बहुत सुरक्षा करके हम लोग जायें तो भी हत्या हो सकती है क्योंकि आप का जनता के बीच में जाना पड़ेगा, सभा करनी पड़ेगी, कहा से कौन आदमी आ जाय और मार दे। इसलिये इसका खतरा नहीं होता सबसे खतरनाक हुआ करता है कि हत्यारा न पकड़ा जाय। उस को पकड़ने की किमकी जिम्मेदारी है? उस को पकड़ने की जिम्मे-

दारी क्या जयप्रकाश जी की है। माननीय वाजपेयी, माननीय मधु लिमये, हमारी या माननीय श्यामानन्दन मिश्र की है, या आप की है? हत्यारे को पकड़ने की आपकी जिम्मेदारी है। और अगर यह मुल्क जिन्वा होता तो, आप का मन्त्री पब्लिक जलमें मे मारा जाय, सरकारी काम करते मारा जाय, यह मुल्क आप को गृह मन्त्री और श्रीमती इंदिरा गांधी की प्रधान मन्त्री नहीं रहने देता किसी भी कीमत पर। लेकिन आपके रहते आपका साथी मारा जात है और आप कहते हैं कि विरोधियों की वजह से मारा गया। आप की कोई जिम्मेदारी नहीं है? आप खाली बड़ी वाली गाडी पर घुमेंगे 'श्रीमती गांधी बनारस में कांग्रेसी पार्टी के जलसे में जायेगी तो जितने विरोधी पार्टी के लोग काला झंडा दिखाने वाले होंगे उन सब को तीन दिन पहले ही गिरफ्तार कर लिया जायेगा और ललित बाबू व एक साधारण आदमी कहता है कि आप की हत्या होने वाली है फिर भी उस जलसे में आसपास एक भी आदमी पहले से नहीं पकड़ा गया। क्या कहना चाहते हैं आप? अखबार में यह भी छपा है कि जो बम बहा फटा उसके शेल से पता चलता है कि वह भारत सरकार की आर्डेनेस फैंक्टरी में बना हुआ है। अगर यह सही है तो कहा है सरदार स्वर्ण सिंह जिन के अधीन आर्डेनेस फैंक्ट्रीज है। आखिर किम की जिम्मेदारी है। क्या वह हमारा या माननीय मधु लिमये जी का कारखाना था? यह और भी निकम्मापन है कि आप की फैंक्ट्री से बम चोरी चला जाता है ऐसी हालत में तो रक्षा मन्त्री की गर्दन पकड़ कर निकाल देना चाहिए किस-निग, यह मन्त्री और बड़े-बड़े अधिकारी है?

रूस का एक अखबार छापता है कि ललित बाबू की जो हत्या हुई उस में रीएक्शन-नरी फोर्सेज का हाथ है। मैं चाहता नहीं कि "भावदा" अखबार या कोई बाहर की शक्ति इस मामले में इतनी जल्दी बोल देती, लेकिन उस अखबार में 5 तारीख को ही यह खबर छप गई। पी० टी० आई० ने उस खबर को देश के अखबारों में छपा कर दिया कि ललित

बाबू की हत्या रीऐक्शनरी फोर्सेज ने कर दी। यहाँ के लोग और प्रधान मन्त्री तो बोल ही रही थी बरुआ साहब भी बोल रहे थे, लेकिन रूस से भी खबर आने लगी। रूस के लोगों से मैं इतना ही कहना चाहता हूँ 30 जनवरी का यह "हिन्दुस्तान" भ्रूखबार है इस में लिखा हुआ है लाल बहादुर शास्त्री की आत्मा से वार्ता। मैं निजी तौर पर मरने के बाद आत्मा बर्बरह में विश्वास नहीं करता, लेकिन उम आत्मा से जो वार्ता की गई वह किस्मा मुनने को मिला पूरे का पूरा, और अधिकाधिक लोगो से बात की तो उन्होंने कहा, उस आत्मा ने कहा कि मैं मरा नहीं हूँ, मुझे पोयजन दिया गया। कम से कम हिन्दुस्तान की धरती पर किसी विदेश के बड़े आदमी की हत्या नहीं की गई थी। दूसरी तरफ प्रधान मन्त्री ने कहा हत्या नहीं रिहमल है। और कम्युनिस्ट पार्टी के नेता श्री डागे ने कहा यह प्रधान मन्त्री की हत्या प्रौकसी में की गई। अपने मुल्क में राजनीतिक हत्याये कम होती थी, मूरज बाबू की हुई, जादव प्रमाद की भी गाली मार कर पुनिस के द्वारा हत्या कर दी गई थी जो बिहार के एक ममय मन्त्री रह चुके थे। मर-कारी गौली में हत्या इस देश में कोई मतनव नहीं रखती। लेकिन राजनीतिक हत्याये कम होनी थी अपने मुल्क में क्योकि गांधी जी का मसर था।

दुनिया के और मुल्क है जैसे अमरीका, वहा राजनीतिक हत्या होती है, रूस में भी राजनीतिक हत्या होती है। अमरीका में गण्टू का जो सब से बड़ा हैड होता है उम की हत्या जनता के हाथों कर दी जाती है। यह अमरीकी तकनीक है। और रूस में जो राज्य या दो नम्बर, तीन नम्बर, चार नम्बर का हैड होता है उस की हत्या नम्बर एक के हैड द्वारा कर दी जाती है। यह रूसी तकनीक है। हत्याये दोनो मुल्कों में होती है, लेकिन दोनो की भ्रसल-भ्रसल तकनीक है। ललित बाबू भारतीय राज्य के नम्बर दो, तीन या

नम्बर चार के व्यक्ति थे। और उनकी हत्या नम्बर एक के हैड ने की। यह रूसी तकनीक पर हत्या हो रही है या अमरीकी तकनीक द्वारा हत्या हो रही है हिन्दुस्तान में? यह चीज गन्दी है और इस की भर्त्सना पूरी ताकत के साथ होनी चाहिये। लेकिन यह रूसी तकनीक पर हत्या होने जा रही है या अमरीकी तकनीक पर भी हत्या होगी, इस बारे में भारत सरकार क्या कुछ कहना चाहती है। ललित बाबू की हत्या रूसी तकनीक पर हुई या अमरीकी तकनीक पर? नम्बर एक का अदमी आम जनता के हाथों मार दिया जाता है आम जनता में जब नफरत हो जाती है। ललित बाबू नम्बर एक के व्यक्ति नहीं थे। आम जनता में सत्ता के प्रति नफरत हुआ करती है तो सत्ता का नम्बर एक का हैड मारा जाता है। लेकिन ललित बाबू की जो हत्याहुयी यह अमरीकी तकनीक नहीं है बल्कि रूसी तकनीक है। रूसी तकनीक में जब नम्बर एक को नम्बर दो, तीन, चार का आदमी पसन्द नहीं आता है, जब सन्दर्भ बन जाता है तो उस की हत्या कर दी जाती है। ललित बाबू की वजह से हम लोगों को तकलीफ नहीं थी। उन की वजह से माननीय गृह मन्त्री नेट्टी साहब और प्रधान मन्त्री को लगाताग सर-दद रहना था। पिछले मद्र में लाइसेंस कांड चला। कौन अब उम पर बहस करे। यही न आप कहेंगे कि जिस के बारे में आप बात करने हैं तो वह तो मर गए। मरे हुए आदमी के बारे में बातचीत नहीं करनी चाहिए, यह शर्गफत का तकाजा है। यह लोक मभा है और यहाँ य ससदीय जनतव चलाने की बात करते हैं लेकिन अगर कहेंगे कि बम कांड पर चर्चा करो, तो कहेंगे कि चर्चा मत करो क्योकि अगर चर्चा करोगे तो हम तीन तरह की इक्वायरी बिठाने जा रहे हैं। आप ने सोचा कि अगर जजी इक्वायरी बैठा देगे तो बहस रुक जायेगी। आप की मसा थी बहस रोकने की। इसलिए आप ने डाक्टर की इक्वायरी बैठाई, आप ने खुफिया इक्वायरी बैठाई और आप ने जजी की इक्वायरी बैठाई। इन्ही तीनों

[श्री जनेश्वर मिश्र]

का नाम ले कर आप वहाँ को रूकवाना चाहते थे।

अब आपका सुप्रीम कोर्ट का जज क्या फ़ैमला करेगा। आपने खिलाफ अगर वह कलम चलायेगा, तो उमी दिन में उसकी सीनियोरिटी पर आपकी कलम चल जायेगा। इसलिए वह आजाद नहीं है। सी ० बी ० आई ० का अधिकारी क्या इक्वायरी करेगा क्योंकि श्री रामनाथन की तकदीर उसके अपने सामने है। उस ने जग इधर उधर कलम चलाया और यह कुचल दिया गया। कौन अधिकाारी आपको खिलाफ जांच करने का तैयार होगा। उसलिय मैं साफ कहना चाहता हूँ कि आप ससदीय जांच करवाएँ, बदली या न करवाएँ। आइएँ जनता के बीच में। आप यह कहते हैं कि विरोधियों के चेहरों पर श्री ललित नारायण मिश्र के खून के छीटे हैं और हम यही न कहते हैं कि आपके चेहरा पर श्री ललित नारायण मिश्र के खून के छीटे हैं। यह माफ़ा जायेगा। और अगर आप नहीं मानते तो मैं कहूँगा कि माननीय मधु लिमय के काम राको प्रस्ताव का यह सदन मजूर करे। कांग्रेस पार्टी का आदमी मारा गया है। यह मत समझिये रड्डी साहब, कल अगर आप भी पसन्द नहीं किये जायेंगे, तो उठा दिये जायेंगे। जब सत्ता बेहाथ में टमटर्न की तयवार आ जाती है, तो निमी ता भी नम्र आ सस्ता है। इसलिए मैं सत्तारूढ़ दल के लागा में कहूँगा कि वे टम काम राको प्रस्ताव के हक में हाथ उठाएँ और जिन गणितियों ने श्री ललित नारायण मिश्र की हत्या कर न की साजिश की है, उनको गर्दन पर डबे रस मदन और कुर्मी में बाहर कर देना चाहिए।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

श्री जगन्नाथ मिश्र : (मधुबनी) सभापति जी, आज जो हमारी चर्चा का विषय है, कहना न होगा कि हमारे लिए वह कितना

हृदय विदारक और रोमांचकारी है। साथ ही इतिहास को कलंकित करने वाली यह घटना है। ललित बाबू की हत्या राजनीतिक हत्या है और इस विषय में इसी परिपेक्ष में मैं बातें करना चाहता हूँ। मुझे दुख है कि मुझे प्रतिपक्ष के कुछ सदस्यों की बातों को सुनने पर ऐसा लगा है कि हमने विषय की गम्भीरता को सही सही नहीं आका है और न हमने आकने की कोशिश की है। बहुत से सदस्यों ने चर्चा की है कि प्रधान मंत्री ने 7 जनवरी को जो कुछ शोक सभा में कहा, वह उन लोगों की नजर में वाजिब नहीं था लेकिन मैं कैम उनको समझा सकता हूँ जब कि देश में बड़े बड़े लोग भी उनको नहीं समझा सके। प्रधान मंत्री जी ने क्या बुरा किया जब कि उन्होंने यह कहा कि आज ललित बाबू, प्यार ललित बाबू हमारे बीच में नहीं रहे और यह एक ऐसा पड़यत्त है जिसे पड़यत्त के फलस्वरूप मैं भी न रह तो उसने लिए भी यह उन्जाम में ऊपर लगा दिया जाए तो क्या आप कहेंगे।

सभापति जी मैं आपका याद दिनांक कि जब ललित बाबू जीवित थे तब ये प्रतिपक्ष के लोग क्या कहा करते थे ललित बाबू के सम्बन्ध में और प्रधान मंत्री जी के सम्बन्ध में। तब ललित बाबू प्रधान मंत्री के आवश्यक व्यक्तियों में से होने थे, उन के बिना प्रधान मंत्री का काम नहीं चल सकता था और प्रधान मंत्री के लिए वे अनिवार्य थे। आज जब कि लुटेरों ने हमारे प्यारे ललित बाबू को लूट लिया है तो इसका कलरु के प्रधान मंत्री पर लगाया चाहते हैं, तो यह कहा का इन्साफ है। यह बेईमानी है और हम उसे गवाह नहीं कर सकते हैं। मुझे दुख होता है इसे दोहराने हुए। आज टम घड़ी में समय का नकाजा है कि हम सोचे और टम मुहों पर विचार करें कि ललित बाबू की हत्या क्यों हुई। ललित बाबू की हत्या कौनसे समय में हुई और उसका क्या प्रतिफल हमें भोगना पड़ेगा। इन सारी बातों पर हमें ठंड दिल से सोचना चाहिए था। ललित बाबू

जैसा कि सभी जानते हैं बड़े ही प्रभावशाली व्यक्ति थे, बहुत कुशल बुद्धि के व्यक्ति थे और बहुत कुशल प्रशासक थे और सरकार में वे अपनी हस्ती रखते थे और लोगों में उनकी धाक थी और यही कारण था जिस से वे बहुत सारे लोगों की आँखों में किरकरी जैमे लगते थे। लोग उनसे ईर्ष्या करते थे, लोग उनकी आलोचना करते थे लेकिन ललित बाबू भारत के सच्चे सपूत थे और उन्होंने देश सेवा का जो व्रत लें लिया था, तो लाख आलोचनाओं के बावजूद भी वे अपने कर्तव्य पथ से नहीं डिगे जिसकी मिसाल है कि जब समस्तीपुर में छोटी लाइन का बड़ी लाइन में परिणत करने के लिए जा जलमा किया गया था, उसमें वे भाग ले रहे थे तो उनकी हत्या कर दी गई। यह आख खोल देने वाली घटना है। जब उनके दुश्मनों में रहा नहीं गया और जब उनकी आलोचना से वे दबे नहीं और उनकी बहादुरी के सामने उन्होंने माय टेके, तो ललित बाबू की हत्या कर दी गई।

श्रीमन्, अब मैं इस सदर्भ में आपको ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि आज देश में और खाम कर विहार में कैसी स्थिति है, तो यह कहते हुए मुझे कोई सकोच नहीं होता है, कोई हिचक नहीं होती है कि आज फासिस्टवाद का बोलबाला हो रहा है और सर्वत्र हिंसा का बातावरण पैदा किया जा रहा है। यह कहा का नियम है, यह कहा का सिद्धान्त है, यह कहा का उसूल है कि जनता के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों को सदन में प्रवेश न होने दिया जाये और अगर वे प्रतिरोध करे, तो बप्पड मार दे। आपको पता है कि बच्चों का स्वभाव कैसा होता है। अगर आपको शिक्षा के बारे में मालूम है और अगर आपको साइक्लोजी का अनुभव है, तो आपको पता होगा कि अगर आप उनको गलत बातें सिखायेंगे, तो वे आपके भी गुरु बन जाते हैं। यह मैं जानबूझ कर कह रहा हूँ क्योंकि अगर आप हिंसा का बातावरण पैदा कर रहे हैं, तो इसका फल भोगना होगा।

हम भोग रहे हैं और आपको भी भोगना होगा और आप बच नहीं सकते हैं क्योंकि अगर आप गड़बा खोदते हैं, तो आपको उसमें गिरना होगा। इस घटना में आपको सबक लेना चाहिए और आपकी आँखें खुलनी चाहिए।

श्रीमन्, आज जो स्थिति पैदा हो गई है, वह बहुत चिन्ताजनक और खेदजनक है और इसको हमें बड़ी गम्भीरता में लेना चाहिए। लोग केवल आलोचना प्रति आलोचना में ही न लगे रहे। यह मानी हुई बात है कि यह हत्या राजनीतिक हत्या हुई है और इस तरह की हत्या की पुनरावृत्ति न हो, हम इसके लिए क्या सोचते हैं और क्या करना चाहते हैं? मैं कहना चाहता हूँ कि हम सभी इस मौके पर, इस अवसर पर आत्म-निरीक्षण करें और इस द्वेष की भावना को त्याग दें और सरकार ने इस हत्या करने वाले का पता लगाने के लिए और दंड देने के लिए जो प्रयास किया है और सरकार जो कर रही है हमें उसमें सरकार का सहयोग करना चाहिए नहीं तो यह जो फासिस्टवाद का नया नृत्य हो रहा है, उस पर जनतंत्र पर, राजनीति पर और राजनीतिक जीवन पर जो गहरा प्रहार होने वाला है और हमें जिम विनाश की भोग यह ले जाने वाला है, हम उसे नजरान्दाज नहीं कर सकते हैं और न हमें उसे नजरान्दाज करना चाहिए।

मैं इस सदन के सभी सदस्यों से और खास करके विरोधी पक्ष के दोस्तों से यह कहना चाहूँगा कि वे इस विषय पर गम्भीरता से सोचें और ईर्ष्या और द्वेष से काम न लें और आलोचना, प्रति-आलोचना को त्याग दें और सरकार से सहयोग करें जिससे इस षडयंत्रकारी का पता लगे और जिसने यह हत्या की है, उसको दंड दिया जा सके। इसमें सरकार का ही नहीं बल्कि सभी का कर्तव्य है और यह परीक्षा की घड़ी है और मैं आशा करता हूँ कि इन सब बातों के समक्षते हुए, वे इस विषय पर चिन्तन करेंगे।

SHRI P. G. MAVALANKAR (Ahmedabad): Mr. Chairman, Sir, I rise to support the Motion moved by my friend Shri Madhu Limaye, not because I want to say anything in terms of party political overtures, which perhaps inevitably have crept into the whole argument. Moreover, Sir, we are not turning this debate into any kind of obituary reference. Some friends of the Congress Party have spent most of their time talking about the late Shri L. N. Mishra. We on this side say, and certainly I for myself can speak without and diffidence, that as a person, Shri L. N. Mishra was likeable and I have nothing against him. It was on the basis of acute and unbridgeable political differences that many of us on this side had waged many a battle against him, making him a target of general attack, though not singling him out alone, while criticising the Government headed by Mrs. Gandhi.

The whole point is that mysteries after mysteries are gathering ground, and a kind of mystery could have gathered on the political horizon of this country of late. My friend, Shri Vajpayee and Shri Shyamandan Mishra and of course, Shri Limaye in the beginning have, said enough to show how several mysterious developments have taken place or rather have not taken place in this whole story and sordid business. I had myself raised not once but three times during the last session the question of Shri Anil Chopra's mysterious death. I wrote to the Home Minister and the Defence Minister in detail. But to this day I have got only an acknowledgement, nothing further. I had requested them to look into the whole matter. After I had raised this issue, the young man's unfortunate family met me and narrated the whole incident to me. I was more than convinced that it was all clouded. The mystery of the death of Anil Chopra or Lalit Babu or X, Y, Z, whoever has gone—these are not stray cases. They are cases in a whole chain which make us all believe things which we normally would not like to

believe. I would say, this atmosphere of suspension and doubt has been created by the mysterious functioning of the political wing of the Government of India under the leadership of the Prime Minister, Mrs. Gandhi.

The Samastipur incident is significant not only for what things happened but more significant and disturbing for many of the things that did not happen. Several acts of commission and omission that surround this entire episode of the passing away of Shri Lalit Mishra make it imperative for this Parliament and the country to know the truth. And were it not for the fact that we on this side, indeed I hope all of us in this House, are motivated by one sole factor, namely, arriving at the truth, we would not have brought in this adjournment motion.

Many of my good friend's opposite are criticising us for bringing this up in the form of an adjournment motion. In reply, I would say that if we have brought an adjournment motion, to adjourn the business of the House, what the Government and the Prime Minister are doing is to put a stop to the democratic process in this country, which is much worse, much more dangerous and much more harmful.

Of late, the results of the various elections, bye-elections though they are more than revealing. I can only hope and pray that my friends on the Congress benches, big in majority today, will see in the coming months and years when elections must inevitably come again whether they have any rapport left with the public at large.

This morning, my young new friend, Shri Sharad Yadav, took the oath and after shaking hands with the Speaker said: 'Lok Nayak Jayaprakash Zindabad'. The Speaker said that that would not form part of the proceedings, but what Jayaprakash Narayan is doing is forming part of the whole history of this country! Therefore, there is no

question of this or that individual liking or not liking it. It is a question of the historic role Jayaprakash is playing. He is only the spokesman of the afflictions and aspirations of the vast millions of this country.

My friend Shri Ramavtar Shastri says: no, no He has a right to hold his views. I believe that it is no use bringing in JP's fair name. As a matter of fact it must be said to the credit of Jayaprakash Narayan that he had kept the Bihar movement as non-violent as any such mass movement can be kept. Mahatma Gandhi was the leader of the Independence movement but even he had to say: I go back and withdraw my movement because of violence. That situation happily has not taken place in Bihar. That only shows that in the changed situation JP could do what even the father of the nation could not do before Independence; that is because JP is not interested in the power he does not want to replace Prime Minister Indira Gandhi. He is for certain values Mrs. Gandhi and her associates are twisting all norms and values of public life as they want to perpetuate themselves in power. I can understand remaining in power but to go on doing things anyhow and somehow in order to perpetuate oneself in power is not by any test a method of democracy or democratic behaviour.

The Bihar Government is investigating; the CBI is investigating; the Mathew Commission is investigating, the hospital authorities will investigate; the railway authorities are investigating. With all these investigations going on, simultaneously and separately, are they not making a mockery of the whole investigation? They had shown so much delay in announcing investigations but they showed no delay not even the Prime Minister, in condemning the Opposition parties and independent people who had been supporting the popular movement against corruption and misrule. The actions and comments from the establishment,

from the Prime Minister downwards make clear reading. One senses that these are not spontaneous reactions to Samastipur incident but they are cool and calculated criticisms of JP and opposition parties and independent critics and dissenters in our democracy. It only strengthens the suspicion of the common man that there is something wrong in the State of Denmark, in the capital of the country. Even if they use State machinery and propaganda units of the All India Radio, they will not make us all believe—what they want us to believe. After all some people can be fooled sometimes, but not all people all times. Shri Jagannath Mishra, the brother of the late lamented L. N. Mishra, fortunately survived and certain statements made by him were announced if I mistake not on the All India Radio on 11th February, both in Hindi and English news bulletins. Neither before that news bulletin, nor after that bulletin did those statements appear in the newspapers. That statement broadcast on the All India Radio news bulletin comes out from almost nothing as it were and the piece which I recall hearing says that the Prime Minister is not involved. I am not saying that the Prime Minister is involved. The piece of statement put out through Mr. Jagannath Mishra says that the Prime Minister is not involved. As I said, I am not saying that the Prime Minister is involved. All I am saying is that the Prime Minister and her associates in the Congress Party are doing things which are not only damaging to our democracy but are damaging to our public life. That is why I support the adjournment motion so ably moved by my friend Shri Madhu Limaye.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI K. BRAHMANANDA REDDY). Mr Chairman, I wish to express my profound sorrow at the untimely and tragic death of our valued colleague, the late Mr. L. N. Mishra. I wish also to express my grief at the death of other friends who were vic-

[Shri K. Brahmananda Reddy]

times in that incident I also express my sorrow that the hon. Members of this House Shri Y. P. Mandal and Shri R. P. Paswan and some Members of the Legislature of Bihar also got injured on that occasion. I am happy that these friends have recovered and I hope that others will also recover completely.

The discussion has continued for almost six hours by now and I listened with quite some attention to the remarks made by hon. Members, mainly from the opposition. I wish to say that a good part of the discussion was not particularly relevant to the motion on hand and it went into some other political questions which I do not want to answer to-day. But I wish to bring some facts, many of them might be known to you, to your notice. Shri Shyamnandan Babu also mentioned that they had not been mentioned

As you all know, on the 2nd January Shri Lalit Narain Mishra had an engagement for inaugurating the Samastipur-Muzaffarpur Broad Gauge Railway line and reached there by about 5.10 p.m. There was a large gathering immediately after some introductory remarks by some friends. Shri L. N. Mishra spoke for quite some time, for about half an hour. At the end of his speech, a huge explosion, a blast, took place and there was a loud noise. Twenty-eight persons were injured including Shri L. N. Mishra, Dr Jagannath Mishra, Members of Parliament, Members of the Assembly, Members of the Council and an employee. After immediate examination by the Chief Medical Officer of the North Eastern Railway, Shri L. N. Mishra and Dr. Jagannath Mishra proceeded by train to Danapur, reaching there by about midnight. At Danapur Shri Mishra was examined by prominent surgeons of the Patna Medical College and operated upon for his injuries. Shri Mishra passed away in the morning on 3rd January, 1975.

Among the other injured at Samastipur was Shri R. K. P. Kishore who died on the night of 3rd January, 1975 at

the Samastipur Railway Hospital and Shri Suraj Narain Jha who died on the 4th January at the Darbhanga Medical College.

After the explosion at the Samastipur Railway Station, another explosion took place at about 8 p.m. on the same day, i.e., 2nd January, in the house of one Shri Mahadev Sahu, Assistant Accounts Officer, North Eastern Railway, at Samastipur. In this connection two cases were registered by the State Police under sections 120B, 302 and 307 and sections 3 and 4 of the Explosive Substances Act in respect of the Railway Station incident and another under section 3 and 4 of the Explosive Substances Act in respect of the incident in the House of Shri Mahadev Sahu. In view of the importance of this case, senior CBI officers were deputed to assist the local police.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA:
Would you give the time when the cases were registered? You can find out and tell the House later?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY:
The first explosion which took place at the railway station was registered. The second explosion occurred at about 8 p.m. and therefore it was subsequently registered. Subsequently on the request of the Bihar Government, the CBI were asked to take up the investigation on the 8th January 1975 and the investigations are in progress.

Several misgivings were expressed in newspaper reports about the delay in providing medical attention to late Shri L. N. Mishra and its adequacy. On 28th January 1975, the Government of Bihar constituted a committee of medical experts to enquire as to whether prompt and adequate medical aid has been given to Shri L. N. Mishra. The enquiry by the medical committee is in progress. Several stories were also published in the newspapers about the nature of the explosion and the adequacy of the security arrangements, the persons involved. These stories sought to arouse suspicions in the public mind and give rise to baseless insinuations and rumours about the tragic

incident. Demands were made by several quarters, including Members of Parliament and political parties, for an enquiry into all aspects of the matter. The Central Government, therefore, appointed on 10th February 1975 a commission of enquiry consisting of justice K. K. Mathew of the Supreme Court to enquire into the general background, the facts and circumstances pertaining to the two explosions, the nature and adequacy of the measures for the protection and security of Shri L. N. Mishra at the time of the incident, the nature and adequacy of medical attention given to him after the explosion and such other matters as may be relevant to. The CBI will continue its investigations. It will also render such assistance as the commission may require in the course of its inquiry. While the object of the CBI investigations is to bring the accused before a court of law, the scope of the commission of inquiry is wider and in its wider task the commission will have the cooperation and assistance of the CBI and the team of medical experts appointed by the Government of Bihar. The commission has also commenced its work and is expected to complete its inquiry and submit its report to the Central Government within three months from the date of its appointment.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA

What is the difficulty in putting the CBI under the direction of the commission?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY

I will try to answer some of the points that have been raised. If you have other points, you can raise them later.

After hearing some of the arguments mainly from the opposition leaders, I got a temptation to enter into arguments and expose the fallacy of those arguments. But I do not want to enter into a discussion or argument, because in my opinion that is not going to be helpful. After all, this is a case of murder and assassination and it should be the effort of this House—the Congress as well as the opposition—to see

that efforts are made to arrive at the truth of this matter. Accusations and counter accusations of a political character by anybody, including the opposition, will not be contributing to arriving at the truth in this matter. It is most important to remember this. Therefore, I would earnestly submit to this House, and specially to the opposition parties that these accusations and counter-accusations should stop in the interest of justice and democracy.

22 hrs.

I am not going into all the points raised. Yet, I am submitting something only to illustrate that some of the things which some of the hon. Member have been trying to allege do not stand scrutiny even for a minute; I am not saying this to counter any argument.

It was alleged that there were no security arrangements. While I will not go into the details, I will say that proper security arrangements have been there in the shape of CRP personnel, Bihar Military Police, RPF and other officers, including the Commissioners, apart from our officers. There was a large gathering. As Shri Vajpayee said in his speech, in India when we address meetings of thousands and thousands of people, while arrangements can be made, it is just not possible to guard each move by any dishonest person.

One of the accusations made was that no Minister of the Bihar Government was present there. Is it an important matter? After all, as you all know, the majority of members of the Bihar Government are known to be the friends of the late Shri L. N. Mishra. I suppose you are not going to insinuate, or even suggest, that these friends also knew that something is going to happen and, therefore, they were not present. Is it proper to make such an allegation? Several Ministers of the Central Government go in different directions and attend several functions in the States

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: where the local Ministers may not be present. So, that is not a valid charge.

Also, I wish to submit on this occasion that when the Prime Minister made that statement on the 7th of February, as I have submitted in the Consultative Committee meeting also....

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: Please do not quote that; that is not done.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: It is only against the violence and the cult of hatred that is surcharging the atmosphere in the entire country that the Prime Minister made those remarks. She said that it was our duty to take it in that light. Is there anyone here to infer that because you suspect that the Prime Minister made an accusation against you, so all these stories, theses and insinuations became current in this country?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: So the atmosphere was politicalised.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: My only submission is that we would not be helping anybody by making such wild charges.

Regarding the appointment of the commission of inquiry you would like to say that it was appointed in a delayed manner. Is there any country in the world which has instituted an impartial committee of inquiry when the CBI's investigations were in progress and the accused were not brought to book? Should we not feel proud of it?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: We really do not understand your point.

SHRI MADHU LIMAYE: Rubbish.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: I am not going to be provoked; you may call it whatever you like. But was it wise for anybody, when the CBI's investigation was in progress, to make statements? Shri Shyamnandan Mishra was saying why

that man should not have made a statement, why this man should have made a statement and why that man should have made a statement. In one breath you cannot say that the Prime Minister was wrong in saying something on the 7th when the CBI's investigation was in progress and, at the same time, also say that others should have made a statement regarding the death or the incident.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: The officials, who had visited the scene of occurrence, ought to have told us what was their impression when they visited the scene. These were the factual things which should have been shared with the country. Where was the question of prejudicing the investigation there?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: I do not want to provoke you into any further discussion. My only submission was that when Shri Shyamnandan Mishra today says that the late Shri Lalit Narayan Mishra was the most lovable and charming personality in the entire House and when all of us should have been shocked at the death of a valued colleague of ours in a tragic way, is it not our duty, both of the Opposition and of the Government, to see to it that a proper investigation and inquiry is made, the truth is brought out and the culprits are brought to book?

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA: We have made that point.

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: Therefore, in matters of this type there is no point in seeking shortcuts for scoring a point over one another. It is not, in my opinion, conducive to proper investigation of crimes either in this country or in any country for the matter of that.

Therefore I would like to submit to the entire House, let the CBI investigation, which is in progress and which we are actively pursuing, go on and we should not say anything from the floor of this House which will inhibit

the progress of the prosecution. After all, as many of you have tried to explain, there was a planned murder, a conspiracy, this and that. When that is the circumstance, it should behoove us to pause a little and consider whether we should do anything to inhibit our approach in the course of investigations in that case.

SHRI SHYAMNANDAN MISHRA:
What are the terms of reference?

SHRI K. BRAHMANANDA REDDY: It is true that during the course of discussion hon. friends in the Opposition as well as on the Congress side have expressed some doubt about certain matters—whether this train started in time or whether there was delay, whether proper medical attention was given, whether after it reached Danapur station, immediately medical aid was given or not. These are some of the matters which may be agitating your mind and other people's minds. It is for that purpose I do not want to go into that at all—that there is a commission of inquiry which, as I have submitted just now has a wider outlook. You have seen clause (a) which says:—

“The Commission is requested to go into the background and the facts and circumstances leading to the blast, into the adequacy or otherwise of the security arrangements, the adequacy or otherwise of the medical attention that was paid to him” etc.

Therefore, I would submit to the House that if hon. Members here from any side have any point to make, certainly, in an appropriate manner, they can put it before the Inquiry Commission.

Sir, I do not want to go into many details. Of course, a very feeble attempt was made for having a parliamentary probe. As he has said, three different inquiries are going on. Why have another inquiry, a parliamentary probe? Would you think it would be a better inquiry than a Commission of

3344 LS—15.

Inquiry headed by an impartial Supreme Court Judge? Do you want to bring in politics?

I would very much, earnestly, request you to help in the process and to give your assistance. If you have any information, certainly, you have a right to place it before the Inquiry Commission in an appropriate manner.

My submission is that we will have to save democracy. We will have to discuss various issues. You are invited by the Prime Minister. It should be your duty to extent your full support and give your advice. After all, all of us are interested in the future of the country. It should be our co-operative effort to see that we overcome many difficulties that we have got and run this country in a proper way.

I do not want to take much time because my entering into several details which hon. Members have expressed will mean in my opinion traversing the ground which the Commission of Inquiry is going to do. I do not want to purposely go into all these matters or to say anything about it. Let the Commission of Inquiry come to its own judgment on its own evidence. Any hon. Member is at liberty to go and appear before it and give whatever evidence he has got.

I wish to request the entire House, including the Opposition, not to cast any aspersion or have any suspicion or make any insinuation or do anything to vitiate the atmosphere and I appeal to them to support the investigations and contribute to the success of the Commission of Inquiry headed by a Supreme Court Judge.

श्री मधु लिवये : सभापति महोदय, हम लोगों को उम्मीद थी कि इस बहस के दौरान जो मुद्दे उठाये गये हैं उनका समुचित जवाब मिलेगा. लोकप्रिय अज्ञ गृह मंत्री जो

[श्री मंत्र लिंगये]

समझदागी की और सूझ-बूझ की बात करते हैं। आज उन्होंने जो भाषण दिया, अगर 3 तारीख को प्रधान मंत्री जी ने उसी तरह का भाषण दिया होता तो पूरे देश में जो सन्देश का वातावरण उत्पन्न हुआ, वह नहीं हो पाता। क्या 3 तारीख को प्रधान मंत्री जी विरोध पक्ष के लोगों के साथ बैठ कर जो मैं यू.कमीशन 10 फरवरी को नियुक्त करने का फैसला हुआ, वह पहले से नहीं कर सकती थी। क्या 3 या 4 तारीख को ही निर्णय नहीं किया जा सकता था? इस सरकार पर भेरा अभियोग है कि उनकी यह मुनियोजित योजना थी कि इस हत्या या इस्तेमाल विरोध पक्ष को बदनाम करने के लिये किया जाये और यदि इनको इसमें सफलता मिलनी और जनता इनकी विचारधारा में प्रभावित हो जाती तो निश्चित रूप में कुछ रुद्ध उठाने का निर्णय सरकार ने किया था। उसमें कुछ सस्थाओं पर प्रतिबन्ध लगाने के बारे में भी सरकार ने फैसला किया था।

एक जननी रब्द का न सी सस्थाये ?

श्री मधु लिमये . आर०एस०एम० है, आर बहुत सी सस्थाए ह। यह निर्णय आपने पहले से किया हुआ था—अगर आपके प्रचार से जनता प्रभावित हो जाती और जनता के मन में यह सन्देश उत्पन्न हो जाता कि यह विरोध पक्ष का काम है तो निश्चिन्त रूप से आपकी सरकार यह लोकतन्त्र विरोधी कदम उठाती।

मैं केवल दो बातें आपसे साभने रखना चाहता हूँ—कहा जाता है कि जो ट्रेप का वातावरण है उसमें मैं यह घटना उत्पन्न हुई है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ—भाषणा में और प्रचार में जनता उत्तंजित होकर अधिध से अधिध क्या कर सकती है—किसी मना वो ताड, का काम कर सके तो है, ईट पत्थर चला सकती है, थोड़ी बहन भारपीट ही सकती है, लेकिन यह घटना इस तरह की नहीं है। सभी लोग मानेंगे कि यह

मुनियोजित ढग से ही इतना भय कर विस्फोटक बम बहा पर फोडा गया है—तो स्पष्ट है कि बिना कांस्पिरेसी के, षडयंत्र के यह काम नहीं हुआ है। आपने जो केस दर्ज किया है वह कांस्पिरेसी का किया है और मध्य कमीशन के सामने भी कांस्पिरेसी की ही बात रखी गयी है—तो फिर आप कैसे कहते हैं कि यह कांस्पिरेसी का सवाल नहीं है।

इसलिये मैं फिर कठना चाहता हूँ कि जहाँ आप वातावरण की बात कहते हैं—जनता को गुमराह करने का प्रयास न करे, यह एक भयकर अपराध है, भयकर क्राइम हुआ है और उमी स्तर पर उसका मुकाबला करना चाहिये था, नहीं। आपने नहीं किया। अगर आपको लोकतन्त्र के प्रति आस्था है और आपका विरोध पक्ष और जय प्रकाश नारायण जी के ऊपर आरोप है कि वह लोकतन्त्र की जड़ों को खोदने का काम कर रहे हैं तो मैं आपमें पूछना चाहता हूँ—लोकतन्त्र के प्रति अपनी आस्था को माबित करने के लिये आप कुछ आवश्यक कदम क्यों नहीं उठाते हैं।

मैं आज आपसे पूछना चाहता हूँ—गणरूपित जी के प्रतिभाषण में स्वयं कहा गया है कि पाकिस्तान के साथ हमारे पड़ोसी देशों के साथ हमारे सम्बन्ध साधारण हो रहे हैं भिवनापूर्ण हो रहे हैं, तो 3 दिसम्बर 1971 को विदेशी आक्रमण का लेकर जिस आपातकालीन स्थिति की घोषणा की गई थी, उसको आप क्यों बरकरार रख रहे हैं? क्या इसके लिये आपातकालीन स्थिति के रहते आपको कुछ अममान्य अधिकार मिल जाते हैं, जैसे 19वीं धारा के खिलाफ, जो कानून आप पास करना चाहेंगे, मौलिक अधिकारों को खत्म करने वाले कानून, उनके लिये भी आपको आपातकालीन स्थिति के रहते अधिकार मिल जाते हैं और आप कानून बना सकते हैं। आपातकालीन स्थिति के रहते हुये आप साधारण जनता के जो

मौलिक अधिकार हैं, यहां तक कि अदालत में जाकर अपने अधिकारों को मनवाना, उनको भी आप समाप्त कर सकते हैं, राज्यों को जो सीमित स्वायत्तता प्राप्त है उस पर भी आक्रमण करने का अधिकार आपको आपातकालीन स्थिति के अन्दर मिल जाता है ।

लोक तन्त्र में आपकी आस्था को मैं मान लेता, यदि आज आप अपने भाषण में कहते कि देश में लोकतन्त्र के वातावरण को बनाये रखने के लिये, जनता के मौलिक अधिकारों को अक्षुण्ण रखने के लिए आपातकालीन स्थिति को हम समाप्त कर रहे हैं, । मीसा, डी० आई० आर० आदि जो दमनकारी कानून हैं जिनके तहत सैकड़ों लोगों को गिरफ्तार किया जा रहा है—हम उन कानूनों को समाप्त कर रहे हैं । आप बार बार हम लोगों पर अभियोग लगा रहे हैं कि लोकतन्त्र के प्रति हमारी आस्था नहीं है—इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि लोकतन्त्र की हत्या करने का काम आप लोग खुद कर रहे हैं ।

सभापति महोदय, मैं आप से अर्ज करना चाहता हूँ कि अगर प्रधान मंत्री जी और उनकी सरकार लोकतन्त्र को देश में बनाये रखना चाहते हैं, हिंसा के वातावरण को समाप्त करना चाहते हैं तो क्या इस पर उनको नहीं सोचना चाहिये कि सरकार के द्वारा जो हिंसा की जाती है उस हिंसा को भी समाप्त करने का प्रयास होना चाहिये । जनता के द्वारा जो हिंसा होती है, उसका हमने कभी समर्थन नहीं किया, लेकिन वह मामूली किस्म की हिंसा होती है, लेकिन सरकार के द्वारा

जो लगातार हिंसा होती है—क्या उस पर भी रोक नहीं लानी चाहिये ?

इसलिये, सभापति महोदय, मेरा कहना है—इनको अब अकल आई है, लेकिन बहुत देर के बाद आई है और वह भी इसलिये आई है कि इतका जो प्रचार का पड़्यंत्र था, वह फेल हो गया । कैंडिडिल्टी-गैप को लेकर, वरना आज ये हमारे ऊपर आक्रमण करने की स्थिति में रहते । अगर आज सत्तारूढ़ दल डिफेंसिव में दिखायी देता है तो उसका एक कारण है—लोकतन्त्र के प्रति हमारी आस्था और विरोध पक्ष के प्रति जनता का प्रेम । इनके प्रति जनता का विश्वास उठ गया है। अगर हरियाणा के इलेक्शन में जीत जाते तो ये हमारे ऊपर चढ़ बैठने की बात करते, लेकिन धीरे धीरे जनता और सरकार के बीच में एक दीवार उत्पन्न हो गयी है । और इसी के चलते आज सरकार डिफेंसिव पर है इसलिये इस प्रस्ताव को वापिस लेने का कोई सवाल नहीं है । इसमें जो दो मुद्दे हैं कि सरकार विस्फोटक के रहस्य को हल नहीं कर सकती है और इसमें भयंकर देरी हो रही है, यह काम तत्काल करना चाहिये था, ये बातें अपनी जगह पर सही हैं । कुछ कांग्रेसी सदस्यों ने कहा कि पार्लियामेण्टरी डिस्कशन का प्रीएम्प्ट करने की मंशा नहीं थी, यह बात जरूर थी । और आज स्पीकर के साथ हमारी क्या बातचीत हुई ? हम लोग अच्छी तरह से जानते थे कि नियम 59 के आधार पर आप इस का विरोध करेंगे । आपने नहीं किया, अच्छी बात है । लेकिन काम रोकने का प्रस्ताव जिन कारणों को लेकर रखा गया है यहां पर

[श्री मधु लिमये]

वह कारण अपनी जगह पर मौजूद हैं। इस-
लिये मैं इस प्रस्ताव को वापस नहीं ले सकता
हूँ। आपने जो गलत काम किया है उसके
लिये मैं जरूर चाहूंगा कि यह सदन आपको
संसार करे।

MR. CHAIRMAN: Now, I will put
the adjournment motion to the vote
of the House.

Now, the question is:

“That the House do now adjourn.”

The motion was negatived.

22.22 hrs.

TOBACCO BOARD BILL—Contd.

MR. CHAIRMAN: Now, we will
resume the further consideration of
the Tobacco Board Bill.

Shri P. N. Reddy to continue.

SHRI P. NARASIMHA REDDY:

Sir, as I was mentioning earlier...

MR. CHAIRMAN: You may conti-
nue your speech tomorrow. Now we
adjourn to meet tomorrow at 11 A.M.

22.23 hrs.

*The Lok Sabha then adjourned till
Eleven of the Clock on Wednesday,
February 19, 1975/Magha 30, 1896
(Saka).*